RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 फरवरी 2025
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 फरवरी 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 21
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक

पाक्षिक

हुई सतरंगी आभा आज
51वें वर्ष का हुआ आगाज
वैराग्य, दीक्षा, संयम,
प्राप्त किया परमागम रहस्य
मुनिप्रवर, युवाचार्य, आचार्य
पदों को किया है पावन
महत्तम शिखर वर्ष मनाकर
लग रहा जैसे बरस रहा संयम सावन

जय गुरु नाना

जय गुरु राम

जो समझ समय पर
काम न आए,
वह समझ किस काम की!

वीरता की पहचान
रणभूमि पर होती है।

निर्णीत का नतीजा तब मिलता है,
जब उसके अनुरूप कार्य करने में
मन उत्साहित हो एवं प्रयास अभिमुख हो।
मंजिल प्राप्ति में पहला कदम
निर्णायक होता है। यह भूल नहीं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

धम्मंमि जो दढमई, सो सूरो सत्तिओ य वीरो य।
ण हु धम्मणिरूस्साहो, पुरिसो सूरो सूबलिओऽवि।।

- सूत्रकृतांगनिर्युक्ति (60)

जो व्यक्ति धर्म में दृढ़ निष्ठा रखता है, वस्तुतः वही बलवान है, वही शूरवीर है।
जो धर्म में उत्साहहीन है, वह वीर एवं बलवान होते हुए भी न वीर है, न बलवान है।

One, who is ardently faithful is truly powerful and brave. One, who is lack-lustre in the observance of one's spiritual duties, is neither powerful nor brave.

धम्मो अत्थो कामो, भिन्ने ते पिंडिया पडिसवत्ता।
जिणवयणं उत्तिन्ना, असवत्ता होंति नायव्वा।।

- दशवैकालिकनिर्युक्ति (262)

धर्म, अर्थ और काम को भले ही अन्य कोई परस्पर विरोधी मानते हों, किंतु जिनवाणी के अनुसार तो वे कुशल अनुष्ठान में अवतरित होने के कारण परस्पर अविरोधी हैं।

Some may regard Dharma (Devotion to duty). Artha Pursuit of just means of earn wealth and Kama (Householders' love-life for progeny) as incompatible but according to the Jina-preaching there is no contradiction as, pursued justly, all of them serve the cause of the faith.

यस्तु आत्मनः परेषां च शान्तये, तद्भावतीर्थ भवति।

- उत्तराध्ययननिर्युक्ति (12)

जो अपने को और दूसरों को शांति प्रदान करता है, वह ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप धर्म भावतीर्थ है।

What is peaceable to the self and the others is the psyche purifying true faith.

दैशकालानुरूपं धर्म कथयंति तीर्थंकराः

- उत्तराध्ययनचूर्णि (23)

तीर्थंकर देश और काल के अनुरूप धर्म का उपदेश करते हैं।

The teerthankara preaches the faith appropriate to the place and the time.

नीचैर्वृत्तिरधर्मेण धर्मेणोच्चैः स्थितिं भजेत्।
तस्मादुच्चैः पदंवाञ्छन् नरो धर्मपरो भवेत्।।

-आदिपुराण (10/119)

अधर्म से मनुष्य की अधोगति होती है और धर्म से ऊर्ध्व गति/ऊँची गति। अतः जीवन में ऊर्ध्व गति चाहने वाले को धर्म का आचरण करना चाहिए।

The right-faith (Dharma) lifts the soul up and the false-faith pulls it down. Therefore, those who desire to rise must act in accordance with the Dharma.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

09 **महान पुरुष**
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

10 **गुरु बिन कौन बताए पथ**
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

16 **आध्यात्मिक आरोग्यम्**
- संकलित

21 **श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला**
- कंचन कांकरिया

23 **श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र**
- सरिता बैंगानी

संस्कार सौरभ

26 **धर्ममूर्ति आनंद कुमारी**
- संकलित

37 **महत्तम भक्ति**
- गणेश डूंगरवाल

38 **नशा त्याग के लाभ**
- दिलीप गांधी

39 **अच्छी सोच**
- भागचंद जैन

40 **परीषहजयी की अद्भुत सहनशीलता**
- सुरेश बोरदिया

43 **Mental Health and Addiction**
- Sreeja Sethia

भक्ति रस

20 **तेरे बंदे हम**
- नेमीचंद सिपानी

39 **महत्तम महोत्सव**
- राखी अलिझाड़

45 **आजकल का परिवार कैसा है**
- संजय श्रीश्रीमाल

46 **कौन है???**
- अमिता संचेती

विविध

15 **संयम की सार्थकता**

29 **गुरुचरणों में गुरुभक्ति का अर्घ्य**
- संकलन

48 **गुरुचरण विहार समाचार**
- महेश नाहटा

चिंतन पराग

मंगल रूप अपनाता चल

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

कार्तिक विक्रमी संवत् एवं वीर संवत् के रूप में आज को नए दिन के रूप में स्थापित किया जाता है। धर्म की बागडोर आचार्यों के हाथों आने से भी आज के दिन का महत्व है। तीर्थंकरों की अनुपस्थिति में उनके शासन का वहन आचार्यों द्वारा हुआ करता है। गणधर सुधर्मा स्वामी आज के दिन गणाधिप-आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। अतः एक नए युग का सूत्रपात हुआ, ऐसा कह सकते हैं। यद्यपि दिन तो रोज ही नया होता है, क्योंकि आज जो सूर्य उगता है वह पुनः कल नहीं आता। लेकिन नए दिन की अवधारणा व्यक्ति की श्रद्धा से जुड़ी हुई होती है। बहुतों के लिए आज का दिन सामान्य भी है। नए दिन को लोग खुशियों से मनाना चाहते हैं, पर खुशियों का राज ज्ञात नहीं होने से वे आमोद-प्रमोद, इंद्रिय-विषयों के पोषण में ही समय व्यतीत कर देते हैं। इंद्रिय-विषयों से प्राप्त होने वाली खुशी क्षणिक होती है। उससे लंबे समय तक झोली भरी नहीं रह सकती। खुशियों से झोली भरनी है तो वे खुशियाँ मंगल से प्राप्त हो सकती हैं। मंगल धर्म रूप है। धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है और धर्म है अहिंसा-संयम-तप। इनसे आत्मा को भावित करने से आत्मा में क्षमा, मृदुता, सहजता, सरलता, निर्लोभता, सहिष्णुता आदि गुणों का प्रकटीकरण होता है। परिणामस्वरूप कठिनाइयों को झेलने का सामर्थ्य हम प्राप्त कर पाते हैं। ऐसा होने पर हम हर वक्त, हर क्षण स्वयं को खुशहाल रख पाएँगे। हमारी झोली कभी भी खुशियों से रिक्त नहीं होगी। जिंदगी सदाबहार बनी रहेगी। वस्तुतः नया दिन हमारे संतप्त जीवन को नवीनता देने वाला सिद्ध होगा। इसके लिए हमें औपचारिकताओं को दरकिनार करते हुए सत्य तथ्य पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। प्रश्न होगा क्या करें? उत्तर है- यदि कोई तुम्हारा अपकार करे तू उपकार ही करते रहना। यदि कोई अपमान करे तू उसका सम्मान ही करना। कोई तुम्हारी कितनी भी बुराई करे तू बुरा मत बनना, तू किसी की बुराई मत करना। ये कुछ बिंदु हैं, जिन पर सतत कदम बढ़ाते रहना।

कार्तिक शुक्ल 1, गुरुवार, 12-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

Embrace The Auspicious Form

- Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Kartik Vikrami Samvat (an auspicious date as per the Hindu calendar) and Veer Samvat (the self-same date) is known as New Year Day. The day also derives significance from the fact that it marks the anniversary of the Acharyas assuming the reins of faith. In the absence of Tirthankars (Enlightened Founders of the Jain faith), it is the Acharyas (spiritual preceptors) who shouldered the responsibilities of the spiritual order. Ganadhar Sudharma Swami ('Ganadhar' means one of the direct disciples of Bhagwan Mahavir) was installed as the premier 'ganadhar' on this very day. As such, it may be said that the day heralded a new era.

Now, every day is a new day, in that the sun that rises at dawn today will not arrive tomorrow. However, the notion of a 'new day' relates to a person's faith. There are many who would look upon the day as an ordinary one.

People would like to celebrate the new day with joy; however, since the underlying secret of festivity is unbeknown to them, they squander away their time in merriment and gaiety, and in sensual pleasures. Pleasures of the senses are transitory. They can hardly fill our hearts with joy for long. If you would have your fill of joyfulness, you should turn to 'mangal' (or, auspiciousness). 'Mangal' squares up to faith. Faith is exalted 'mangal', and faith comprises non-violence, restraint and penance. A soul awash and purified with these manifests the qualities of forgiveness, tenderness, simplicity, absence of covetousness, tolerance et al. As a consequence, we acquire the strength to bear hardships.

When this comes about, we will remain happy every time, every moment. Our alms bag shall never be devoid of joys. Life will be evergreen. In fact, the new day will serve to impart novelty to our distressed life. To this end, we must cast aside formalities and focus our attention on the true reality. The question might arise as to what needs to be done. The answer is, repay disservice with beneficence. And should someone insult you, show regards for them. No matter to what extent somebody speaks ill of you, you may not pay him in kind. These are a few points, and you may relentlessly march forward, bearing them in mind.

Thursday, 12-11-2015

Courtesy- Brahmakshar

धन्य हो गया संघ

सुनहरी कलम से....

अभी हाल ही मैं संपन्न धर्मोल्लास, तप–त्याग, सर्वजनहिताय एवं जीवमात्र के कल्याण का पावन पर्व महत्तम शिखर महोत्सव हम सभी के दिलों में आचार्य भगवन् के दृढ़ संयमी जीवन की एक और अमिट छाप अंकित कर गया। इस महोत्सव रूपी महायज्ञ ने संघ के प्रत्येक सदस्य ने अपनी ओर से आहुति अर्पित कर गुरुचरणों में सच्ची समर्पणा का परिचय दिया है। महत्तम महोत्सव, महत्तम शिखर, महत्तम सोमनस, महत्तम नंदन एवं महत्तम संवत्सर आदि कई नाम गत लगभग 31 माह से हमारे कर्णगोचर हो रहे हैं। इन सभी नामों के प्रयोजन से हम सभी भली–भाँति परिचित हैं।

परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के संयमी जीवन के 50 वर्ष 9 फरवरी 2025 को ही पूर्ण हुए हैं। आप ऐसे दिव्य महापुरुष हैं, जो इस कलिकाल में भी भौतिकता की चकाचौंध से पूर्ण निर्लिप्त रहते हुए सत्युग की भाँति अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धांतों पूर्ण अटल हैं और प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिपल स्व एवं पर कल्याण हेतु तत्पर रहते हैं।

आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस को मनाना हम सभी के लिए परम सौभाग्य का अवसर रहा। इसी सौभाग्य को महामहोत्सव का नाम दिया गया। कोई भी प्रसंग जन–जन के उल्लास व प्रसंग के वैभव से महामहोत्सव बनता है। महत्तम महोत्सव प्रकल्प के आँकड़ों द्वारा आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव का उल्लास परिलक्षित हो रहा है और इसका वैभव उपरोक्त उल्लेखित कई कार्यक्रमों सहित दिनांक 7, 8, 9 फरवरी 2025 को नोखा (राज.) में आयोजित महत्तम शिखर महोत्सव के अवसर पर देखने को मिला है।

ऐसे विशिष्ट अवसरों में योगदान करने एवं इनका साक्षी बनने का अवसर

पुण्यवानी के उदय से प्राप्त होता है। ये मानकर चलें कि हम सभी पर गुरुवर की अपार कृपा बरस रही है भी तो कर्मोदय का यह सौभाग्य हम हमारे इस जीवन में प्राप्त हुआ है। धन्य है वह हर एक जीव जिसे परमाणु रूपी इन कार्यक्रमों का अणु बनने का संयोग मिला। एक ऐसा अवसर जो किसी भौतिकता का मोहताज नहीं था। जिसका लक्ष्य जन–जन के भीतर आध्यात्मिक ज्योत जलाना, समाज की संस्कारों की नींव को मजबूत बनाना एवं मैत्री, संस्कार, सदाचार व भाईचारे के साथ सामाजिक ताने–बाने में धर्म की दृढ़ता को मजबूत कर सुखद भविष्य का निर्माण करना था।

सांसारिक क्रियाओं को गौण कर हम सभी ने गत लगभग 31 माह इस महामहोत्सव का आनंद लिया। इन 31 माह में धार्मिकता से ओत–प्रोत अनेक कार्यक्रम हुए। प्रत्येक कार्यक्रम में लोगों ने दोगुने उत्साह से भाग लिया। जैन–जैनेतर गुरुभक्तों का आत्मोल्लास एक ऐसे महत्तम महापुरुष के प्रति श्रद्धा का प्रतीक बन गया, जिनकी सख्य क्रिया एवं दृढ़ संयम यात्रा को देखकर मानव तो क्या देवता भी नतमस्तक हो जाते हैं।

समाज बंधुओं एवं भगिनियों से मेरा यही निवेदन है कि आचार्य भगवन् के सुवर्ण महामहोत्सव में हम सभी ने कुछ न कुछ विशेष अंगीकृत किया है। अब हम सभी आचार्य भगवन् के आत्मोद्देश्य को और नजदीकता से देखने का प्रयास करें और यह मूल बात अपने हृदय की अतल गहराइयों से स्वीकार करें कि यह जो कुछ भी हमने धर्मक्रियाएँ अंगीकार की हैं, इनको जीवनभर अपने साथ रखना है और सदैव ही इनकी अभिवृद्धि को जारी रखना है। यह न हो कि हम लक्ष्य से भटककर महत्तम महोत्सव के मूल उद्देश्य को भूल जाएँ और पुन: अपना जीवन एक सामान्य जन की भाँति बना लें।

हमारे परमसौभाग्य से हमें आर्य क्षेत्र, उत्तम जैन कुल, साधुमार्गी संघ एवं आचार्य श्री रामेश जैसे महामानव का सुखद सान्निध्य प्राप्त हुआ है। यदि अब भी हम अपना यह जीवन सार्थक नहीं कर पाए तो..... मैं नि:शब्द हूँ।

गुरुचरणों में यही निवेदन है कि हम सभी गुरुभक्तों पर सदैव अपनी कृपा बनाए रखें और धर्म व संयम के मार्ग पर अग्रसर होने हेतु हमारा विशेष मार्गदर्शन करें।

योगी, साधक, दिव्य आराधक,
पल-पल विवेक-यतना के धारक।
दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें गुरुवर,
दृढ़ संयम, आगमाचार के पालक।
सकल श्रीसंघ माँगे यही वरदान,
वरदहस्त सदा रहे हम पर गुरुवर॥

- सह-संपादिका

महान पुरुष

धर्मदेशना

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

एक वजीर अपने घोड़े पर सवार होकर जंगल में जा रहा था। रास्ते में किसी के कराहने की आवाज उसके कानों में पड़ी। वजीर ने घोड़ा रोका और इधर-उधर नजर दौड़ाई, मगर उसको कोई दिखाई नहीं दिया। फिर भी उसके चित्त में कौतूहल हुआ और दया की भावना भी जागृत हुई। तब वह उधर ही चल पड़ा, जिधर से आवाज आई थी। थोड़ी दूर जाने पर वजीर ने देखा कि एक मनुष्य जमीन पर पड़ा है। उसके शरीर पर जगह-जगह मारपीट के चिह्न बने हैं। एक टाँग टूटी हुई है और उसमें से लहू बह रहा है, जिस पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

वजीर देखते ही घोड़े से नीचे उतरा और अपने दुपट्टे से उस आहत मनुष्य के पैर पर पट्टी बाँधकर कहा—''आप यहाँ कैसे पड़े हैं? इस घोड़े पर बैठ जाइए और शहर चलिए।'' आदमी चुपचाप घोड़े पर बैठ गया। वजीर घोड़े की लगाम पकड़कर आगे-आगे चलने लगा।

कुछ दूर जाने पर वजीर ने उसके चेहरे की तरफ देखा। चेहरा प्रसन्न दिखाई दिया। तब पूछा—''कहो भाई, तबीयत कैसी है?''

उसने कहा—''जनाब, अब अच्छी है। इस कृपा के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।''

वजीर—''धन्यवाद तो ईश्वर को दीजिए। मैं किस योग्य हूँ? आपने बहुत तकलीफ सही है। दूसरा कोई होता तो घबराहट के मारे प्राण त्याग देता।''

वह बोला—''आप ठीक कहते हैं, पर रोने-धोने से क्या होता है। मौत आ जाए तो हाय-हाय करने से भी वह नहीं रुकेगी। रोने-चीखने से दुःख दूर तो होता नहीं है। यह तो ईश्वर को भूल जाना है।''

वजीर—''आप तो कोई महान पुरुष मालूम होते हैं।''

उसने कहा—''महान पुरुष तो आप हैं जो मुझे जानते नहीं, पहचानते नहीं, फिर भी मेरी सहायता कर रहे हैं।''

साभार- श्री जवाहर किरणावली-17
(उदाहरण माला भाग-2)

धर्मदेशना

गुरु

गुरु बिन कौन बताए पथ!

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

शांति जिन एक मुझ विनति...

शांति के स्वरूप को पाने के लिए जो सोपान बताए गए हैं उनका परिचय पा लेना आवश्यक है। पहला सोपान बताया है **देव और उनकी वाणी**, उस पर दृढ़ आस्था होनी चाहिए। दूसरा सोपान है **गुरु**। इस सोपान की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया गया है कि गुरु का चयन करने में भ्रमित नहीं हो जाएँ। गुरु पद का दावा करने वाले गुरुओं की कमी नहीं है, परंतु सही गुरु की पहचान आवश्यक है। ऐसे गुरु के संबंध में कहा गया है –

आगमधर गुरु समकिती, किरिया संवर सार रे...

गुरु आगम को धारण करने वाला हो, उन पर आचरण करने वाला हो तथा उसका वह आचरण संवर की साधना वाला हो। आचरण क्रिया यदि संवरयुक्त नहीं है, कषाययुक्त है तो वैसी कषाययुक्त क्रियाओं से संवर नहीं होगा।

एक व्यक्ति गुस्से में आकर उपवास, बेला, तेला करता है। उसकी वह क्रिया क्या संवरयुक्त क्रिया है? वैसे ही गुस्से में आकर कोई सामायिक लेकर बैठे तो वह सामायिक सार्थक है? नहीं है, क्योंकि सामायिक लेकर बैठ जाना मात्र सामायिक नहीं है। ऐसे ही कोई घर से निकल जाए कि सुन-सुनकर थक गया, अत: साधु बन रहा हूँ। ऐसा व्यक्ति साधु बन भी गया, कठोर आचरण भी कर ले तो शास्त्रकार कहते हैं कि आचरण करने मात्र से सम्यक् आराधना नहीं हो जाती। आराधना होनी चाहिए कषाय रहित। वही साधना सार्थक होती है। आराधना की क्रियाओं का परिणाम संवर आना चाहिए। यदि मैं कठोर क्रिया कर रहा हूँ, परंतु भाव बने हैं कि लोग उससे प्रभावित हों और कहें- ''ओहो! महाराज कठोर क्रिया करते हैं'' तो वैसी क्रिया का भाव संवर के रूप में नहीं रहेगा। जिस साधना की क्रिया में इहलोक-परलोक की कामना न हो, कषाय का पुट न हो, किंतु आत्मा की सहज अवस्था हो, वही क्रिया कर्मों का विनाश करने वाली बनती है। हमसे भी कठोर साधना करने वाले अनेक मिल जाएँगे। कई तापस जेठ-वैशाख की भयंकर गर्मी में चारों तरफ पंचाग्नि जलाकर ताप लेते हैं और गरम राख उठाकर शरीर पर मलते हैं। क्या यह कठोर साधना नहीं है? कई अरण्यवास में चले जाते हैं। परंतु चाहे कोई अरण्यवास में चले जाएँ, चाहे गर्म राख शरीर पर

लीपें, पर इतने मात्र से उस साधना को संवरयुक्त नहीं कहा जा सकता। ऐसी क्रिया संसार घटा नहीं सकती। कर्म की निर्जरा भले हो जाए, किंतु कर्म का लेप निरंतर बनता रहेगा। यह तो ऐसा हुआ कि हम कुंड या टंकी से एक-एक बाल्टी भरकर गंदा पानी निकाल रहे हैं, किंतु वापस दो-चार बाल्टी गंदा पानी अंदर आ रहा है। ऐसी स्थिति में कितना ही पानी निकालते जाएँ, टंकी की सफाई नहीं हो पाएगी।

कल्पना कीजिए कि नौका में बड़े-बड़े छिद्र हो गए हैं, जिनसे पानी निरंतर अंदर आ रहा है। जितना पानी हम निकाल रहे हैं, उससे चार गुना ज्यादा पानी अंदर आ रहा है। ऐसी स्थिति वाली नौका कैसे तिरा पाएगी? इसलिए विचार न करें कि क्रिया कठोर कर रहे हैं तो संवर ही हो रहा है। कवि आनंदघन जी कहते हैं- कठोर क्रिया मत देखना, पर देखना यह कि उसके पीछे संवर का भाव कितना है। बाहर के परिवेश से उसने स्वयं को कितना दूर किया है। लोकेषणा या लोकभाव आश्रव का कारण होते हैं। आश्रव अर्थात् चारों तरफ से जिसमें स्राव बना हुआ है। यदि लोकेषणा की भावना है तो समझ लें कि चारों ओर के द्वार खुले हैं, तो निरंतर आश्रव होगा और आत्मा भारी बनती रहेगी।

गुरु कैसा हो और क्रिया संवर की कैसी हो? उसके आगे बताया गया है -

संप्रदायी अवंचक सदा.....।

आज के लोगों के लिए यह अटपटी बात होगी। आज हम कहते हैं- संप्रदाय का विलीनीकरण होना चाहिए, किंतु संप्रदाय होता क्या है?

संप्रदाय किसे मानें? यदि बर्तन, कटोरा या गिलास नहीं है तो क्या दूध टिक पाएगा? दूध टिकाने के लिए बर्तन की आवश्यकता होती है। वैसे ही धर्म साधना करने के लिए संप्रदाय की आवश्यकता होती है। यदि संप्रदाय आवश्यक नहीं थे तो भगवान महावीर को भी चार तीर्थों की स्थापना की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए थी। तब उन्होंने क्यों गणधर गौतम को दीक्षित किया? तब कहते ''तुम तुम्हारा जानो। अपना धर्म-कर्म करते रहो।'' परंतु क्या इतना निरपेक्ष भाव अपनाया था उन्होंने? हालाँकि वे निरपेक्ष थे, उन्हें कुछ लेना-देना नहीं था। पर भव्य आत्माओं के लिए वे सापेक्ष बने और चतुर्विध संघ की स्थापना की। निर्वाण से पूर्व संघ की सारणा-वारणा-धारणा के लिए गणधर सुधर्मास्वामी को गणाधिप-आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। यह सब क्यों किया उन्होंने? निश्चित रूप से इसके पीछे कारण रहा था कि जो मूढ़ हैं, अल्पबुद्धि हैं, वे कहीं भ्रमित न हो जाएँ। वे भी सही दिशा में गमन करके आत्मतत्व आत्मलक्ष्य को प्राप्त कर सकें। ये उद्देश्य उनका रहा था कि लोग मुझे याद करते रहें। वे तो मानते थे कि यह तो गुणपात्रों का समूह है। संघ-संप्रदाय-धर्म को टिकाने के लिए है। यदि लोटा, गिलास, कटोरा नहीं है तो दूध आदि पेय पदार्थ टिक नहीं पाएँगे, बिखर जाएँगे। वैसे ही संप्रदाय नहीं हो तो व्यक्ति अलग-अलग बिखर जाएँगे। बिखर गए तो *'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना'* वाली स्थिति बन जाएगी। अलग-अलग मति की बातें हो जाएँगी। इसलिए गुरु का संप्रदायी होना आवश्यक है, किंतु संप्रदाय का तात्पर्य समझना भी आवश्यक है।

कोई गुट या घेरा बना लेना संप्रदाय नहीं है। संप्रदाय में तो सम्यक् प्रकार से विचार का आदान-प्रदान होता है। जब ऐसी स्थिति बनती है तो साधना में चमक, रौनक आती है। वहाँ सारणा-वारणा-धारणा का भाव अपने आप में प्रकट होता है। सारणा अर्थात् यह कार्य करना है, इस पद्धति से करना है। कार्य का सम्यक् निरूपण सारणा है। वारणा अर्थात् अमुक कार्य नहीं करना है, निषेधात्मक कथन वारणा है।

धारणा किसी विषय को मस्तिष्क में निश्चित रूप में स्थापित कराती है।

पाँच समिति क्या है? केवल चलना ईर्यासमिति नहीं है। पशु भी चलते हैं, मनुष्य भी चलते हैं, पर साधु की चलने की प्रक्रिया को ईर्यासमिति कहा है। क्यों कहा है? पशु की या सामान्य मनुष्य की गति को ईर्या क्यों नहीं कहा है? साधु की गति के लिए विशेषण लगाया है ईर्यासमितिपूर्वक हो। ईर्यासमिति की महिमा अपरंपार है। यदि ईर्यासमितिपूर्वक चलने का इतना-सा संकल्प भी कर लें तो अशांति से मुक्त हो जाएँ। ईर्यासमिति एक संकेत है- होना तो यह चाहिए कि जो कार्य करें उसमें मशगूल हो जाएँ। वैसे ही भगवान ने भी कहा है कि यदि चल रहे हो तो समग्र उपयोग चलने में हो। न इधर देखें, न उधर देखें, न अगल देखें, न बगल में देखें कि किसकी दुकान है। यह भी न देखें कि दुकान में किस प्रकार के पदार्थ भरे हैं, कैसी सजावट की गई है। चलते हुए इन सबको न देखें सो तो न देखें, किंतु मन ही मन योजना बनाता हुआ भी न चले कि आज उस गाँव में पहुँचूँगा तो व्याख्यान में क्या कहना है? वहाँ श्रावकों से क्या-क्या वार्ता करनी है। ये योजना कहाँ तय करनी है और कोई काम नहीं है तो समय का सदुपयोग कर लें। और कुछ काम नहीं है तो चलते-चलते थोकड़ा गिन लें, स्वाध्याय कर लें। भगवान ने कहा- पाँच प्रकार का स्वाध्याय करता हुआ भी गमन नहीं करें और पाँच इंद्रियों के विषय भी साधु को चलने की गति में भ्रमित नहीं करें। वहाँ कहा गया है कि जो कार्य कर रहा है, उसी में पूरा उपयोग नियोजित हो। वह ईर्या पुण्यबंध के साथ निर्जरा कराने वाली है। मुक्ति की ओर बढ़ाने वाली है। इसलिए हम चिंतन करें कि कौनसी क्रिया संवर का सार है। यदि सारणा-वारणा-धारणा न हो तो गति सम्यक् नहीं कही जा सकती। इसलिए कहा है कि गुरु का संप्रदायी होना आवश्यक है। संप्रदायी का दूसरा अर्थ है- जिसे गुरु परंपरा से साधना की विधियाँ प्राप्त हैं।

ईर्या में गमन कैसे करें? शास्त्र में बताया गया है कि **'जयं चरे'** कितना चलना, किस प्रकार से, इसका बोध नहीं है तो क्रिया कर नहीं पाएगा। गोचरी जाना भी साधु की क्रिया है, पर जाना कैसे, चलना कैसे? साधु की चर्या कैसी हो? कहा गया है- दब-दब करता न चले। गोचरी के लिए जाए तो उसके पैर ऐसे पड़ने चाहिए जैसे चोर के पैर पड़ते हैं।

चोर के पैर कैसे पड़ते हैं? आवाज नहीं होती। यदि हो गई तो? तो उद्देश्य में असफल रहेगा। मैं डॉक्टर चपलोत का उदाहरण दूँ। मेरे ख्याल से बहुत कम डॉक्टर होते हैं, जिन्हें शास्त्र आता हो। इन्होंने दशवैकालिक सूत्र कंठस्थ कर रखा है। बचपन से ही रुचि क्रिया के प्रति रही है। डॉक्टरी करते हुए धर्म के प्रति निगाह बनाए रखना मामूली बात नहीं है। इन्हें ये सहज संस्कार आनुवांशिक मिले हैं। पंडित रोशनलाल जी सा. चपलोत ने कितने ही साधु-साध्वियों को पढ़ाया है। उनकी वृत्ति सीधी-सादी, सरल है। मैंने स्वयं वैराग्य अवस्था में उनसे अध्ययन किया है। साधुवृत्ति के थे। मैंने कहा- ''दीक्षा क्यों नहीं ले लेते?'' उनकी कुछ परिस्थितियाँ रही थीं, पर निर्मल, सहज संस्कार डॉक्टर साहब को प्राप्त हुए हैं। इसीलिए डॉक्टरों के जीवन में रहते हुए भी कई आगमों का गहरा अध्ययन कर पाए। हम भी चिंतन-मनन करें। चिंतन-मनन के आधार पर विचार करें कि गुरु का संप्रदायी होना कितना आवश्यक है। संप्रदाय के **'वाद'** को भी किंचित् व्यापक अर्थ में समझें। भगवान महावीर ने अनेकांत की बात कही है। स्याद्वाद की कहें या अनेकांतवाद की, उसमें भी 'वाद' है। यदि कहें **'अनेकांत'** ठीक है, **'अनेकांतवाद'** गलत है? तो? **'संप्रदाय'** ठीक है,

पर **'संप्रदायवाद'** गलत है तो यह उचित नहीं, क्योंकि बहुत से लोग भेड़िया धसान की चाल में चलते हैं। ऐसे लोग उसके गहरे अर्थ को जान नहीं पाते। जैसे राजनैतिक क्षेत्र में अलग-अलग प्रवक्ता होते हैं। प्रवक्ता वह व्यक्ति होता है जो किसी प्रसंग से संबंधित पार्टी के मत को व्यक्त करता है। यदि दो देशों में युद्ध चल रहा है तो अलग-अलग व्यक्ति कुछ भी कह दें, पर प्रवक्ता जो कह दे वह बात पार्टी की मानी जाती है। वैसे ही संप्रदायगत मंतव्य को प्रकट करना ही होता है- संप्रदायवाद! इस प्रकार अपनी विशिष्ट रीति-नीति को प्रकट करना संप्रदायवाद हुआ। जब हम संप्रदाय को मंजूर करते हैं तो उसकी धारणा या उसके दृष्टिकोण का विलोप कैसे हो सकता है? जहाँ संप्रदाय है तो वहाँ वाद का होना भी स्वाभाविक है। जैसे स्याद्वाद भगवान का सिद्धांत है तो उसके कथन के लिए सप्तभंगी को स्थापित किया गया है। कथन करने के संदर्भ में हम संप्रदायवाद को समझें। जो अर्थ ग्रहण कर लिया है, जो पकड़ लिया है, उसे छोड़े नहीं। चाहे वह गलत ही हो तो ऐसा मानना गलत होगा। 'वाद' गलत नहीं है, पर हठाग्रह गलत है। दृढ़धर्मिता व दृढ़धर्मी में अंतर है। दृढ़धर्मी जानता नहीं, समझता नहीं, जाने बिना, समझे बिना पकड़ लेता है। जानकर-समझकर धर्म पर जो दृढ़ता बने वह दृढ़धर्मिता है। मैंने पहले ही अर्थ स्पष्ट किया है कि परस्पर आदान-प्रदान करे वह संप्रदाय। यदि सम्यक् आदान-प्रदान के लिए द्वार खुले रहते हैं तो वह खुलापन संप्रदाय के लिए रुकावट नहीं है।

कवि आनंदघन जी कहते हैं- **संप्रदायी सदा अवंचक हो।** यह नहीं कि सियार का लबादा ओढ़कर चले। ऐसा नहीं होना चाहिए। रँगा सियार नहीं होना चाहिए। कहानी जानते हैं आप रँगा सियार की? एक रंगरेज के बर्तन में सियार गिर गया, उसकी चमड़ी रंग गई। लोगों ने देखा यह तो अनूठा जीव है। उसने देखा प्रतिष्ठा जम गई। धाक जमाने लगा। कब तक चलेगी धाक? जब तक दूसरे सियार हूऽ, हूऽऽ न करें। जैसे ही दूसरे सियार हूऽ, हूऽऽ करेंगे, रँगा सियार भी हूऽ, हूऽऽ करने लगेगा। यह वंचक का रूप है। इसलिए गुरु वंचक नहीं हो। यह न कहे कि यदि शिष्य बने तो पढ़ाऊँ, नहीं तो नहीं पढ़ाऊँ। ये कोई बात हुई? हाँ, कतिपय ऐसे प्रसंग होते हैं, जिन्हें बिना शिष्य अवधारणा के अध्ययन नहीं करवाया जाता, उनकी व्यवस्था रखी गई है। वह वंचना का अर्थ नहीं है, नीतिगत बात है। कैसे-कैसे प्रसंग बताए हैं। शांति की खोज करनी है। खोज तब तक, जब तक देव गुरु-धर्म की खोज न हो, क्योंकि उन्हीं के सहयोग से शांति की खोज हो सकती है और उन्हें बिना खोजे शांति के डग भरें तो वे डग सार्थक नहीं होंगे। कहा भी है -

गुरु बिन कौन बताये पथ।

भगवान महावीर भी शांति के लिए साधु बन गए थे। दीक्षा लेते ही उन्हें मन:पर्यवज्ञान प्राप्त हो गया था। ढाई द्वीप में रहे, संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जानने में वे समर्थ हो गए थे। उनकी संयम-साधना अनोखी थी। यों तो संयम जीवन को स्वीकार करने वाले सभी साधु पाँच महाव्रतों का पालन करते हैं, परंतु पालन में भी एक-एक साधु में अंतर होता है। होता है या नहीं? भगवान महावीर से जब मगध सम्राट श्रेणिक ने पूछा कि आपके इतने सारे साधु हैं, इनमें महानिर्जरा-महापर्यवसान प्राप्त करने वाला साधु कौन है? तब उन्होंने नाम लिया था **'धन्ना अणगार'** का। क्यों? क्या बाकी 14,000 महानिर्जरा नहीं कर रहे थे? वे भी कर रहे थे, किंतु जिस समय पूछा गया था उस समय वैसा कौन कर रहा था? भगवान ने न तो गणधर गौतम का नाम लिया, न सुधर्मा का। आज की स्थिति हो तो लोग असंतोष व्यक्त करते हुए कह

देते कि भगवान ने धन्ना का नाम ले लिया, क्या हम नहीं है? यदि दो-चार का भी आ जाता तो कह देते कि हमारी तो वहाँ पूछ नहीं। महाराज तो उन्हीं का नाम लेते हैं, जिनसे उन्हें कुछ मतलब होता है। आप विचार कीजिए कि महाराज को सांसारिक लोकप्रियता से क्या लेना-देना? वहाँ तो श्रेणिक पहुँचा, अर्जुन मालाकार पहुँचा। उपदेश में क्या अंतर आया? भगवान के पास पुण्यवान आए चाहे पुण्यहीन, अमीर आए या गरीब, वहाँ तो श्रुत और चारित्र धर्म का ही कथन होगा। चार गति में आत्मा कैसे भ्रमण करती है, कैसे-कैसे कष्ट सहन करने पड़ते हैं, तब मनुष्य भव प्राप्त होता है। इसकी सार्थकता क्या है, मोक्ष मार्ग पर कैसे बढ़ सकते हैं, यह उपदेश तीर्थंकरों का होता है। चाहे बूढ़ा आए या जवान या बालक। चाहे अतिमुक्तक आए, चाहे राजकुमार आए, वे यह नहीं कहते कि वह मेरा भक्त बन जाए। मुँह देखकर कथन नहीं करते। इसलिए यह उपदेश नहीं देते कि वह मेरा भक्त बन जाए। क्या करना है भक्त बनाकर? क्या भक्त तिराएगा? और भक्त के मोह में पड़ गए तो भी मुश्किल हो जाएगी।

श्रेणिक महाराज ने पूछा- ''मैं मरकर कहाँ जाऊँगा?'' बता दिया पहली नरक में। कौणिक ने पूछा तो कहा- ''छठी नरक में।'' यह नहीं सोचा कि नरक बताया तो भक्त नहीं रहेगा। यह सोचेगा कि जब नरक में जाना ही है तो दर्शन करके क्या करना? भगवान ने यथार्थ का कथन किया। ऐसा होता है साधु का, गुरु का चारित्र, जिसमें कोई लाग-लपेट नहीं। सत्य कथन, यथार्थ कथन, भले कोई कुछ भी सोचे। दिल तो हमारा भी चाहता है कि हम भी भगवान महावीर के अनुगामी बन जाएँ, किंतु पैरों में जंजीरें पड़ी हैं, हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी हैं। ऐसा प्रबल सांसारिक मोह! इसीलिए चाहते हुए भी उनका अनुसरण नहीं कर पा रहे हैं। बस द्रष्टाभाव से चलते हुए देख रहे हैं, पर अणगार बनने की तमन्ना किसी की जग नहीं पाई। परिणाम यह है कि भगवान ऋषभदेव निकले तो 4000 राजकुमार साथ हो गए। भगवान अकेले जाएँ, यह संभव नहीं। वे भी पंचमुष्ठि लोचकर निकल पड़े। भरत ने कहा- ''भाई! अभी समय है।'' पर वे निकल गए। भगवान महावीर भी अकेले चले थे। राष्ट्रकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने तो कहा भी है- **''एकला चलो रे...।''** कहीं किसी से अपेक्षा मत करना। अकेले चलो। कदम बढ़ा लो। किसी को आना होगा तो आ जाएगा। न आए तो पीछे मुड़कर मत देखना कि कोई आ रहा है या नहीं। ऐसी साधना प्रत्येक राही का लक्ष्य होनी चाहिए। हमें मुस्तैदी से चलना है। कौन सहयोग करेगा, कौन नहीं, यह भूल जाएँ। तुम्हारे दो पैर हैं। गाड़ी की अपेक्षा करने वाले को कभी मंजिल मिले न मिले, पर पैरों से कदम बढ़ाते चलते चलो। घबराने की बात नहीं, मंजिल अपने आप आ जाएगी। इसी तरह निस्पृह, निरपेक्ष भाव से बढ़े चलो तो शांति स्वत: मिल जाएगी, परंतु ध्यान रखना अशांत मन से बढ़ते रहोगे, अपेक्षाएँ रखकर बढ़ते रहोगे, आशंकाएँ लिए बढ़ते रहोगे तो संशय बना रहेगा। अशांत मन को कहीं स्थिर करना पड़ता है, कहीं आस्था जगानी पड़ती है, किसी के प्रति निस्पृह श्रद्धा-भाव रखना पड़ता है। जब ऐसी आस्थामयी मानसिकता बनती है, तब मन स्वत: ही शांत हो जाता है, तब सब आवेग और आशंकाएँ समाप्त हो जाती हैं, तब तन, मन, आत्मा सब परमशांति का अनुभव कर पाते हैं, तब सभी ओर शांति ही शान्ति होती है। मन की ऐसी अवस्था पाने के लिए आगमधर गुरु की पूर्ण समर्पण भाव से शरण ग्रहण करो तो तिर जाओगे।

साभार- श्री राम उवाच-10 (करें तीर्थ की परिक्रमा)

अतीत के मोती

संयम की सार्थकता

जैन कुल में जन्म लेना एक बात है, लेकिन जैन कुल में जन्म लेकर सुसंस्कारों को प्राप्त करना, यह जन्म की सार्थकता हैं। हमने जैन कुल में जन्म लिया, लेकिन हमारे भीतर जैनत्व के संस्कार जागृत नहीं हुए। जिनेश्वर देवों की वाणी पर श्रद्धा व आचरण नहीं बना तो जैन कुल में जन्म लेना व्यर्थ है। बंधुओ! अगर हमने शुद्ध भावों व अंत:करण से एक भी दीक्षा का अनुमोदन कर लिया तो हमारा भव बंधन सीमित हो सकता है। सुबाहु कुमार ने सुपात्रदान देकर संसार सीमित कर लिया था। सुपात्र का अनुमोदन करने मात्र से भाव शुद्धि हो जाती है।

संयम जीवन शांति का मार्ग है। साधु बनने के पश्चात् किसी जीव की असातना न करें, किसी जीव को तिरस्कृत करने का भाव ना लाएँ। सहजता, सरलता के साथ जीवन को आगे बढ़ाएँ, तभी दीक्षा लेना सार्थक बनता है। धन्य हैं मुमुक्षु भाई-बहनों के माता-पिता, जो अपनी संतानों को संयम मार्ग पर आगे बढ़ा रहे हैं।

''पूज्य गुरुदेव की वाणी को सुनकर हजारों लोगों ने यही अनुभव किया कि वर्तमान युग में तीर्थंकर तो नहीं बल्कि तीर्थंकरों के प्रतिनिधि के रूप आचार्य श्री रामेश की वाणी सम्यक् रूप है। लोगों को यह अनुभूति हुई कि आपश्री जी की वाणी में जहाँ आचार्य श्री जवाहर की क्रांति झलकती है वहीं गणेशाचार्य का अनुशासन भी मिश्रित है। आचार्य श्री नानेश की समता भावना भी आपश्री के प्रवचनों का ही एक रूप है।''

साभार- श्रमणोपासक 20 फरवरी 2010 के अंक से

ज्ञान सार

आध्यात्मिक आरोग्यम्

– संकलित

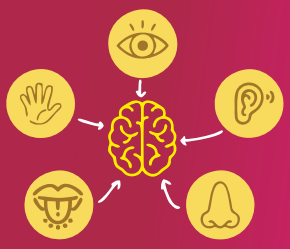

इंद्रिय निग्रह

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी को प्रदान किया गया था। यह आयाम धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन को आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

वश में इंद्रिय को रखो,
आँख, नाक, मुख, कर्ण।
शरीर की यतना करो,
गुरु वचन का मर्म।।

एक बंदर जंगल में घूम रहा था। उसने देखा कि पानी का झरना बह रहा है। उसे प्यास लगी थी। उसने पानी पीने के लिए मुँह डाला। उसका मुँह चिपक गया। दरअसल वह पानी नहीं था। वह शिलाजीत था। उसने वहाँ से मुँह हटाने की कोशिश की, पर मुँह निकल नहीं पाया। मुँह निकालने के लिए उसने हाथ डाला तो हाथ भी चिपक गया। बंदर ने अपने आपको निकालने की जितनी कोशिश की, उतना ही चिपकता गया। आखिरकार उसकी अकाल मृत्यु हो गई। यदि वह इंद्रिय निग्रह कर लेता तो शायद ऐसा नहीं होता।

इंद्रिय निग्रह का अर्थ है- पाँचों इंद्रियों यानी कान, आँख, नाक, जीभ एवं त्वचा को अपने वश में रखना। इंद्रियों का निग्रह करना केवल साधु के लिए ही जरूरी नहीं है, श्रावक और सद्गृहस्थ के लिए भी इसकी उपादेयता है।

इंद्रियाँ ही विषयों को ग्रहण करती हैं। फिर उस पर राग-द्वेष होता है। राग-द्वेष के कारण आत्मा नए-नए कर्मों का बंध करती हैं। इंद्रियाँ ज्ञान प्राप्ति का एक माध्यम है। हमारी जानकारी बढ़ती है। दृश्य जगत से जुड़ने का माध्यम है इंद्रियाँ। यदि पाँच में से एक भी इंद्रिय न हो तो विकलता हमें दु:खी करेगी।

आप सोचिए! आप कल्पना करके देखिए कि कान से सुनते नहीं हैं या आँख देखती नहीं है या शरीर लकवाग्रस्त हो गया, तो आपकी स्थिति क्या हो जाएगी? इनमें से एक भी घटना यदि घट जाए तो क्या आप खुश रह पाएँगे?

सोचिए गूँगे-बहरे लोगों के बारे में, जो न कुछ सुन पाते हैं, न बोल पाते हैं।

और सोचिए अंधे लोगों के बारे में।

जिस दुनिया में वे हैं, उसे देखना भी उनके नसीब में नहीं है। अपनी पत्नी, अपने बच्चे, यहाँ

तक कि गुरु और प्रभु के भी दर्शन नहीं कर सकते।

औरंगजेब ने शंभा जी की जीभ काट दी थी। कटी हुई जीभ की कल्पना कर पूछिए अपने आप से कि क्या मैं एक दिन के लिए अपने होंठ सिलकर रह सकता हूँ?

सोचिए उस सैनिक के बारे में जिसे गोली लगने पर अपना पैर या हाथ कटवाना पड़ता है। शरीर से एक भी इंद्रिय का कम हो जाना किसी त्रासदी से कम नहीं होता।

एक दिन कोई हमारी नाक बंद कर दे तो हमें कैसा लगेगा? एक-एक इंद्रिय महत्त्वपूर्ण है। हर इंद्रिय की अपनी जरूरत है, किंतु ध्यान देने की बात है कि हमारी इंद्रियों के घोड़े निग्रहित हैं या नहीं।

श्री ज्ञाताधर्म कथा सूत्र के **17वें अध्ययन** में घोड़ों की कहानी दी गई है। राजा कनककेतु अपने नगर हस्तीशीर्ष के व्यापारियों से कालिक द्वीप के घोड़ों के बारे में सुनते हैं। सुनकर राजा उन घोड़ों को पकड़कर लाने के लिए व्यापारियों को आज्ञा देते हैं।

राजा का आदेश सुनकर व्यापारी अपने साथ अनेक प्रकार की वीणा, आँखों को लुभाने वाले, रसनेंद्रिय को प्रिय और पाँचों इंद्रियों के अनुकूल पदार्थों को रखकर कालिक द्वीप की उस जगह पहुँचे, जहाँ घोड़े बैठते तथा सोते थे।

वहाँ उन्होंने कहीं आँखों को लुभाने वाली वस्तुएँ बिखेर दीं तो कहीं नाक को प्रिय लगने वाले सुगंधित द्रव्य फैला दिए और जाल बिछाकर छुप गए। घोड़े जब वहाँ आए तो उन्हें कुछ नया अनुभव हुआ। वहाँ उत्तम शब्द, रस, स्पर्श रूप और गंध युक्त वस्तुएँ रखी थीं। कई घोड़े उन पदार्थों के प्रति आसक्त नहीं हुए। ऐसे घोड़े उन पदार्थों से बहुत दूर रहकर भयरहित सुखपूर्वक विचरण करने लगे, जबकि कई उन पर आसक्त होकर उनका सेवन करने में प्रवृत्त हो गए। उनका आस्वादन करने में कुछ घोड़ों की गर्दन और पैर जाल में फँस गए। घोड़ों को पकड़ने की नीयत से आए लोगों ने उन घोड़ों को पकड़कर उन्हें जहाज में लाद कर हस्तीशीर्ष नगर कनककेतु राजा के पास पहुँच गए। वहाँ उन घोड़ों को चाबुक से पीट-पीट कर प्रशिक्षित किया गया।

भगवान फरमाते हैं कि जो साधु दीक्षित होकर पाँच इंद्रियों के विषय भोगों में आसक्त होते हैं वे संसार में भटकते हैं और उनका निग्रह करने वाले सुखपूर्वक रहते हैं।

बात केवल साधुओं की नहीं है। सांसारिक कार्यों में भी यदि इंद्रिय निग्रह न हो तो सफलता मिलना असंभव है। हमें पाँच इंद्रियाँ प्राप्त हैं। इंद्रियों के साथ मन की भी हमें प्राप्ति हुई है। अनंतानंत जीव ऐसे हैं जिन्हें एक ही इंद्रिय प्राप्त है। इस लोक में सबसे कम जीव ऐसे हैं, जिन्हें पाँचों इंद्रियाँ प्राप्त हैं। उनमें भी ऐसे लोग थोड़े हैं, जिन्हें जिनवाणी श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। इंद्रिय निग्रह की प्रेरणा पाने वाले तो और थोड़े हैं। इससे भी कम लोग ऐसे होते हैं, जो इंद्रिय निग्रह के विषय को समझते हैं।

हम दिनचर्या में देखें कि हमारे भीतर किस हद तक इंद्रिय निग्रह है!

ध्यान दें कि क्या हम पाँच इंद्रियों के विषयों से निज को रोक पाते हैं!

शास्त्र हमें बार-बार इंद्रिय निग्रह की प्रेरणा दे रहे हैं। शास्त्रों में ***'पंचनिग्गहणा धीरा'*** कहकर संबोधित किया गया है। धीर पुरुष ही पाँच इंद्रियों का निग्रह कर पाते हैं। इंद्रिय निग्रह नहीं होने पर आसक्ति भाव बढ़ता चला जाता है।

कुसंगति के कारण जैन कुल में जन्म लेने वाले कुछ बच्चे, जिस संस्कृति का प्राण शाकाहार है, उस संस्कृति में पैदा होने वाले लोग रसना का निग्रह न करने के कारण न जाने कितने कुकृत्य कर बैठते हैं। चॉकलेट, बिस्कुट, जैली, मैगी जैसे न जाने कितने पदार्थों के निर्माण में बहुत सारी कंपनियाँ अभक्ष्य पदार्थों का उपयोग करती हैं, किसी भी प्रकार ध्यान नहीं रखती और हम सिर्फ रसनेंद्रिय के वश होकर उनका उपभोग करते हैं।

आध्यात्मिक आरोग्यम् कहता है कि इंद्रिय निग्रह करो। एक मूवी बनने में क्या-क्या नहीं होता। मूवी बनाने में हीरो, हीरोइन, प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, कलाकार, सह-कलाकार होते हैं।

क्या ये सब लोग शाकाहारी होते हैं? क्या इनके चरित्र का कोई स्तर होता है?

एक्शन शॉट प्राय: हीरो करता ही नहीं है। उसकी जगह दूसरा स्टंट करता है। कई बार उसकी मौत भी हो जाती है। ये सब सिर्फ चक्षुरिंद्रिय अनिग्रह का परिणाम है।

ऐसा हिंसात्मक खेल कई लोगों के साथ होता है। ये सिर्फ आँखों के मनोरंजन के लिए है। मूवी बनने में कैमरे झूठ क्रिएट करते हैं और दर्शक उसे देखकर गुमराह होते हैं।

यह समाज किस ओर जा रहा है! कितने विरोधाभाषों में जी रहा है! एक ओर महिला सशक्तिकरण की बात की जाती है और दूसरी ओर महिलाओं को कैसे-कैसे रूप में देखा और दिखाया जाता है!

विचार करिए कि क्या यह इंद्रिय निग्रह है?

विचार करिए कि क्या हम सभ्य कहे जाने योग्य हैं?

मंथन करिए कि क्या हम श्रावक कहलाने लायक हैं?

सोचिए कि क्या हम इनसान की हैसियत रखते भी हैं?

विचार करेंगे तो पाएँगे कि जानवर भी इस तरह की हरकतें नहीं करते होंगे और हम ऐसे दृश्यों को देखकर अपने को मलिन और दूषित करते जाते हैं।

भगवान फरमाते हैं कि भोग वासनाएँ बढ़ाने से बढ़ती हैं और घटाने से घटती हैं।

'न कामभोगा समयं उवेंति'

जब ऐसे दृश्य हम देखेंगे तो हमारे भीतर किसी भी विजातीय को देखकर विकार भाव नहीं आएगा? क्या साधु-साध्वियों को देखकर हम अपनी दृष्टि निर्मल रख पाएँगे? इसका जवाब होगा 'शायद नहीं।' इसलिए हमें इस तरह की प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए।

कानों में पड़ने वाले शब्द और उन पर होने वाले राग-द्वेष कर्मों का बंधन कराते हैं।

हमें कैसे शब्द पसंद हैं? तैमूरलंग अपनी आत्मकथा में लिखता है कि मुझे मार-काट की आवाज बहुत अच्छी लगती है। ये श्रोतेंद्रिय का निग्रह नहीं है। आधुनिक समय में गीत-संगीत में कितनी अश्लीलता है। एक समय था जब संगीत को साधना कहा जाता था, पर अब क्या कहा जाए! राखी सावंत ने किस तरह से अपने शरीर का प्रदर्शन किया! सुंदर रूप के लिए अभिनेत्रियों ने प्लास्टिक सर्जरी करा रखी थी। अपने शरीर को पतला रखने के लिए वे मेहनत भी खूब करती हैं। उनके द्वारा की जाने वाली जी तोड़ मेहनत उन्हें एनोरेक्सिया का रोगी बना देती है।

पता है कि आप सब इसे पढ़कर जब इस पर विचार करेंगे, ठंडे दिमाग से सोचेंगे तो निश्चित ही त्याग करने की दिशा में पहला कदम बढ़ाएँगे। एक कदम बढ़ाने से आपको जो सुखद अनुभूति होगी, वह और आगे कदम बढ़ाने के लिए आत्मा को प्रेरित करेगी।

फिल्म जगत द्वारा संस्कृति की धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं, इसीलिए हिंदी फिल्में अपना जलवा बिखेरने में नाकाम हो रही हैं। इसमें छोटे पर्दे भी पीछे नहीं हैं। कुछ रियलिटी शो तो सारी हदें पार कर गए हैं। न मालूम हमारा सेंसर बोर्ड क्या कर रहा है! शायद वह गांधी जी के उन तीन बंदरों का अनुकरण कर रहा है जिनके आँख, कान और मुँह बंद थे। वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण से जुड़ी एक घटना का वर्णन है। वहाँ लिखा गया है -

नाहं जानामि केयूरे, नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि, नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

लक्ष्मण कहते हैं कि मैं सीता माता के बाजूबंद और कुंडल को नहीं जानता हूँ, परंतु भाभी के नूपुर और पायल के बारे में मुझे पता है। नित्य चरणस्पर्श करते समय उनको मैंने देखा है।

12 साल जिनकी सेवा में रहे उनके कुंडल नहीं देखे।

संस्कृति के ऐसे सपूत, जय हो आपकी।

इसे कहते हैं इंद्रिय निग्रह। भगवान इंद्रिय निग्रह की बात करते हैं क्योंकि इंद्रियों को कितना भी भोगा जाए मन कभी नहीं भरता। स्पर्शेंद्रिय की बात भी कर ही लेते हैं। विज्ञान ने पिछली सदी में आविष्कारों की बाढ़ ला दी। आजकल कूलर, ए.सी. जैसी चीजें हो गई हैं। एक ए.सी. से निकलने वाली गैस ग्लोबल वॉर्मिंग में कितना सपोर्ट करती है। वैज्ञानिक चिल्ला रहे हैं कि ओजोन में छेद हो रहा है, पर लोग उसके दुष्परिणामों की तरफ से आँख बंद किए बैठे हैं। आँख बंद कर लेने से सामने दिख रहा खतरा टल नहीं जाता।

रॉल्स रॉयस कार का सीट कवर गाय के चमड़े से बनाने की बात सामने आती है। नरम चमड़े के जूते, कोट, बेल्ट आदि बनाने के लिए गर्भवती गायों के उदर से बछड़े को निकालकर उस पर गरम-गरम पानी छिड़ककर उसके चमड़े से बनाते हैं। इसके लिए नृशंस तरीके अपनाए जाते हैं।

स्पर्शेंद्रिय सुख के लिए आज लाखों रुपए की शॉल और कालीन बिकती है। उन्हें तैयार करने में अनेक जीवों की हिंसा होती है। यदि हम इंद्रिय निग्रह करते हैं तो पर्यावरण के हितैषी हैं।

इको फ्रेंडली का नारा तो अब दिया गया है। भगवान ने तो पहले ही इंद्रिय निग्रह की बात की है, जो इको फ्रेंडली से अधिक विचारणीय है।

राजा के हरम में सैकड़ों रानियाँ होती थीं। ऐसा करने वाला इंद्रियों का दास ही कहा जाएगा। **'फ्रीडम एट मिडनाइट'** किताब में लेखक लिखता है कि पटियाला के राजा के हमाम में ऐसे फव्वारों का प्रयोग किया जाता था जिसका तापमान बाहर के तापमान से आधा या उससे भी कम होता। ऐसे कितने ही किस्सों से यह किताब भरी है जो स्पर्शेंद्रिय और रसनेंद्रिय के अनिग्रह की व्याख्या करते हैं। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि हम जितना इंद्रिय निग्रह करेंगे उतना ही एकाग्र बनेंगे।

दशवैकालिक की दूसरी चूलिका में कहा गया है -

अरक्खिओ जाइपहं उवेई,
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ।

अर्थात् अनिग्रह नरक का द्वार है और निग्रह मोक्ष का।

- आगमों का स्वाध्याय करें।
- धन्ना अणगार के रसनेंद्रिय विजय को देखें।
- ऋषभदेव भगवान के वार्षिक तप को देखें।
- भगवान महावीर के छह मासी तप को देखें।
- आतापना लेने वाले मुनियों को देखें।
- लोच वाले, नंगे पैर चलने वाले स्पर्शेंद्रिय विजेताओं को देखें।

पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. को याद करें, जिन्होंने 13 वस्तुओं से आत्म-निग्रह किया हुआ था। मीठा और तली हुई वस्तु का संपूर्ण त्याग किया था। एकांतर की तपस्या करते थे और एक चादर ही रखते थे। ऐसा जबरदस्त निग्रह उन मुनियों का था। हम उनके ही शिष्य और अनुयायी हैं।

रंगू जी महाराज ने पाँच द्रव्यों की मर्यादा की; आँवला, हल्दी, छाछ, आटा और पानी।

तिंवरी के पीरदान जी के रसनेंद्रिय निग्रह को याद करें। उन्होंने गाय का बाटा भी समभाव से खा लिया।

आयंबिल, उपवास करना, विगय का त्याग करना, नीवी करना और भोजन संयोजना रहित करना सभी इंद्रिय निग्रह के अप्रतिम उदाहरण हैं।

हम लोग एक बार अंतर्हृदय से ऊपर उल्लिखित महापुरुषों का अनुमोदन करें और धन्यवाद दें, जिससे हमारे भीतर भी वह निग्रह पैदा हो।

जिनशासन के नंदनवन में हमें इन सबको जानने-देखने के साथ वंदन-अनुमोदन का लाभ मिलना महान पुण्य नहीं तो और क्या है?

यह सही है कि एक ही दिन में उन लोगों जैसा नहीं बना जा सकता, पर यह भी सही है कि छोटी-छोटी चीजों से शुरू करके एक दिन उनके जैसा बन सकते हैं।

- शुरू में चमड़े की वस्तु का त्याग करें।
- रेड मार्क वाली वस्तुओं का त्याग करें।
- मिक्स होटल में खाने का त्याग करें।
- मसाज पार्लर का त्याग करें।
- हुक्का पार्टी का त्याग करें।
- पोर्न देखने का त्याग करें।
- बोन फायर का त्याग करें।

ऐसा करने से इंद्रिय निग्रह में मदद मिलेगी। भोजन संयम और द्रव्य मर्यादा जैसे छोटे-छोटे त्याग कर हम इंद्रिय निग्रह की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। इंद्रिय निग्रह संयम में सहायक बनता है। श्रावक जीवन में भी इंद्रिय निग्रह की सहायता से साधना को प्रखर बनाया जा सकता है। कई श्रावक भी सामायिक की साधना गहरी करते हैं। नवकार की आराधना उनकी गहरी होती चली जाती है। युवा अवस्था से ही प्रति रविवार प्रतिपूर्ण पौषध करने वाले मंदसौर के शिव सिंह जी चौधरी का अद्भुत इंद्रिय निग्रह है। लगभग 50 वर्षों से वे प्रत्येक रविवार को पौषध करते हैं। उन्हें देव दर्शन होते हैं। युवा वय में विषयों में भागते मन पर उन्होंने इंद्रिय निग्रह द्वारा लगाम लगाई है। ऐसा आप भी कर सकते हैं।

तीसरा बिंदु इंद्रिय निग्रह पूरा हो चुका है। पहले दो बिंदुओं के बाद जैसे थोड़ा सा रुककर सोचते थे, वैसे ही पुन: रुकिए, सोचिए और आगे बढ़िए।

पुन: वादा करिए कि नीचे लिखे बिंदुओं को पूर्व की भाँति 21 दिनों तक अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाने की कोशिश करेंगे।

1. *चमड़े की वस्तुओं का त्याग करना है।*
2. *रेड मार्क पदार्थों का त्याग करना है।*
3. *नशे का त्याग करना है।*
4. *बाजार के भोजन की मर्यादा रखनी है।*
5. *जंक फूड की मर्यादा करनी है।*
6. *गरमी के दिनों में कुछ देर बिना कूलर-ए.सी. बैठने की कोशिश करनी है।*

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

भक्ति रस

तेरे बंदे हम

साधुमार्ग हमारा गर्व, सत्पथ है हमारा धर्म।
राम गुरुवर तेरे बंदे हम, तेरे पथ पे चलें हरदम।।

गुरु नाना से तुमको पाया,
दीक्षा बरस 50 हो आया।
संघ सारा महोत्सव मनाए,
तेरे गुणों का ही गान गाए।।
तुम्हें पूज रहा जन-जन,
राम गुरुवर तेरे बंदे हम...

देशाणे माटी में जाए,
माँ गवरा हरख मनाए।
पिता नेमी बधाइयाँ बाँटें,
जन-जन के मनड़े भाए।।
रम गया तुम्हीं में मन,
राम गुरुवर तेरे बंदे हम...

अनुशासन तुम्हें है सुहाता,
उत्क्रांति के तुम हो प्रदाता।
आडंबर के हो विरुद्ध,
आचार पालो हमेशा शुद्ध।।
तुम चमके सूरज ज्यूँ गगन,
राम गुरुवर तेरे बंदे हम...

शब्द सामर्थ्य नहीं है मुझ में,
जो गुण कीर्तन कर पाऊँ।
भाव भरा यह मन,
पर व्यक्त नहीं कर पाऊँ।।
हो संघ के अमूल्य धन,
राम गुरुवर तेरे बंदे हम...।।

- नेमीचंद सिपानी

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 जनवरी 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 149 तीर्थंकर नामकर्म के बंध के 20 बोल प्रसिद्ध हैं, किंतु जीव चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव की पदवी किस कारण से प्राप्त करता है?

उत्तर जैसे एक ही प्रकार के गन्ने के रस से गुड़, शक्कर आदि विविध पदार्थ बनते हैं तथा एक ही जाति के तंतु से विविध वस्त्र बनते हैं, उसी प्रकार तीर्थंकर नामकर्म के बंध के 20 बोलों की आराधना में अध्यवसायों की तरतमता के कारण चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव की पदवी प्राप्त करते हैं।

-लोकप्रकाश सर्ग गाथा 7-10

प्रश्न 150 गौरी, विज्ञप्ति, आकाशगामिनी आदि अनेक विद्याओं के धारक विद्याधर मनुष्य कहाँ रहते हैं?

उत्तर भरत क्षेत्र को दो भागों में विभाजित करने वाला दीर्घ वैताढ्य पर्वत 10 हजार $720\frac{12}{19}$ योजन लंबा, 25 योजन ऊँचा, 6¼ योजन गहरा और 50 योजन चौड़ा है। समभूमि से 10 योजन ऊपर जाने पर उत्तर और दक्षिण दोनों तरफ 10-10 योजन चौड़ी पर्वत के बराबर लंबी श्रेणियाँ हैं। इन श्रेणियों में पाँचों गति में जाने वाले विद्याधरों के नगर हैं। दक्षिण की तरफ क्षेत्र कम होने के कारण 50 नगर हैं व उत्तर में 60 नगर हैं। इस प्रकार 110 नगरों में भरत क्षेत्र के विद्याधर मनुष्य रहते हैं।

- श्री जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्र प्रथम वक्षस्कार

नोट - 1) पर्वतों पर फिरने योग्य खुली जगह को श्रेणी कहते हैं।

2) महाविदेह क्षेत्र में दोनों तरफ समान क्षेत्र होने के कारण 55-55 नगर हैं।

3) पाँचवें आरे में विद्याधर मेरुपर्वत पर नहीं जा पाते हैं क्योंकि इस आरे में उनकी उड़ान मुर्गे की उड़ान जितनी ही रहती है।

प्रश्न 151 सिद्धालय के तल 2½ द्वीप में कुल कितने विद्याधर नगर हैं?

उत्तर 2½ द्वीप में कुल 18700 विद्याधर नगर हैं। यथा -

1) जंबूद्वीप में 34 दीर्घ वैताढ्य पर्वत × 110 नगर = 3740 नगर

2) धातकी खंड में 34 + 34 = 68 दीर्घ वैताढ्य पर्वत × 110 नगर = 7480 नगर

3) अर्द्धपुष्कर द्वीप में भी 7480 नगर। कुल 18700 विद्याधर नगर हैं।

नोट - विद्याधर क्षेत्रों में भी तीर्थंकर भगवान का शासन चलता है।

प्रश्न 152 अनृद्धि प्राप्त आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर अनृद्धि प्राप्त आर्य के नौ भेद हैं –

1. क्षेत्र आर्य, 3. कुल आर्य, 5. शिल्प आर्य, 7. ज्ञान आर्य, 9. चारित्र आर्य।
2. जाति आर्य, 4. कर्म आर्य, 6. भाषा आर्य, 8. दर्शन आर्य,

प्रश्न 153 कौनसे क्षेत्र आर्य क्षेत्र कहलाते हैं?

उत्तर जिन क्षेत्रों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव एवं वासुदेवों का जन्म होता है, वे क्षेत्र आर्य क्षेत्र कहलाते हैं।

प्रश्न 154 क्षेत्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर भरत क्षेत्र में बत्तीस हजार देश (जनपद) हैं। उनमें से साढ़े पच्चीस (25½) आर्य देश हैं। शेष देश अनार्य हैं। इन साढ़े पच्चीस आर्य देशों को क्षेत्रार्य कहते हैं।

प्रश्न 155 आर्य देश और उनकी राजधानियों के नाम क्या हैं?

उत्तर आर्य देश और उनकी राजधानियों के नाम इस प्रकार हैं –

आर्य देश	–	**राजधानी**	**आर्य देश**	–	**राजधानी**
1. मगध देश	–	राजगृह नगरी	14. शांडिल्य देश	–	नंदीपुर नगर
2. अंग देश	–	चम्पानगरी	15. मलय देश	–	भलिपुर नगर
3. बंग देश	–	ताम्रलिप्ती	16. मत्स्य देश	–	विराट नगर
4. कलिंग देश	–	कंचनपुर नगर	17. वरण देश	–	अच्छापुरी नगरी
5. काशी देश	–	वाराणसी नगरी	18. दशार्ण देश	–	मृत्तिकावती नगरी
6. कौशल देश	–	साकेत नगर	19. चेदि देश	–	शौक्तिकावती नगरी
7. कुरु देश	–	गजपुर नगर	20. सिन्धु सौवीर देश	–	वीतभय नगर
8. कुशावर्त देश	–	सौरिक नगर	21. शूरसेन देश	–	मथुरा नगरी
9. पंचाल देश	–	काम्पिल्य नगर	22. भंग देश	–	पावापुरी नगरी
10. जंगल देश	–	अहिच्छत्रा नगरी	23. पुरिवर्त देश	–	माषपुर
11. सौराष्ट्र देश	–	द्वारिका नगरी	24. कुणाल देश	–	श्रावस्ती नगरी
12. विदेह देश	–	मिथिला नगरी	25. लाट देश	–	कोटि वर्ष नगर और
13. वत्स देश	–	कौशाम्बी नगरी	25½ आधा केकय देश	–	श्वेताम्बिका नगरी

प्रश्न 156 जाति आर्य किसे कहते हैं तथा इसके कितने भेद हैं?

उत्तर मातृ पक्ष को 'जाति' कहते हैं। जिनका मातृ पक्ष निर्मल हो, वे जाति आर्य कहलाते हैं। जाति आर्य के छह भेद हैं – 1) अम्बष्ठ, 2) कलिंद, 3) विदेह, 4) वेदग, 5) हरित, 6) चुंचुण।

नोट – उपर्युक्त 6 जातियाँ आगमकालीन युग की श्रेष्ठ एवं प्रसिद्ध जातियाँ थीं। इनका विशेष वर्णन प्राप्त नहीं होता है।

प्रश्न 157 कुल आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर कुल आर्य के छह भेद हैं – 1) उग्र कुल, 2) भोग कुल, 3) राजन्य कुल, 4) इक्ष्वाकु कुल, 5) ज्ञात कुल, 6) कौरव कुल। (जिनका पितृ पक्ष निर्मल हो, वे कुल आर्य कहलाते हैं)

–क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

द्वादश अध्ययन : हरिएसिज्जं

15-16 जनवरी 2025 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

तिंदुक यक्ष आकाश में स्थित होकर रौद्र रूप धारण करके छात्रों को कष्ट पहुँचाने लगा, जिसके कारण उनकी बहुत बुरी दशा हुई। राजपुत्री भद्रा ने ब्राह्मणों को हरिकेशबल मुनि के स्वरूप से अवगत कराया तब रुद्रदेव पुरोहित ने मुनिराज का विनयपूर्वक सत्कार किया तथा अपने अपराधों की क्षमा माँगी, उसी क्षण उन मुनिराज के शरीर में प्रविष्ट यक्ष निकल गया। उसके पश्चात् मुनिराज ने कहा –

मुनि द्वारा ब्राह्मणों के लिए समाधान

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मण-प्पदोसो न मे अत्थि कोई।
जक्खा हु वेयावडियं करेंति, तम्हा हु एए निहया कुमारा॥32॥

भावार्थ - ''हे पुरोहित! तुम्हारे लिए मेरे मन में कोई द्वेष न पहले था, न इस समय है और न आगे भविष्य में रहेगा, किंतु यक्ष मेरी वैयावृत्य-सेवा कर रहे हैं। इसलिए ये कुमार उनके द्वारा ही प्रताड़ित हुए हैं।''

इस गाथा में मुनिराज का आशय है - निर्ग्रंथ क्षमाशील होते हैं। उनका किसी भी व्यक्ति के साथ किसी भी बात को लेकर किसी प्रकार का द्वेषभाव नहीं रहता। यदि कोई उनके शरीर को चंदन से लेपित करे तो उनसे स्नेह नहीं करते तथा यदि कोई शस्त्र से घाव देवे तो उनसे द्वेष नहीं करते। मैंने अपने ऊपर प्रहार करने वाले ब्राह्मण कुमारों का मन से भी अनिष्ट नहीं चाहा और न उन्हें प्रताड़ित करने के लिए किसी को प्रेरणा दी है तथा ना ही मन-वचन-काय से कोई सहयोग किया है। किंतु यक्ष मेरा परम सेवक बन गया था। अतः ब्राह्मणों की आँखें खोलने और उन्हें भविष्य में किसी भी मुनि की अशातना न करने हेतु ऐसा किया। निर्ग्रंथ साधु सब जीवों पर समता भाव रखते हैं।

मुनि को कोप रहित एवं मंगल प्रज्ञायुक्त जानकर रूद्रदेव आदि सभी ब्राह्मण उनके गुणों से आकृष्ट एवं प्रभावित हुए। ब्राह्मणों को निश्चय हो गया था कि मुनि की शरण ग्रहण करने योग्य है। सबने मिलकर हरिकेशबल मुनिराज की शरण को स्वीकार किया, उनका सम्मान किया अर्थात् मुनि की प्रत्येक वस्तु सम्माननीय एवं पूजनीय है। इस प्रकार विनयपूर्वक क्षमायाचना करते हुए आहार-पानी के लिए विनती करते हुए इस प्रकार कहा –

इमं च मे अत्थि पभूय-मण्णं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा।
बाढं ति पडिच्छइ भत्त-पाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा॥35॥

भावार्थ - ''यहाँ यज्ञशाला में प्रचुर अन्न तैयार है। हम पर अनुग्रह-दया करने के लिए आप इसे स्वीकार कर

भोजन करें।'' इस प्रकार उनकी भक्ति देखकर उन महात्मन् ने एक मास के पारणे के दिन 'ठीक है' ऐसा कहकर दिए गए भक्तपान को स्वीकार किया।

आहारदान- सुपात्रदान का प्रभाव

इसके पश्चात् मुनि द्वारा आहार ग्रहण करते समय क्या हुआ, इसका वर्णन निम्नोक्त गाथाओं में किया जा रहा है –

तहियं गंधोदय-पुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं, आगासे अहोदाणं य घुट्ठं।।36।।

भावार्थ – उस यज्ञशाला में देवों ने (पंचवृष्टि – पाँच प्रकार की दिव्य वस्तुओं की वृष्टि) (1) गंधोदक – सुगंधित जल, (2) पुष्प, (3) श्रेष्ठ वसुधारा – धन की वृष्टि और (4) दुंदुभियाँ बजाई तथा (5) आकाश में **'अहोदानम्, अहोदानम्'** इस प्रकार उद्घोष किया।

इस गाथा का आशय है – जब किसी विशिष्ट तपस्या का पारणा होता है, तक सुपात्रदान की महिमा प्रदर्शित करने के लिए देवगण ये पाँच दिव्य वस्तुएँ प्रकट करते हैं। सुपात्र को दान देने वाले धन्य हैं। जिनमें क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन एवं परिग्रह नहीं करते, ऐसे साधु को दिया दान सुपात्रदान कहलाता है।

यज्ञशाला में हरिकेशबल मुनि के आहारदान देने के प्रभाव से ऐसी चमत्कारी, ऋद्धि, शक्ति एवं महत्ता को प्रत्यक्ष देखकर जातिमद करने वाले ब्राह्मण की आँखें खुली रह गई एवं मुनि के प्रति श्रद्धालु भक्त बन गए थे। अतः उनके मुख से निकलती हुई वाणी तत्त्वज्ञान को अभिव्यक्त कर रही थी। वे विस्मित होकर अहोभाव से इस प्रकार युक्त हुए –

सक्खं खु दीसइ तवो-विसेसो, न दीसई जाइ-विसेस कोई।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा।।37।।

भावार्थ – यहाँ तप की विशेषता प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है, जाति की कोई महिमा नहीं दिखती है। जिनकी इतनी चमत्कारी महानुभाग-संपन्न ऋद्धि है, वे हरिकेशबल मुनि चांडाल पुत्र हैं।

इस गाथा का आशय है – ब्राह्मणों को आभास हो गया था कि जैन धर्म में यज्ञ का विरोध किया गया है। जैन दर्शन में जीव की सुरक्षा उसके ज्ञान और आचार, तप, संयम और पवित्रता से होती है। जो जितना आचारवान होता है वह उतना उच्च है और जो जितना आचार भ्रष्ट होता है वह उतना नीच है। भगवान महावीर ने फरमाया है – एक जीव अनेक बार उच्च गोत्र में उत्पन्न हुआ है और अनेक बार नीच गोत्र में जन्मा है। इसलिए जीव अपने कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र होता है। देव, मनुष्य, नारकी अथवा पशु बनता है। उच्च क्रिया से उच्च गोत्र प्राप्त करने पर भी हिंसक प्रवृत्ति, अतप एवं अव्रतों में ग्रस्त, जीव पाप कर्मों को बंध कर नीच गोत्र पाता है तथा नीच गोत्र में उत्पन्न जीव अहिंसा, तप एवं व्रतों से पाप कर्मों को नष्ट करते हुए उच्चतम मोक्ष प्राप्त कर सकता है। अहिंसा के लिए प्रवृत्त हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं शूद्र दीक्षा ग्रहण करने एवं तात्विक बोध प्राप्त करने के अधिकारी हैं। जैसे– हरिकेशबल मुनि।

ब्राह्मणों का मिथ्यात्व उपशांत हुआ देख मुनि द्वारा वास्तविक शुद्धि उपदेश

पहले मुनि ने ब्राह्मणों को उपदेश नहीं दिया, क्योंकि पहले वे लोग सर्वथा उन्मुख थे। मुनि की बात सुनना तो दूर वे मुनि की ओर देखना भी नहीं चाहते थे। जब तप-त्याग का प्रत्यक्ष प्रभाव देखा तब वे मुनि को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे।

मुनिराज ने देखा कि इन ब्राह्मणों का मिथ्यामोहनीय नष्ट हो चुका है अर्थात् ब्राह्मणों को स्पष्ट हो गया था कि मनुष्य की सुरक्षा उसके ज्ञान और चारित्र होते हैं, जाति और कुल से नहीं। तब मुनि ने उनको उपदेश देना उचित समझा और हिंसात्मक यज्ञ की निरर्थकता सिद्ध करते हुए जो कहा वह भगवान महावीर ने इस प्रकार फरमाया है –

किं माहणा! जोइसमारभंता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा?।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति।।38।।

भावार्थ – ''हे ब्राह्मणो! तुम यज्ञ में ज्योति (अग्नि) का समारंभ करते हुए क्या बाहर के जल से शुद्धि की चाह कर रहे हो? क्योंकि जो बाहर से शुद्धि को खोजते हैं, उन्हें कुशल व्यक्ति (तत्त्वज्ञ पुरुष, जिन भगवान) सुदृष्ट-सम्यग्दृष्टि संपन्न नहीं कहते हैं।''

सोहिं बहिया – बाहर से शुद्धि। शुद्धि दो प्रकार की होती हैं –

(i) द्रव्य शुद्धि – मलिन वस्त्रों को धोना, जल के स्पर्श से शुद्ध होना।

(ii) भाव शुद्धि – तप, संयम आदि द्वारा आठ प्रकार के कर्म मलों को प्रक्षालन कर शुद्ध होना।

सुदिट्ठं – 'सु-इष्ट' – यह श्रेष्ठ यज्ञ है।

कुसला – जो कुश – घास को काटता है। यहाँ 'कुशल' का अर्थ कर्मबंधन को काटने वाला किया गया है।

इस गाथा में मुनि का आशय है – (1) जल से शुद्धि केवल शारीरिक शुद्धि की संभावना है। शरीर तो मल-मूल आदि अशुचि का भंडार है। उसकी शुद्धि शरीर पर जल डालने से नहीं होगी। अतः बाह्य शुद्धि से आंतरिक शुद्धि संभव नहीं है। (2) मरने के बाद शरीर तो सड़-गल जाएगा, आत्मा ही साथ जाएगी। अतः शरीर की शुद्धि से आत्मा की शुद्धि नहीं होती। अशुद्ध आत्मा को बार-बार जन्म-मरण करना पड़ता है। इसलिए मोक्ष अभिलाषी पुरुष के लिए आत्मशुद्धि का मार्ग ही उचित है।

कुसं च जूवं तण-कट्ठ-मग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसंता।
पाणाइं भूयाइं विहेडयंता, भुज्जो वि मंदा! पकरेह पावं।।39।।

भावार्थ – कुश-डाभ, थूप-यज्ञ स्तंभ, तृण-घास, काष्ठ और अग्नि का संचय करते हो तथा प्रातःकाल और सायंकाल जल का स्पर्श करते हुए तुम मंदबुद्धि जन इन सभी क्रियाओं में प्राणों (द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय प्राणियों), भूतों (वनस्पतिकाय, पृथ्वीकाय आदि एकेंद्रिय) का विविध प्रकार से उपमर्दन करते हुए बार-बार पापकर्म करते हों।

इस गाथा द्वारा मुनि को ब्राह्मणों को पूछने का आशय है – यज्ञ में अग्निकाय के जीवों का तथा तृण रूप वनस्पति जीवों का विनाश होता है। जीवों की विविध रीति से हिंसा होती है, इसे जानते हुए भी इन कर्तव्यों का परित्याग नहीं करते और इन्हीं में रत रहकर पाप को बाँधते हैं। क्या ऐसे हिंसाजन्य पापकर्म का संग्रह करते हुए कोई धार्मिक यज्ञ कर सकता है? यदि अग्नि से आत्मशुद्धि मानते हैं तो इसमें शरीर की, मन की या आत्मा की, किसकी शुद्धि होती है? क्या हिंसा से आत्मिक शुद्धि की अभिलाषा पूर्ण होना संभव है? नहीं, क्योंकि प्राणी वध से आत्मशुद्धि के बदले और अधिक पापकर्म-मलरूप अशुद्धि का बंध होता है? अतः कर्मबंधन करने वाला जीव सुदृष्टि युक्त कैसे हो सकता है? जिस क्रिया से कर्ममल नष्ट होते हैं, ऐसी शुद्धि से ही वास्तविक आत्मिक शुद्धि है। ऐसी शुद्धि को ही तात्त्विकी शुद्धि मानते हैं।

–क्रमशः

सेवा का कठोरतम व्रत

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 जनवरी 2025 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

कई लोग मिलकर महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी के पास प्रार्थना करने आए। महासती जी को उन साध्वी जी की हालत समझते देर न लगी। उन्होंने सोचा— ''चुन्ना जी आर्या की प्रकृति तो ऐसी ही है, पर हमें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।'' महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी उस समय साध्वी श्री आनंद कुमारी जी को साथ में लेकर उठ खड़ी हुईं और संघ व समाज के अनेक लोगों के साथ चुन्ना जी आर्या के स्थान पर आईं। आपने उनकी आकृति वगैरह देखी और कहा- ''इनकी तबीयत तो काफी खराब हो गई है। आपने हमको पहले क्यों नहीं बतलाया? पहले आकर सँभाल लेतीं। खैर, जो हुआ सो हुआ। अब इन्हें जरा बुलाकर देखूँ तो सही कि इनकी तबीयत में क्या जँचता है।'' साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने आवाज लगाई— ''चुन्ना जी! चुन्ना जी!'' पर चुन्ना जी तो बोली ही नहीं। अब भी थोड़ी अकड़ थीं। रस्सी के जल जाने पर भी जैसे उसका बट बना रहता है उसी तरह तपोशक्ति रूप रस्सी जल गई थी, पर अभिमान रूप अकड़ उसमें शेष थी।

भाइयों ने उनसे कहा भी कि देखो, आपके पास तो महाभाग्यशालिनी सती जी पधारी हैं और आप मुख से बोलती भी नहीं। जरा मुँह खोलकर इनको स्थिति तो बताएँ। पर उन्होंने अपनी आवाज मुँह में ही दबाए रखी। नहीं बोली, सो नहीं ही बोली।

उक्त सती जी के न बोलने पर भी महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी एवं साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के मन में किसी तरह का भी दुर्भाव नहीं था। उन्होंने विचार किया कि इस अशक्ति की हालत में इन्हें कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। आप झटपट गईं और कहीं से प्रासुक जल लाकर दस्त से भरे उनके कपड़े साफ किए और उनका बिछौना ठीक किया। लगातार दस्तों के कारण इतनी दुर्गंध फैल रही थी कि पास में खड़े हुए आदमी का ठहरना कठिन हो गया, पर महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी एवं साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने अग्लान-भाव से उनकी सेवा की। धैर्यधुरंधरा साध्वी श्री आनंद कुमारी जी अपनी पूजनीया महासती जी को ऐसे छोटे काम में कब हाथ डालने देतीं! आपने श्रद्धेय

महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी से आग्रह करके वह काम अपने हाथ में लिया और उठती हुई दुर्गंध की परवाह न करके महासती चुन्ना जी के कपड़े वगैरह साफ किए। सेवा करते समय नाक-भौं सिकोड़ना क्या होता है, यह मानो आप जानती ही नहीं थीं। यह है सच्ची सेवा!

मुनि-नंदीषेण ने ऐसी ही कठोर-सेवावृत्ति अपनाकर अपना अमूल्य मानव जन्म सार्थक कर लिया था और उसी के प्रभाव से वे वासुदेव बने थे। सेवा का काम तलवार की धार से भी तीक्ष्ण है। कुशल नटों के लिए कदाचित् तलवार की धार पर चलना सरल हो, पर सेवा की तीव्र धार पर चलना तो बड़ा ही कठिन है। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी की इस सेवावृत्ति को हम सौ बार धन्यवाद देते हैं।

उक्त सती जी की सेवा करते हुए आप दोनों को लगभग 25 दिन हो गए। तबीयत दिनोदिन बिगड़ती जा रही थी। वे सती जी मरणासन्न हो गई थीं और इस भयंकर रोग के हमले ने अत्यंत परेशानी पैदा कर रखी थी। दोनों महाभाग्यवती महासतियों ने विचार किया कि अब इनके जीवन की थोड़ी ही घड़ियाँ शेष हैं। न मालूम कब मृत्यु आ जाए! इससे पहले ही सावधान होकर हमें इन्हें कुछ त्याग का पाथेय पल्ले बँधा देना चाहिए, ताकि इनका जीवन कुछ तो सुधरे।

दैवयोग से तपस्वी श्री चतुर्भुज जी महाराज उन दिनों सोजत में ही विराज रहे थे। वे अनुभवी और प्रवीण थे। उन्हें बुलाया गया। वे आए और रुग्ण सती जी की आकृति देखकर कहा—''लक्षण देखते हुए मालूम होता है कि इनके जीवन के थोड़े ही क्षण बाकी हैं। अवसर निकट आ गया है। इनकी दवा बंद करके अनशन (संथारा) करा दो।''

महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. एवं साध्वी श्री छोटी आनन्द कुमारी जी म.सा. ने सब लोगों की राय लेकर उनकी दवा बंद कर दी और यथावसर अनशन भी करा दिया।

उनके अनशन (संथारा) लेने के समाचार सारे शहर में बिजली की तरह फैल गए और झुंड के झुंड श्रावक-श्राविकाएँ दर्शन के लिए उमड़ पड़े। उक्त आर्या जी की प्रकृति में इस समय भी काफी विषमता थी। उन्हें अपने सिवाय किसी दूसरे का बोलना, चलना सुहाता नहीं था। जिंदगी किनारे लगी हुई है, शरीर में भयंकर व्याधि है, फिर भी हाय रे प्रकृति! शांति देवी से तो मानो सती जी का कई जन्मों का वैर था। वह तो पास में फटकती ही नहीं थी। जो भी बहनें दर्शन करने आतीं, उन्हें कहने लगतीं—''निकलो यहाँ से, यहाँ मेरा दर्शन करने आई तो ठीक नहीं रहेगा।'' इधर तो क्रोध की पुतली चुन्ना जी आर्या अनशन किए हुए थीं, तो उधर शांतमूर्ति साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. बाहर ही सब बहनों को मांगलिक सुना रही थीं। एक ही जगह दो प्रकार के दृश्य देखकर लोग आश्चर्यान्वित हो रहे थे।

अनशन कराने पर दवा छूट गई, जिससे खूनी दस्त लगने लगे। दिन-रात में तीस-तीस चालीस-चालीस का ठिकाना नहीं था। फिर भी धन्य हैं ऐसी सेवामूर्तियों को जो अपने कर्तव्य से जरा भी विचलित नहीं हुईं और पवित्र भाव से उनकी सेवा करती रहीं।

रात को उपाश्रय के बाहर ही दुकानों पर सोने वाले लोगों ने यह हालत देखी तो परस्पर कहने लगे—''धन्य हैं इन सतियों को, ये तो साक्षात् सेवा की देवियाँ हैं! ऐसी सेवा तो चिरसंगिनी और विवाहित पत्नी भी नहीं कर सकती। वह भी ऐसी कठिन वेला में मुख मोड़कर चली जाती है या कोई-न-कोई बहाना बना लेती है। पर इन साध्वियों का जीवन तो देखो! ये तो सेवा करके पुण्य की राशि लूट रही हैं। अपने चिरसंचित कर्मों को झाड़ रही हैं।''

भाद्रपद माह की वर्षा से गली में कीचड़ ही कीचड़ हो गया था। चलते समय पैर फिसलने का डर था। बीच-बीच में बौछारें अलग से तंग कर रही थीं, फिर भी सेवा की कठोर राह पर चलने वाली साहसिन साध्वी

रात्रि में परठने के लिए बीस-बीस तीस-तीस चक्कर लगा रही थीं। तन-मन से सेवा कर रही थीं। क्या आप बता सकते हैं, ये सेवावर्तिनी कौन हैं? संभव है आपका हृदय कुछ निर्णय न करे, मैं ही बता दूँ। ये हैं अपने महान साध्य पर दृढ़तापूर्वक चलने वाली साध्वी छोटी आनंद कुमारी जी।

आपका उद्देश्य कितना महान है! कहाँ तो उक्त सती जी का साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. आदि से इतना विरोध व संघर्ष और कहाँ ये ही महासतियाँ जी उनकी सेवा में तत्पर हैं! अपकार के बदले उपकार। जहर के बदले अमृत। धन्य हैं साध्वी श्री आनंद कुमारी जी को, ऐसी अलौकिक हृदया तो आप ही हैं।

उक्त सती जी का संथारा (अनशन) 27 दिन में पूर्ण हुआ। श्रावकों ने उनकी डोलयात्रा निकाली और अंतिम संस्कार किया। सोजत संघ ने आप दोनों महासतियों बड़ी एवं छोटी आनंद कुमारी जी की सेवा का अभिनंदन किया। आपकी गुणगाथाएँ प्रत्येक सोजत निवासी के मुख पर गाई जाने लगीं। महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. व छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. ने लोगों से कहा—''भाइयो! इसमें हमारी प्रशंसा जैसी कोई बात नहीं है। हमने तो अपना कर्तव्य निभाया है। सेवा के ऐसे प्रसंग तो ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते। हमने उन सती जी की सेवा की, उसके बदले हमारी प्रशंसा करके आप सेवा का मूल्य मत घटाओ। मानव जीवन का उद्देश्य यही है कि वह अपने को आगे बढ़ाए।''

सोजत संघ के अग्रगण्य लोगों ने आपसे बहुत से त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। अब तो उनके घर में ही कामधेनु थी। वे जब चाहें तब जिनवाणी रूप दूध का दोहन कर लेते। सोजत संघ को महाभाग्यशालिनी बड़ी आनंद कुमारी जी एवं छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. जैसी साध्वियों का सुयोग मिल गया था। अब वे अन्यत्र चातुर्मास की याचना करने क्यों जाएँ? संवत् 1962 से 1971 तक लगातार 10 चातुर्मास छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. को साध्वी श्री केशर कुमारी जी म.सा. की वृद्धावस्था के कारण सोजत में ही करने पड़े।

आप पूछ बैठेंगे कि चातुर्मास करने के लिए क्या दूसरी जगह नहीं थी? यदि थी तो फिर एक ही स्थान पर क्यों?

मैं पहले बता चुका हूँ कि साधु जीवन में तपस्या, उपकार आदि से बढ़कर काम सेवा का है। उसका नंबर सबसे पहले है। इसी कारण महासती जी की सेवा में रहकर आपने 10 चातुर्मास सोजत किए। आप भी नवयुवती थीं, उपकार करने की मन में उमंग थी, विकास करने को मन लालायित था। किसे अपनी जवानी में नए-नए देशों में भ्रमण करना और धर्म-प्रचार करना पसंद न होगा? पर छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. ने इन सब बातों को गौण कर दिया। उन्होंने सेवा को ही अटल ध्येय बना लिया। मन को मारकर रहना कितना दु:साध्य कार्य है!

आप पहले पढ़ चुके हैं कि साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. की जीवन-यात्रा का प्रारंभ सोजत से हुआ था। बचपन के वे सुंदर दिन, शलराज जी मूथा का स्नेह एवं सद्भावना से भरा-पूरा घर, अनन्य स्नेह, एक के बाद एक जीवन की कड़ियाँ सोजत से संबंध रखती हैं। जीवन का वास्तविक मोड़ यहीं प्राप्त हुआ। वैराग्य का बीज यहीं बोया गया और अंकुर भी यहीं लगा। आनंद कुमारी जी म.सा. के साध्वी जीवन का प्रभात यहीं हुआ था। वे इस सोजत को भूलें तो कैसे भूलें! सोजत की भूमि आपके लिए स्वर्णभूमि है। मैं समझता हूँ इसका ऋण 10 चातुर्मासों का लाभ देकर तो अवश्य उतर सकेगा। चातुर्मास तो यहाँ 10 ही किए, पर बीच-बीच में शेषकाल में भी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी का दौरा कई क्षेत्रों में लगा रहा।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमश:

गुरुभक्ति

गुरुचरणों में गुरुभक्ति का अर्घ्य

जैसा कि हम सभी को विदित ही है कि हम हमारे आराध्य, सशक्त चिंतक, छहकाय के जीवों को अभयदान प्रदान करने वाले, दृढ़ संयमधारी, परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का स्वर्णिम दीक्षा वर्ष 'महत्तम शिखर महोत्सव' के रूप में मना रहे हैं। इस विशाल यज्ञ में जैन एवं जैनेतर जनों ने यथाशक्य अपनी ओर से आहुति प्रदान कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया है। इनमें से ही कुछ श्रावक-श्राविकाओं के आचार्यदेव के प्रति मनोभाव गुणगान स्वरूप यहाँ अंकित कर रहे हैं।

विशाल गुण शृंखला का गान शक्य नहीं

किसी भी महान आचार्य की विशेषताओं का गुणगान करना, उन गुणों को शब्दों में पिरोना किसी साधारण मनुष्य के सामर्थ्य से बाहर की बात है। जैन धर्म के स्थानकवासी परंपरा के आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की गौरवशाली पाट-परंपरा को नानेश पट्टधर परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. पावन कर रहे हैं।

आचार्य भगवन् के दृढ़ संयमी जीवन को निकट से देखने का परमसौभाग्य प्राप्त हुआ। आपश्री का जीवन दया, करुणा, आत्मीयता, सरलता, वात्सल्यता जैसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण है। संघ, समाज, राष्ट्र व विश्व को सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, प्रेम, दया, सदाचार, सहिष्णुता का पावन संदेश देते हुए आपश्री के निष्पक्ष चिंतन सभी के लिए समान रूप से हैं। वंदनीय, पूजनीय वे ही विशिष्ट आत्माएँ होती हैं, जिनके सान्निध्य में आकर जीवन का आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है। आपश्री के सान्निध्य में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की यह भावना बनी रहती है कि गुरुदेव एक बार नजर उठाकर देख लें तो हमारा सौभाग्य फलित हो जाएगा। आचार्यदेव

का ऐसा अतिशय शांति की अनुभूति देता है।

आचार्य भगवन् के जीवन में कथनी-करनी एकसमान है। आपश्री जी ने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ को अपने खून-पसीने से सींचा है। आपके सान्निध्य में अनेकानेक भव्यात्माओं ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर संसार सागर से तिरने का मार्ग प्राप्त किया है। न केवल साधु-साध्वी वर्ग अपितु श्रावक-श्राविकाओं के जीवन विकास हेतु भी आपने अनेक आयाम प्रदान कर समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं हिंसात्मक जीवन का शमन करने का अभिनव कार्य किया है।

वर्ष 2001 में आचार्य भगवन् का चातुर्मास गंगाशहर-भीनासर में गतिमान था। हम 4-5 श्रावक मंगलदेश पधारने की विनती लेकर गुरुचरणों में उपस्थित हुए। हमारी विनती पर भगवन् ने सिर्फ इतना ही फरमाया कि 'आपकी विनती झोली में है'। चातुर्मास पश्चात् आपश्री का देशनोक की दिशा में विहार हो गया तो हमें ऐसा लगा जैसे मंगलदेश की ओर पधारना संभव नहीं होगा। लेकिन आप महामानव की कृपा अपरंपार है। आचार्य भगवन् देशनोक से पुनः गंगाशहर पधारे और गुरुदेव का मंगलदेश की ओर विहार हो गया। यह मंगलदेश क्षेत्र पाकिस्तान बॉर्डर पर स्थित है। उस समय सीमा पर करगिल युद्ध चल रहा था। तनाव की भयंकर स्थिति थी और सर्दी का प्रकोप भी चल रहा था। आचार्यदेव खाजूवाला होते हुए घड़साना मंडी पधारे। वहाँ बीकानेर के श्रावकगणों ने निवेदन किया कि युद्ध का माहौल होने के कारण यह क्षेत्र विचरण हेतु सुरक्षित नहीं है। अतः पुनः बीकानेर पधारने की कृपा करें।

मैंने पुनः गुरुचरणों में निवेदन किया तो आचार्य भगवन् ने फरमाया कि इस क्षेत्र में मौसम अनुसार धुँध का प्रकोप खूब रहता है। नवदीक्षित संत साथ में हैं। इनके ज्ञान-ध्यान सीखने में मौसम की अनुकूलता नहीं बैठ रही है। हमने मौसम संबंधी संपूर्ण जानकारी गुरुचरणों में रखी और विहार से पूर्व पुनः गुरुचरणों में निवेदन किया तो भगवन् ने एक वाक्य फरमाया- **'बाणियो पग पहचान लेवे हैं'**। हम लोग बीकानेर एवं अनूपगढ़ का मार्ग जहाँ अलग होता है वहाँ जाकर खड़े हो गए और भगवन् ने महत्ती कृपा कर मंगलदेश की ओर चरण बढ़ा दिए। उस समय आचार्यदेव ने भटिंडा (पंजाब) तक पधारकर उस भूमि को पावन किया। उस समय मंगलदेश में साधुमार्गी घरों की संख्या मात्र 15 ही थी। श्रीगंगानगर में 4 दीक्षाओं का ऐतिहासिक प्रसंग उपस्थित हुआ। 2002 का होली चातुर्मास भटिंडा में एवं भगवान महावीर जयंती का प्रसंग पीलीबंगा क्षेत्र में संपन्न हुआ। यह होती है गुरुकृपा!

– पूनमचंद सुराणा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बीकानेर-मारवाड़ अंचल

प्रेरक व्यक्तित्व के धनी

आध्यात्मिक पुरुष, ज्योतिपुँज परम श्रद्धेय आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. प्रेरक एवं महत्तम व्यक्तित्व के धनी हैं। हीरो में कोहिनूर हीरा, तारों में ध्रुव तारा जैसे विशिष्ट मेरे आराध्यदेव हैं। इस पंचम आरे में जहाँ सामान्य नैतिक सिद्धांतों पर चलना अतिदुष्कर लगता है वहाँ भगवान महावीर के बताए हुए दृढ़ संयम के मार्ग पर बिना किसी समझौते के सिद्धांतों पर दृढ़ रहते हुए चलना मैंने आचार्य भगवन् के जीवन में प्रत्यक्ष देखा है। जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे आचार्यदेव ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं सहित सकल संघ व समाज को ज्ञानवान, क्रियावान एवं संस्कारवान बनाने हेतु अनेक आयाम फरमाकर अपनी दृढ़ चिंतनशक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत किया है। आराध्य देव को अगणित भावभरा वंदन-अभिनंदन करते हुए आपश्री के 50वें दीक्षा दिवस पर हम सभी उनके सुस्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए यह भावना भाते हैं कि आपश्री संघ की खूब जाहोजलाली करते हुए इसे अनंत ऊँचाइयों पर ले जाएं। गुरुवर स्वस्थ रहें, अलमस्त रहें।

– विनोद कुमार नाहर (श्रेणिक)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जयपुर-ब्यावर अंचल

युगद्रष्टा आचार्य श्री रामेश

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने आचार्य बनने के बाद प्रथम चातुर्मास जयपुर में करने के पश्चात् लगभग 40 किमी. का विहार कर चाकसू पधारे, जहाँ एक मकान में विराजना हुआ। हम लोग टोंक से दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्य भगवन् प्रतिलेखन कार्य में व्यस्त थे। उसी समय मेरी नजर भगवन् के एक कागज के डिब्बे पर पड़ी, जिसमें आपश्री अपनी डायरी आदि लिखने की सामग्री रखते थे। उस पर लिखा था, **''हमेशा डरते रहने से अच्छा है, मुश्किल का एक बार सामना कर लिया जाए।''** उन शब्दों ने मुझ में एक नवीन जोश का संचार किया। क्योंकि उस समय मेरा पड़ोसी के साथ मकान के किसी मामले में विवाद चल रहा था और वह कुछ बदमाशों के साथ मुझे धमकाता और मनमानी कर रहा था। हम सभी परिवारजन तनाव में थे। उन शब्दों से मेरे मन का भ्रम समाप्त हो गया और मैंने कानूनी लड़ाई लड़कर उस समस्या पर विजय प्राप्त की।

वर्ष 2022 में आचार्य भगवन् केकड़ी से विहार करके बिजयनगर पधारे और संतवृंद के साथ स्थानक भवन में विराज रहे थे। शाम को लगभग 4.30 बजे का समय था। संत मुनिराजों को उनकी आवश्यकता अनुरूप थान में से वस्त्र फाड़कर वितरित कर रहे थे। उसी समय भगवन् के मुँह से 'ओह!' शब्द की आवाज सुनाई दी। सामने खड़े संत-मुनिराज ने कहा कि भगवन् ये तो हमारे काम आ जाएगा। तब भगवन् का उत्तर था कि बचा हुआ कपड़ा भी गृहस्थ के लिए अनुपयोगी नहीं रहना चाहिए। उन्होंने फरमाया कि कोई चीज रुपए की जगह चवन्नी की रह जाएगी तो उसका क्या फायदा? ऐसी यतना और विवेक से सराबोर संयमी जीवन है हमारे आचार्य भगवन् का।

एक बार मुझे जुकाम होने के कारण प्रातः उठते ही होम्योपैथी दवाई मुँह में डाल लेता था, परंतु मैं नवकारसी करना चाहता था। टोंक से विहार के समय इस हेतु मैंने जिज्ञासा-समाधान हेतु आचार्य भगवन् से प्रश्न किया कि क्या दवाई का आगार रखकर नवकारसी की जा सकती है? तो भगवन् ने फरमाया कि नवकारसी करना जरूरी है क्या? मैं सोच में पड़ गया कि भगवन् क्या संदेश देना चाहते हैं? कुछ विचार कर मैंने उसी समय से नवकारसी करना शुरू कर दिया और मुझे दवाई की आवश्यकता भी समाप्त हो गई। ऐसे शासन नायक को बारंबार नमन है। आप दीर्घायु हों, निकट भव में मोक्षगामी बनें, यही शुभेच्छा है।

– सुनील बम्ब
संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

शिखर सुशोभित

देशनोक की पावन धरा पर सद्गृहस्थ नेमीचंद जी भूरा के घर-आँगन में रत्नकुक्षिधारिणी माँ गवरा ने सिंह के समान तेजस्वी बालक को जनम देकर कुल, वंश, ग्राम, शहर एवं संपूर्ण राष्ट्र को यशस्वी बना दिया। बालक **'राम'** ने बाल्यकाल से ही संयम की ओर दृढ़तर होते हुए अनाथी मुनि के पथ पर कदम बढ़ा दिया। दिखावे एवं प्रदर्शन से दूर आपश्री का जीवन स्पष्ट एवं खुली किताब जैसा प्रतीत होता है। आपश्री की उभयमुखी दृष्टि एवं तलस्पर्शी आगमज्ञान को देखकर आपको **'परमागम रहस्यज्ञाता'** के अलंकरण से संबोधित किया गया। वर्तमान में आप हुक्मसंघ के 82वें पट्टधर के रूप में दिव्यालोक में अपने अतिशय से धर्म की विशिष्ट छटा प्रभाषित कर रहे हैं।

हुक्मसंघ के आठ पूर्वाचार्यों द्वारा सिंचित् इस नंदनवन रूपी उपवन को आपश्री जी अपने नित नवीन चिंतनों एवं आयामों को शिखर पर आरोहित करने का लक्ष्य सिद्ध करने की ओर गतिशील हैं। आप इस युग के एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं। कुंदन के समान खिला आपश्री का जीवन संयम एवं तप की स्वर्णिम आभा से दैदीप्यमान है। हजारों गुरुभक्तों की अनन्य भक्ति व श्रद्धा के दिव्य केंद्र होने पर भी आप सहज, सरल एवं निरभिमानता के अनुभूत उपदेशक हैं।

इस मनुष्य जीवन में ऐसे गुरुवर का सान्निध्य पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मैं सौभाग्यशाली हूँ जो आपश्री जी के 50वें दीक्षा वर्ष को मनाकर अपने कर्मों की निर्जरा करने का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है। आपश्री जी के पावन चरणों में शत्-शत् वंदन-अभिवंदन।

– अजीत कांकरिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल

आचार्यश्री के गुणों की अनुभव संवेदना

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. आध्यात्मिक शक्ति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक हैं। आपके जीवन पर विचार मात्र से मन गहन आदर और श्रद्धा से भर जाता है। आपश्री का जीवन सादगी, अनुशासन और कठोर संयम की सच्ची मिसाल है, जिससे उन्होंने अनगिनत व्यक्तियों को अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। उनके उपदेश मात्र शब्द नहीं हैं, बल्कि क्रियाशीलता का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

गहन ज्ञान और अंतर्दृष्टि से अनुरंजित आचार्यश्री ने चतुर्विध संघ का सटीक मार्गदर्शन किया है। आपके प्रवचन श्रोताओं में आत्मनिरीक्षण एवं परिवर्तन की भावना जगाते हैं। आपश्री जी की पावन दृष्टि एवं गहन चिंतन से निकले विभिन्न आयाम व्यष्टि एवं समष्टि के जीवन को सार्थक रहे हैं। आचार्य श्री रामेश ने गुरु रूप में हमें यह सिखाया है कि चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न आ जाएँ, हमें उन पर सजगता से विजय प्राप्त करनी है। यदि हम गुरु के प्रति समर्पण भाव रखते हुए जीवन को सच्चे धर्म के मार्ग पर अग्रसर करते हैं तो हम कभी पराजित नहीं हो सकते।

आपश्री विरले आचार्य हैं, जिन्होंने जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु देश के सुदूर-दुरूह क्षेत्रों में विचरण कर **'तिन्नाणं-तारयाणं'** का सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपश्री जी स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और हम भक्तों पर सदैव वरदहस्त बनाए रखें।

– राजेश रांका, हैदराबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
समता युवा संघ, कर्नाटक-आंध्रप्रदेश-तेलंगाना अंचल

ऊर्जा पुँज मेरे गुरुवर

राम से ही ऊर्जा है, राम से ही संवेदना है।
राम से ही मुस्कान है, राम से ही संस्कार है।।
राम से ही उत्सव है, राम ही महोत्सव हैं।
और हम सभी मनाने जा रहे,
आचार्य श्री रामेश का दीक्षा स्वर्ण महोत्सव हैं।।

आचार्य भगवन् का जीवन ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप से परिपूर्ण कुंभ के समान है। महापुरुषों के जीवन में एक-दो नहीं अपितु अनेकानेक गुण होते हैं। उन गुणों में से कोई एक गुण भी यदि हम अपने जीवन में अपना लें तो हमारा जीवन धन्य हो जाता है।

आचार्य श्री रामेश का व्यक्तित्व अद्भुत है। आपश्री जी के दर्शन मात्र से परमशांति मिलती है। आपके वचनों में समस्त समस्याओं का समाधान है तो आपके आभामंडल का तेज मानो समस्त विकारों का नाश करने वाला है। आपकी एक दृष्टि रोम-रोम में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित कर देती है। आपका अलौकिक अद्भुत व्यक्तित्व 50 वर्षों की संयम यात्रा का प्रतिफल है। आपश्री जी ने अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में सदैव समता भाव रखा। वर्तमान को श्रेष्ठ बनाते हुए आप एक-एक सधा हुआ कदम भविष्य की ओर रखते गए। ऐसे महान आचार्यश्री का वरदहस्त किसी संघ पर होना उस संघ के सदस्यों की पुण्यवानी है। आपश्री जी का चिंतन जनहित, संघहित व राष्ट्रहित में होता है। आप दिव्य विभूति द्वारा शिक्षित व दीक्षित साधु-साध्वी जी दुनिया के किसी भी कोने में जाएँ, वहाँ शुद्ध ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अनूठी छाप छोड़ते हैं। आपश्री साधु-साध्वीवृंद के साथ श्रावक-श्राविकाओं को भी ज्ञान, ध्यान, तप के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करते हैं। आचार्य भगवन् प्रसिद्धि से दूर रहकर जन-जन के कल्याण की भावना से नित नए आयाम प्रदान कर भक्तों का जीवन त्यागमय सुख की ओर बढ़ा रहे हैं। ऐसे साधना शिखर पुरुष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा के चरणों में बारंबार वंदन है।

– मुकुल राखेचा, सूरत

भक्तों के अधिकार के प्रति सजगता

26 दिसंबर 2021 का प्रसंग है। प्रवचन के तुरंत बाद परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का पुष्कर से विहार होकर सौभाग्य शशि लोढ़ा समता भवन, अजमेर में मंगल पदार्पण हुआ। तत्पश्चात् लघु प्रवचन व गोचरी आदि की वजह से दोपहर बाद की मांगलिक में थोड़ा विलंब था। तब तक कुछ महासतियाँ जी व श्रावक-श्राविकाएँ गुरुभक्ति गीतों से समता भवन प्रांगण को गुंजायमान कर रहे थे। तभी गुरुदेव पधारे और सर्वप्रथम सभी द्वारा की जा रही भक्ति में बाधा उपस्थित हो जाने से क्षमा के भाव अभिव्यक्त किए।

मैं चिंतन करने लगा कि जो स्वयं अपने गुणगान, स्तुति आदि की जरा भी चाह नहीं रखते, वे दूसरी तरफ भक्तों के भक्ति के अधिकार के प्रति कितने सजग हैं। सभी भक्तगण इस अभिव्यक्ति से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सके। धन्य ऐसे भक्तगण, जिनको महत्तम गुरुवर का सान्निध्य मिल रहा है।

– गणेशलाल डूंगरवाल, चित्तौड़गढ़

महाव्रत धारी मेरे गुरुवर

जहाँ-तहाँ शीश झुकाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ मनड़ा डिगाना नहीं कोई रे।।
मेरे गुरुवर अरिहंत देवा,
अरिहंत देवा मेरे गुरुवर,
अन्य देव मन में बिठाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ... ।।1।।
समकित हीरा हाथ में आया,
हाथ में आया समकित हीरा,
अनमोल इसको गँवाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ...।।2।।
मेरे गुरुवर महाव्रतधारी,
महाव्रतधारी मेरे गुरुवर,
कुगुरु पे दृष्टि टिकाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ...।।3।।
सम्यक् श्रद्धा चेतन रखना,
चेतन रखना सम्यक् श्रद्धा,
दृढ़ता में न्यूनता लाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ...।।4।।
महावीर कहते गौतम आओ,
गौतम आओ महावीर कहते,
शंका में आत्मा फँसाना नहीं कोई रे।
जहाँ-तहाँ...।।5।।

– कमला देवी सांड, देशनोक

महत्तम चरण को सार्थक करें

अभिरामम् एवं महत्तम चरण के माध्यम से दिव्य युगपुरुष, वीर शासन के महान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की स्वर्णिम जीवन यात्रा को नजदीक से जानने का अवसर मिला। इनसे आपश्री के जीवन के बहुत सारे अनकहे, अनसुने एवं अनछुए पहलुओं को जाना। महत्तम चरण के अंतर्गत प्रतिदिन एक विगय त्याग, चौविहार व पक्की नवकारसी आदि तप से संयमित एवं मर्यादित जीवन जीने की कला का प्रादुर्भाव हुआ। महत्तम महोत्सव मनाने का एक ही उद्देश्य है कि तप-त्याग की ज्योत जीवनपर्यंत प्रकाशित रहे।

– रीना कुकड़ा, चेन्नई
(राष्ट्रीय मंत्री, महिला समिति – तमिलनाडु अंचल)

सबल संघ नेतृत्व का संयमोत्सव

संयम दिवस पर भाव मंगल से भरा संगीत।
सुवर्ण दीक्षा महोत्सव की खुशियाँ शब्दातीत।

व्यक्ति अपने समर्पण, संकल्प और साधना से किस मुकाम तक पहुँच जाता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है आचार्य श्री रामेश का संयमी जीवन।

व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया लगभग 73 वर्ष पूर्व मरुस्थल की धरा पर बीज के रूप में अंकुरित हुई, जो आज विशाल कल्पवृक्ष के रूप में परिणत है। बचपन में किए गए त्याग-प्रत्याख्यान, समय की पाबंदी, नियमों में दृढ़ता, बुद्धि की विलक्षणता, बालवय में व्यापारिक दक्षता, शारीरिक व्याधि में अनाथी मुनि के जीवन को जानकर संकल्पित होना तथा रोगमुक्त होकर संयमी जीवन का अभिलाषी बन जाना आदि प्रसंगों से पूर्ण अकिंचनता प्रकट होती है। बचपन से ही वृद्धिगत धार्मिक संस्कारों और दिव्य दर्शनों ने वैराग्य में आहुति का काम किया। ज्योति जली और मन मचल उठा योग्य गुरु के चरणों में समर्पण के लिए।

चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानेश से चारित्रधन प्राप्त कर तप और ज्ञान का अवलंबन लेकर आत्मबोधक बनने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। आपके जीवन का उद्देश्य मात्र सांसारिकता का त्याग नहीं था, बल्कि स्वयं को बदलना था। आगमों के अध्ययन की निर्दिष्टता में गुरु और शिष्य दोनों की संपूर्ण शक्ति तत्पर हुई। विलक्षण मेधा से आपश्री ने शास्त्रों की गहराइयों तक पहुँचकर अंतर्मुखी चेतना से आंतरिक तत्त्वों का स्पर्श किया। आपके नेतृत्व में भगवान महावीर की परंपरा तथा हुक्मसंघ का गौरव और अधिक उज्ज्वल एवं समृद्ध बन रहा है।

आगमसम्मत क्रियाओं का परिपूर्ण पालन करने वाले आचार्य श्री रामेश इस सदी के महान आचार्य हैं। साधना के चरमोत्कर्ष तक पहुँचने के लिए आप हर पल सजगता के साथ प्रयत्नशील हैं। अल्पनिद्रा, अधिक स्वाध्याय और चिंतन-मनन आपके स्वभाव की सहजता है। प्रशस्त, मुक्त चिंतन और विवेकपूर्ण शब्द सौष्ठव के माध्यम से गूढ़ ग्रंथियों को सुलझाने में आपकी विशेष क्षमता है।

आचार्य श्री नानेश से आपने जो पाया उसे सहस्रगुणित करने के लिए आप अपना पूरा जीवन झोंक रहे हैं। व्यसनमुक्ति, उत्क्रांति जैसे अनेक आयाम संपूर्ण मानव जाति के लिए उपकारी बन गए हैं। जो धरोहर आचार्य श्री नानेश ने हमको सौंपी है, हम उसके लिए पूर्ण समर्पित रहें, यही हमारा दायित्व है।

धवलता का बाना, तेजस्वी-कांतियुक्त आभामंडल, यत्नापूर्वक गंधहस्ती सी चाल, समता की साकार प्रतिमा, सादगीमय ओजभरा विलक्षण व्यक्तित्व, जिसे भौतिकता की परछाई छू भी नहीं पाती। आपके दर्शन मात्र से जैन समाज ही नहीं जैनेतर समाज भी पावन हो जाता है। न तंबू, न कनातें, न माइक, न लाइट, न कारों का काफिला और न ही अखबारों की सुर्खियाँ, फिर भी शांति के याचक आपके दर पर खिंचे चले आते हैं। भगवान महावीर के शासन को आलोकित करने एवं उनके उपदेशों को दिग्दिगंत में व्याप्त करने के लिए अनेक मुमुक्षु आत्माएँ आपके चरणों में समर्पित हो शासन की भव्य प्रभावना कर रही हैं तथा कई संयम लेने को आतुर हैं। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र के प्रतीक गुरु राम के मन में एक ही लक्ष्य है कि वीतराग वाणी के आलोक से स्वयं के साथ समूची सृष्टि को आलोकित करना।

ऐसे शासननायक को पाकर हम धन्यता का अनुभव कर रहे हैं। सुवर्ण दीक्षा महोत्सव पर एक ही तमन्ना है कि आपकी कीर्तिपताका नभ से हाथ मिलाएँ, हम सभी आपके आदेशों को गतिशील बनाएँ, संघ उत्कर्ष में आपका पुरुषार्थ बढ़ता रहे। संयम दिवस की पावन बेला पर अंतःकरण से नमन करते हुए शासनदेव से प्रार्थना है कि आचार्य भगवन् दीर्घायु हों, जयवंत हों तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उज्ज्वलता और प्रखरता के साथ युगों-युगों तक संपूर्ण विश्व को साधना की रश्मियों से प्रकाशित करते रहें।

– प्रतिभा सहलोत, निम्बाहेड़ा

महत्तम या प्रारंभ

महत्तम अर्थात् वो महानता, जिसका कभी अंत न हो, जो अनंत हो, शाश्वत हो, अविराम हो, अभिराम हो। *'प्रारंभ सही है तो अंत भी सही होगा'* गुरु रामेश के इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत महत्तम महोत्सव की लगन आज घर-घर में लगी हुई है। महापुरुषों की महानता में कोई संशय या अतिशयोक्ति नहीं है। महापुरुष आज भी महान है और भविष्य में भी रहेंगे।

महत्तम महोत्सव के लक्ष्यों को अपनाकर हम अपने जीवन में वो महानता हासिल करें, जो जीवन के अंतिम समय तक हमारा साथ दे। जीवन में आध्यात्मिक गुणों का विकास करके ही हम स्वयं को पहली पंक्ति में ला सकते हैं। सही मार्गदर्शन ही आपकी महानता का परिचय हो। महत्तम महोत्सव का आगाज और सफलता यही होगी कि प्रत्येक व्यक्ति जैन धर्म के मूल को समझ सके और जिनवाणी, वीतराग वाणी को आत्मसात कर सके।

– वंदना बाबेल, राजसमंद

स्वाध्याय आवश्यक

'अभिरामम्' पुस्तक वीरशासन के आचार्य श्री रामेश के पुरुष से महापुरुष बनने की जीवन यात्रा का हृदयस्पर्शी वर्णन है। यह पुस्तक आत्मखोज पर आधारित जीवन के जटिल प्रश्नों के सरल और अस्तित्ववादी चिंतन पर आधारित है, जिसकी भाषा सरल, प्रभावी और प्रामाणिक है। इसलिए इस पुस्तक का हर पृष्ठ जीवन को सन्मार्ग पर चलने की गारंटी देता है।

लेखक ने आचार्यश्री के जीवन सफर को गहराई से उकेरा है, जिसमें उनके संघर्ष और नेतृत्व का व्याख्यान है। आज की संचार क्रांति के दौर में जहाँ मनुष्य भ्रमित, कुंठित, चिंतित और पीड़ित है, वहीं 'अभिरामम्' पुस्तक का पठन करने से मानव सुपथ, तनावमुक्त और सच्चिदानंद जीवन जीने का समाधान मिलता है। यह पुस्तक मस्तिष्क का ईंधन ही नहीं आचरण की खुराक भी है। दिखावेमुक्त समाज के लिए उत्क्रांति, मानसिक रोगों के उन्मूलन हेतु आध्यात्मिक आरोग्यम्, त्यागवृत्ति, संस्कारों की समीक्षा, आचार विशुद्धि, व्यसनमुक्ति, गुणशील समाज की स्थापना के समस्त आयाम आज की ज्वलंत समस्याओं और व्याधियों के सफल उपचार हेतु आचरण योग्य हैं।

यह पुस्तक कहती है कि भूल जीवन की सबसे बड़ी शिक्षिका है। कार्य की अधिकता साधना का ही रूप है, उसे भार नहीं मानना चाहिए। हमारा मन अगर अशांत है तो कितनी ही साधना कर लो, सब व्यर्थ है। धर्म, मंदिर, उपाश्रय या किताब के अंदर नहीं होता, वह तो आचरण में झलकना चाहिए। धर्म की गूँज शरीर के प्रत्येक अंग से अनुगुंजित होनी चाहिए। प्रशंसा एवं यश की तृप्त लालसा ने जीवन के सुख और खुशी को अपने राक्षसी शिकंजे में दबोच लिया है। व्यक्ति का पुरुषार्थ स्वयं से समग्र की ओर होना चाहिए। 'अभिरामम्' पुस्तक में आचार्यश्री के कल्याणकारी वचन और चिंतन संघहित, राष्ट्रहित और जनहित के लिए प्रेरणादायी हैं। अगर हमें जीवन में आगे बढ़ना है, चुनौतियों को झेलने की क्षमता को और बढ़ाना है, असफल होने पर भी ऊर्जावान बने रहना है अथवा सोचने के तरीके को और तराशना है तो इस पुस्तक का नित्य स्वाध्याय करना चाहिए। जिससे न सिर्फ परमानंद की प्राप्ति की जा सकती है बल्कि मनुष्य जन्म का परम लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

– दिलीप गांधी, बेंगलुरु

देव, गुरु, धर्म को वंदन

गुरुवर की महिमा निराली है,
उनका मन चंदन की डाली है।
हम फूल हैं उनके उपवन के,
वे इस उपवन के माली हैं।।

सांसारिक प्राणियों की चाह आनंद, सुख व शांति हैं। इसी प्राप्ति के लिए जीव प्रतिपल प्रयासरत रहता है। परंतु दिशाविहीन प्रयास से लाभ संभव नहीं है। ज्ञानचक्षु के द्वारा ही सही दिशा की ओर बढ़ा जा सकता है। कहते हैं- **'गुरु बिन ज्ञान कहाँ'**।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हम ऐसे गुरु की छत्रछाया में हैं जिनका प्रत्येक आचार, विचार, व्यवहार किसी यूनिवर्सिटी से कम नहीं हैं। आचार्य भगवन् के विचार आत्मा के समीक्षण से उत्पन्न अमूल्य सूत्र हैं, जिनका वे केवल उपदेश नहीं देते अपितु स्वयं अपने जीवन में उनका अक्षरशः पालन करते हैं। आप द्वारा प्रदत्त आयाम जीवन के हर पहलू को स्पर्श करते हैं। आचार्य भगवन् की महती कृपादृष्टि और अनंत-अनंत उपकार से हम सभी को परम आनंद की प्राप्ति हो रही है।

– स्वाति धम्माणी

आध्यात्मिक डगर पर बढ़ने का साहस हैं गुरुवर

विगत चार-पाँच वर्षों से परम पूज्य गुरुदेव के दर्शन नहीं होने से मन में व्याकुलता थी कि पता नहीं इस बार कब दर्शन होंगे। शीघ्र ही अपनी दो देवरानियों के साथ नीमच जाने का कार्यक्रम बन गया। नीमच पहुँचकर परम पूज्य गुरुवर के दर्शन-वंदन से हृदय तृप्त हो गया। गुरुदेव की अमृतवाणी को हृदय में धारण किया। मांगलिक की कृपा वर्षण ने तपते हृदय को शीतल कर दिया। दोपहर में आचार्य प्रवर महासतीवर्याओं को तत्त्वज्ञान विवेचित कर रहे थे।

अचानक बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर का पदार्पण हुआ। वे मुस्कुराते हुए बोले- अहा! कितना सुंदर नजारा है, अंदर आभ्यंतर परिषद् विराजमान है और बाहर बाह्य परिषद सजी हुई है। ठीक समय पर आचार्य भगवन् के सान्निध्य में प्रश्नोत्तर क्रम शुरू हुआ तो मैंने प्रश्न किया- भगवन्! आगम में पढ़ा है कि विवेकवान व्यक्ति ग्रह, नक्षत्र आदि के साथ शुभ-अशुभ मुहूर्त्त का ध्यान रखकर कार्य करता है। क्या यह सही है? हमें भी मुहूर्त्त आदि देखना चाहिए?

तार्किकता के साथ गुरुदेव ने फरमाया- **''बैसाखी (सहारे) की जरूरत किसको होती है? लंगड़े (लाचार) व्यक्ति को ही ना!''** इन चंद शब्दों ने ही मेरे अंतर्मन को अलौकिक प्रकाश से भर दिया। इस अप्रतिम समाधान की गूँज ने मेरी सभी शंकाओं-कुशंकाओं को शांत कर दिया। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की वह गंभीर वाणी आज भी मेरे हृदय में गूँजती रहती है और मैं बेखौफ आध्यात्मिक डगर पर बढ़ती जा रही हूँ। उन शब्दों की गहराई यही है कि यदि आपकी देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा सुदृढ़ हो तो कोई भी ग्रह, नक्षत्र शुभ-अशुभ मुहूर्त्त आदि आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकते।

भगवन् ने फरमाया है कि **''जिस समय आपके मन में उल्लास की उर्मियाँ हिलोरें ले रही हों, वही मुहूर्त्त विजय मुहूर्त्त है। उसी समय उस कार्य का शुभारंभ कर देना चाहिए।''** यह संस्मरण हमें आचार्य प्रवर के दृढ़ मनोबल का परिचय देता है। मुहूर्त्त, ज्योतिषशास्त्र के चक्कर में न पड़कर अपने मनोबल को मजबूत बनाते हुए रत्नत्रय की आराधना करते हुए श्रावकोचित कर्तव्यों का पालन निडरता से करना चाहिए।

– संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

संस्कार सौरभ

महत्तम भक्ति

- गणेश डूंगरवाल, चित्तौड़गढ़

अपने आराध्य का श्रद्धापूर्वक नाम स्मरण, कथा श्रवण, भजन, गुणकीर्तन, प्रार्थना, स्तुति, वंदना, विनय, सेवा, आराधना आदि भक्ति के ही रूप हैं। भक्ति समर्पण रूप होती है। मन और बुद्धि सब कुछ समर्पण भक्ति हैं। जैन भक्ति गुण प्रधान है। इसका लक्ष्य सांसारिक या भौतिक नहीं वरन् आत्मिक है। रत्नत्रय में प्रथम **'सम्यक् दर्शन'** भक्ति का ही दूसरा नाम है। इसमें निज परमात्म तत्त्व में सम्यक् श्रद्धान को भक्ति कहा है। **'सर्वार्थसिद्ध'** में भाव विशुद्धि युक्त अनुराग को भक्ति कहा गया है। ऐसी निष्काम भक्ति के सहारे ही भक्त भगवान के गुणों का संगान करते-करते तत्स्वरूप हो जाता है। आचारांग, सूत्रकृतांग (महावीर स्तुति) सूत्र से लेकर आवश्यक सूत्र (भाव वंदना) तक सभी आगमों में विनय-भक्ति सूत्रों की प्रधानता है। आवश्यक निर्युक्ति में भक्ति से पूर्व संचित् कर्मों का क्षय बताया गया है। भक्ति से ही राग-द्वेष समाप्त होकर आरोग्य बोधि और समाधि लाभ होता है। भक्ति ही भवनाशक व अनंत परमात्म-सुख दाता है।

भक्ति किसकी ?

जैन दर्शन में **सुदेव** (अरिहंत, सिद्ध), **सुगुरु** (आचार्य, उपाध्याय), **सुधर्म** (केवली प्ररूपित) की सम्यक् भक्ति का निर्देश है। सुदेव, सुधर्म को बतलाने वाले होते हैं और उसी धर्म को जीवंत रूप में जन-जन तक पहुँचाने वाले होते हैं सुगुरु। **'उत्तराध्ययन सूत्र'** में गुरु से ही ज्ञान-दर्शन-चारित्र की प्राप्ति होना बताया है। अतः तीनों में से गुरु की भक्ति को ही सबसे बड़ा माना गया है। गीता में भी गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना गया है। गुरु, शिष्य के अज्ञान को दूर कर उसको गुरुत्व और भगवत् तत्त्व की ओर बढ़ाते हैं।

आयवियनमुक्कावेण विज्जा मंता य सिज्झंति

- आवश्यक निर्युक्ति 1110

अर्थात् आचार्य को नमस्कार से विद्या और मंत्र सिद्ध होते हैं।

भक्ति कैसी हो ?

यह जानने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। ज्यादा शास्त्र भी पढ़ने की जरूरत नहीं है। जरूरत है तो सिर्फ महत्तम भक्ति से परिपूर्ण आगम-पुरुष गुरु राम को निकट से देखने, सुनने और उनके स्वर्णिम जीवन चारित्र को पढ़ने मात्र की। गुरु राम ने देव, गुरु और धर्म की भक्ति आराधना जिस मनोयोग और समर्पणा भाव से की है, वह अकल्पनीय व अनुकरणीय है। गुरुभक्ति की तो मानो वे पराकाष्ठा ही हैं।

आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अभिकंपमाणो,
जो छंदमाराहयई स पुज्जो।।

-दशवैकालिक सूत्र अ. 9, उद्दे. 3, गाथा 2

अर्थात् जो शिष्य आचार प्राप्ति के लिए गुरु महाराज की विनय-भक्ति करता है और उनकी सेवा करता हुआ उनके उपदेशों से विचलित नहीं होते हुए उनकी आज्ञा को स्वीकार करके आचार्य के अभिप्रायों के अनुकूल कार्य करता है, वह पूज्य होता है। मुनि श्री राम ने उपर्युक्त गाथा को मानो 'गुरु मंत्र' मानकर अपने गुरु पूज्य आचार्य श्री नानेश के विनय, भक्ति-भाव को ही अपनी साधना का लक्ष्य बना लिया था। आज वे न केवल स्वयं ही साधना के शिखर हैं, वरन् आचार्य पद का निर्वहन करते हुए समूचे तीर्थ संघ को नित नई ऊँचाइयों पर भी ले जा रहे हैं। आपश्री महत्तम पुरुष के रूप में वंदनीय-पूजनीय बन महावीर समान कहला रहे हैं। आचार्य भगवन् के ऐसे अलौकिक संयमी जीवन से प्रेरणा लेकर हमें भी साधना के क्षेत्र में निरंतर-निर्बाध गति करते रहना

है। इस हेतु निम्न बातों को गुरु राम की तरह ही पूर्णतः आत्मसात् करने की महत्ती आवश्यकता है –

1. गुरुवचनों को अनन्य श्रद्धा व भक्ति के साथ सुनना। ऐसा करने से साधारण वचन भी क्रांतिकारी हो जाते हैं। वचनों में नहीं, सब कुछ भावों में है।
2. गुरुवचनों को अंतिम सत्य समझकर स्वीकार करना। अपनी बुद्धि को बीच में न आने देना। यह ठीक उसी तरह है जैसे एक अच्छे सर्जन का चयन कर लेने के बाद ऑपरेशन टेबल पर आप कभी बुद्धि नहीं लगाते। अध्यात्म तो बहुत गहरी सर्जरी है। हमारी पूरी आत्मा के साथ जुड़े संस्कारों की शल्य-चिकित्सा करनी होती है और यह तभी संभव है जब आप सहज भाव से स्वयं को गुरुचरणों में समर्पित कर दें।
3. गुरु की कभी भी अवज्ञा नहीं करनी चाहिए। यह हमेशा ध्यान रखें कि जब अवज्ञा करनी छोड़ देते हैं तभी एक शिष्य का जन्म होता है।

गुरु राम का जीवन ऐसे अनेकानेक गुणों से जगमगा रहा है। *'सत्यं शिवं सुंदरं'* की मणियों से यह आलोकित है। आपश्री को किसी की प्रशंसा-निंदा से, छल-प्रपंच से, आडंबर आदि से कोई लेना-देना नहीं है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में, व्यवहार वचन आदि में स्वयं व संघहित की बात ध्यान में ले लेते हैं और शेष को मध्यस्थ भाव रखते हुए छोड़ देते हैं। आपश्री की जिह्वा नहीं, जीवनशैली बोलती है। यही कारण है कि सभी के दिलों में असीम श्रद्धा उत्पन्न कर देते हैं और एक दीप से अनेकानेक दीप प्रज्वलित हो उठते हैं।

संस्कार सौरभ

नशा त्याग के लाभ

- दिलीप गांधी, बेंगलुरु

ये ड्रग्स, दारू, सिगरेट, गुटखा, जिसके घर जाते हैं, हार्ट अटैक, कैंसर, टी.बी., उस घर में ले जाते हैं। नशे में चूर जो रहता है, परिवार से दूर रहता है, नशे की सलाखों में कैदी बनकर वो रहता है।।

नशा छोड़ना व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन के लिए अत्यंत लाभकारी है। नशा चाहे सिगरेट, शराब, तंबाकू, ड्रग्स या किसी अन्य मादक पदार्थ का हो, इसे त्यागने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। नशा छोड़ने से हृदय, फेफड़े और लीवर जैसे महत्त्वपूर्ण अंगों की कार्यक्षमता बढ़ती है। सिगरेट छोड़ने से फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है और साँस की बीमारियों का खतरा कम होता है। शराब छोड़ने से लीवर डैमेज और पेट की समस्याओं में सुधार होता है। नशा छोड़ने से तनाव, चिंता और अवसाद में कमी आती है। व्यक्ति अधिक सकारात्मक महसूस करता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। नशे पर खर्च होने वाले पैसे की बचत होती है, जिसे व्यक्ति अन्य महत्त्वपूर्ण जरूरतों पर खर्च कर सकता है। नशा छोड़ने से व्यक्ति का परिवार और समाज के प्रति दृष्टिकोण बेहतर होता है। परिवार के साथ समय बिताने और जिम्मेदारियों को निभाने में सुधार होता है। नशा छोड़ने से जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है और व्यक्ति लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जी सकता है।

नशा छोड़ना शुरुआत में कठिन हो सकता है, लेकिन सही इच्छाशक्ति, परामर्श और समर्थन से इसका पूर्ण त्याग किया जा सकता है। नशामुक्त जीवन से व्यक्ति को शांति, खुशी और सफलता प्राप्त होती है। अपनी और अपनों की खुशी अगर चाहिए तो नशे के विष को पीना बंद कर देना चाहिए। नहीं तो जब नशा अपना खेल रचाएगा तो उसके विनाश का तांडव घर, समाज को बर्बाद कर देगा।

संस्कार सौरभ

अच्छी सोच

- भागचंद जैन, अलवर

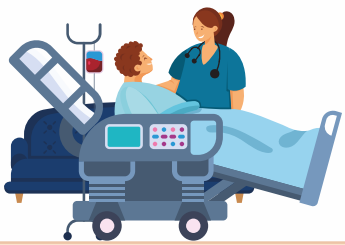

एक नर्स लंदन में ऑपरेशन से दो घंटे पहले मरीज के कमरे में घुसकर कमरे में रखे गुलदस्ते ठीक करने लगी। अचानक उसने मरीज से पूछा, ''सर! आपका ऑपरेशन कौन से डॉक्टर साहब कर रहे हैं?''

मरीज ने बिना किसी उत्साह से कहा, ''डॉ. जबसन।''

नर्स ने डॉक्टर का नाम सुना और आश्चर्य से मरीज के पास पहुँची और पूछा, ''क्या सच में डॉ. जबसन आपका ऑपरेशन कर रहे हैं?''

मरीज ने कहा, ''हाँ, आपने सही सुना है।''

नर्स ने कहा, ''अच्छा, विश्वास नहीं होता।''

परेशान होते हुए मरीज ने पूछा, ''लेकिन, इसमें ऐसी क्या अजीब बात है?''

नर्स ने कहा, ''इस डॉक्टर ने अब तक हजारों ऑपरेशन किए हैं, उनकी सफलता दर 100 प्रतिशत है। वे बहुत व्यस्त रहते हैं। मैं हैरान हूँ उन्हें फुर्सत कैसे मिल गई आपका ऑपरेशन करने के लिए?''

मरीज ने कहा, ''ये मेरी अच्छी किस्मत है।''

नर्स ने फिर कहा, ''यकीनन, दुनिया का बेहतरीन डॉक्टर आपका ऑपरेशन कर रहा है।''

इस बातचीत के बाद मरीज को ऑपरेशन थिएटर में पहुँचा दिया गया। मरीज खुश था और ऑपरेशन भी सफल हुआ।

दरअसल, मरीज के कमरे में आई महिला कोई साधारण नर्स नहीं थी, बल्कि अस्पताल की मनोवैज्ञानिक महिला डॉक्टर थी, जिसका काम मरीजों को उनके इलाज के लिए मानसिक रूप से तैयार करना था, ताकि वे भयमुक्त रह सकें। महिला डॉक्टर ने बहुत खूबसूरती से मरीज के दिल में यह बिठा दिया था कि दुनिया का सबसे सफल डॉक्टर उसका ऑपरेशन कर रहा है। इसी के साथ मरीज खुद सुधार की तरफ लौट आया। आज विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि रोगी जितनी दृढ़ता से रोग को नियंत्रित करने का वादा करता है उतनी ही दृढ़ता से रोग पर जीत दर्ज कर सकता है। सकारात्मक सोच से समस्या को नियंत्रित करने में बहुत मदद मिलती है।

भक्ति रस

महत्तम महोत्सव

- राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

स्वयं को श्रेष्ठ बनाकर, गुरुचरणों में सच्ची भेंट चढ़ाएँ।
आओ हम सब मिलकर, महत्तम महोत्सव मनाएँ।।
जाने-अनजाने में पाप व कषायों से लेते जीवन का मजा,
ज्ञानार्जन व स्वाध्याय कर, आत्मरमण की लहराएँ ध्वजा।
तप-त्याग, व्रत-विवेक से कर्मनिर्जरा कर जीवन सजाएँ,
आओ हम सब मिलकर, महत्तम महोत्सव मनाएँ।।
बचपन से ही हो, धर्म के दृढ़ संस्कार,
जो बने भावी जीवन का, सफल आधार।
गुरु राम के चिंतन, प्रेरणा, देशना को जन-जन तक पहुँचाएँ,
आओ हम सब मिलकर, महत्तम महोत्सव मनाएँ।।
संघ विस्तार व सशक्तिकरण का, परचम देश-विदेश में लहराएँ,
समाज में रहकर समाज व संघ का हम विशेष हिस्सा बनें।
गुदड़ी के लालों की प्रतिभाओं को उभार लाएँ,
आओ हम सब मिलकर, महत्तम महोत्सव मनाएँ।।

संस्कार सौरभ

परीषहजयी की अद्भुत सहनशीलता

- सुरेश बोरदिया, मुंबई

महासागर अथाह जल राशि से भरे होते हैं, ऐसे ही कुछ विरले महापुरुषों का जीवन भी अपने आप में अथाह गुणराशि से भरा महासागर होता है। जिस तरह विभिन्न जल सरिताएँ, जल धाराएँ अपने निर्मल जल से महासागरों को परिपूर्ण करती हैं, उसी तरह विशिष्ट गुण सरिताएँ ऐसे महापुरुषों के जीवन को गुणों का महासागर बना देती हैं। महासागर की लंबाई, चौड़ाई, गहराई विशाल होती है, जिसकी थाह पाना असंभव कहा जा सकता है। कदाचित् उसकी थाह नाप भी ली जाए, लेकिन उसमें समाहित जल राशि को नापा नहीं जा सकता। यह दुष्कर ही नहीं, असंभव है।

महापुरुषों का जीवन महान होता है। उनके जीवन-चरित्र का हर पल, हर क्षण महानता का परिचायक होता है। उनके जीवन में समाई हुई गुणराशि को व्यक्त कर पाना असंभव है। उनके शब्दों में महानता झलकती है, तो मौन में भी महानता झलकती है।

स्वयंभूरमण समुद्र, अलौकिक महापुरुष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का जीवन विविध गुणों का महासागर है। ऐसे गुणों के महासागर में एक विशिष्ट गुण है, जो असामान्य कहा जा सकता है। वह गुण है – **सहनशीलता**।

सहनशीलता, एक ऐसा गुण है जिसमें सरलता एवं क्षमा जैसे गुण स्वतः समाहित हो जाते हैं। क्षमा न हो तो कैसी सहनशीलता और सहनशीलता न हो तो क्षमा भी कैसे पनपेगी? जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं और किसी एक पहलू के न होने पर उसकी कीमत शून्य हो जाती है। वैसे ही सहनशीलता और क्षमा भी एक-दूसरे के अस्तित्व को निखारते हैं।

भगवान महावीर के जीवन में अपार सहनशीलता थी तो क्षमा भी अपरंपार थी। चंडकौशिक ने भगवान के पैर में डस लिया तो श्वेत रक्त की धार बहने लगी। एक भयंकर विषधर द्वारा डसे जाने पर दर्द, पीड़ा होना सहज और स्वाभाविक है। इतना भयंकर विषधर था कि दोपाए और चौपाए तो क्या, पक्षी तक भी उसकी बांबी के आस-पास उड़ने से डरते थे। ऐसे भयंकर नाग द्वारा डसे जाने पर भी भगवान महावीर सामान्य एवं सहज थे। इतने सहज कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। पीड़ा का आभास तक नहीं। गजब की सहनशीलता कि कोई उफ तक नहीं; न मन से, न वचन से और न काया से।

भगवान की ऐसी सहनशीलता में क्षमा भी समाई हुई थी। सहनशीलता के साथ क्षमा नहीं होती तो प्रतिक्रिया भी हो सकती थी, लेकिन क्षमा ने अपकारी के अपकार को भुलाकर उपदेश दे दिया। ऐसा उपदेश दिया, जिससे चंडकौशिक का यह भव और परभव, दोनों सुधर गए।

भगवान महावीर की पाट-परंपरा को सुशोभित करने वाले, जिनशासन की भव्य प्रभावना करने वाले, भवी जीवों

का कल्याण करने वाले आचार्य भगवन् के जीवन में भी सहनशीलता, क्षमा जैसे विशिष्ट गुण समाए हुए हैं। बिना रश्मियों के सूर्य, बिना शीतलता के चंद्र, बिना सहनशीलता के धरती और बिना गहराई के सागर की कल्पना भी नहीं कर सकते। बस, इसी तरह विशिष्ट गुणों के बिना तो महापुरुषों के जीवन चारित्र की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

आचार्य भगवन् की सहनशीलता, क्षमा जैसे गुणों को समय-समय पर हम अनुभव करते आए हैं। एक प्रसंग जिसका मैंने स्वयं अनुभव किया है। वैसे तो इस प्रसंग को सामान्य प्रसंग भी कहा जा सकता है, लेकिन उसमें मैंने जो कुछ अनुभव किया है वह सामान्य नहीं, विशिष्ट ही कहा जाएगा।

वर्ष 2017 के फरवरी माह में आचार्य भगवन् का मेरे निवास क्षेत्र में पदार्पण हुआ। दो दिन विराजने के पश्चात् सायंकाल विहार होना था। रात्रि विश्राम के लिए जिस स्थान पर विराजना था उस स्थान के बारे में मैंने बिना कुछ जानकारी लिए ही भगवन् से वहाँ विराजने की विनती कर दी। सायंकाल यथासमय विहार हो गया और भगवन् उस स्थान पर पधार गए। विहार सेवा का एक अच्छा अवसर मेरे लिए था, लेकिन प्रमादवश उस दिन मैं न तो विहार सेवा में गया और न ही रात्रि चर्चा में।

अगले दिन सुबह लगभग 6 कि.मी. का विहार संभावित था। सूर्योदय से ही अनेक क्षेत्रों के गुरुभक्तों का दर्शनार्थ आगमन शुरू हो गया और उसी के साथ शुरू हुआ मेरे मित्रों के फोन आने का सिलसिला। एक के बाद एक मुझे 4-5 मित्रों के फोन आए। उन्होंने जो कुछ कहा, सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। उन्होंने कहा कि भगवन् एवं संत मुनिराज रात्रि में जिस स्थान पर विराजे थे वहाँ मरम्मत एवं नवीनीकरण का कार्य चल रहा है तथा सामान एवं मलबा अस्त-व्यस्त पड़ा है। शयन के लिए तो स्थान बिलकुल उपयुक्त था ही नहीं। पूरी रात्रि विराजकर ही व्यतीत की होगी।

जो कुछ हुआ, उसका निमित्त मैं ही था। शहरी क्षेत्र होने से अन्य कई स्थान उपलब्ध हो सकते थे, लेकिन मैंने ऐसा कोई प्रयास भी नहीं किया था। शहर या गाँवों से दूर जंगलों में या हाईवे पर विहार करते समय अनुकूल स्थान नहीं मिलने पर कई बार असाताकारी प्रतिकूल स्थानों पर विराजना होता ही है, लेकिन इस प्रसंग में ऐसा नहीं था। श्रमणोपासक के ही पूर्व एक अंक में मैंने उल्लेख किया था कि मुंबई-नासिक के मध्य रात्रि विश्राम के लिए स्थान उपलब्ध न होने की स्थिति में भगवन् ने हाईवे के किनारे बने बस स्टॉप के छप्पर के नीचे रातभर विराजने के भाव फरमा दिए थे।

रामायण में श्री राम के वनवास काल के प्रसंग का यहाँ उल्लेख करना उचित होगा। राजमहल में सुख-साधनों की कहाँ कमी थी, लेकिन समय आने पर उन सबका त्याग कर चल पड़े चौदह वर्ष के वनवास के लिए। वनवास में सूखी टहनियों और पत्तों की कुटिया में रहना, जिसमें बिछौने तक का पता नहीं था। फिर भी बड़ी प्रसन्नता और समभाव के साथ कष्टों को सहन किया। जो मिला, उसे अनुकूल मानकर प्रतिकूलता को भी अनुकूलता में बदल दिया, सिर्फ सहनशीलता के बल पर। परीषह विजेताओं के सामने परीषहों की क्या ताकत? कष्टों को सहन करने में सक्षम साहसियों के लिए कष्टों की क्या मजाल? अगर कष्ट-परीषहों से घबरा जाते तो उनका जीवन इतना महान नहीं बन पाता जितना आज तक उनकी महानता बखान हो रहा है। यदि श्री राम चाहते तो वनवास को टाला भी जा सकता था, लेकिन उनको कष्टों से घबराना नहीं, जूझना आता था। अगर ऐसे कष्टमय वनवास को टाल दिया होता तो श्रीराम का जीवन इतना महान नहीं बन पाता कि अब तक उन्हें याद किया जा रहा है।

अब मूल प्रसंग पर आते हैं। मेरी भूल से महापुरुषों को कितनी असाता हुई यह सोचकर ही मैं चिंतित हो गया, लेकिन अब किया ही क्या जा सकता था सिवाय पश्चात्ताप के। चिंतित अवस्था में ही मैं तुरंत रवाना होकर उस स्थान

पर पहुँच गया, लेकिन तब तक आगे की दिशा में विहार हो चुका था। आगे पहुँचकर मैं भी उस विहार में सम्मिलित हो गया और चारित्रात्माएँ अगले स्थान पर पहुँच गए।

भगवन् के विराजने के पश्चात् श्रद्धालु वंदन कर सुखसाता की पृच्छा कर रहे थे, लेकिन मैं... मैं चाहकर भी ऐसा कर नहीं पा रहा था। मन में यही विडंबना थी कि भगवन् के पास कैसे जाऊँ? बस, यही सोच मुझे गुरुचरणों तक पहुँचने से रोके जा रही थी। परंतु गलतियाँ करने के बाद बच्चा कब तक अपनी माँ के पास जाने से रुक सकता है? कुछ समय भले ही नहीं जाए, लेकिन जाएगा जरूर। क्योंकि वह अपनी भूल एवं गलतियों से अधिक अपनी माँ की ममता, वात्सल्य को जानता है, जिनके सामने अपनी गलतियों को गौण समझ लेता है।

अपने रोग को डॉक्टर से कैसे छिपाता? छिपाने से रोग का निदान नहीं हो सकता। अपनी भूलों को भी गुरु से क्यों छिपाना? भूलों को छिपाने से उनका प्रायश्चित्त भी नहीं हो सकता और इसी सकारात्मक सोच ने मुझे भगवन के समीप पहुँचा दिया।

दर्शन, वंदन कर सुखसाता पूछी। दर्शन, वंदन करके तो आनंदानुभूति हो रही थी। सुखसाता पूछना मात्र औपचारिकता ही कही जा सकती है क्योंकि मैं स्वयं पूरी रात्रि महापुरुषों को असाता पहुँचाने वाला अब सुखसाता पूछ रहा था, जो मात्र नादानी भरी औपचारिकता ही थी।

अभी तक मैं भगवन् के मुखचंद्र को ही निहारे जा रहा था। जिस गंभीरता को देखकर मैं अपने नयनों और मन को प्रफुल्लित किए जा रहा था, यह गंभीरता अद्वितीय थी। पूरी रात्रि की अनिद्रा या थकान का कोई नामो-निशान नहीं, वही मुस्कुराहट, वही ताजगी। निरंतर चलायमान रहने के बावजूद भी सूर्य अगली सुबह उसी तेज के साथ उदित होता है, उसकी रश्मियों में वही प्रकाश रहता है। भगवन् के श्रीमुख पर भी वही आभा परिलक्षित हो रही थी।

अब तक भी मैं यही सोच रहा था कि भगवन् या संत महापुरुष अपने स्वयं के परीषह के लिए नहीं, लेकिन कर्तव्यबोध कराने के लिए तो मुझे कुछ फरमा ही सकते हैं ताकि भविष्य में अन्य चारित्रात्माओं को अनावश्यक परीषह न हो, लेकिन भगवन् तो भगवन्, संत-महापुरुषों ने भी एक शब्द तक नहीं फरमाया।

मेरी आतुर निगाहें अभी तक भी आचार्य प्रवर के आनंददायी आभामंडल पर ही टिकी हुई थी। अहो, कैसी सहनशीलता! कैसे विशिष्ट आत्मभाव! परीषहों को सहन करने की कैसी अद्भुत क्षमता और मुझ जैसे नादान को कैसा विशिष्ट क्षमादान! सब कुछ अद्वितीय या अद्भुत ही नहीं, बल्कि उससे भी अधिक।

मैं अपने आपको गर्वित महसूस करने लगा कि धन्य हैं हम, पुण्यशाली हैं हम, जिनको ऐसे महापुरुषों का सान्निध्य, संयोग मिला है। सहनशीलता और क्षमा भी अद्भुत! परीषह में निमित्त बनने वाले के प्रति भी क्षमा। जैसे रामायण में राम को मिले वनवास में निमित्त बनी माँ कैकेयी के प्रति श्रीराम को कोई शिकायत नहीं थी। श्रीराम का कष्टमय वनवास तो मात्र चौदह वर्ष के लिए ही था, लेकिन हमारे पूज्य संत-सतियाँ जी म.सा. का संयमी जीवन तो जीवनपर्यंत परीषहों से भरपूर ही रहता है। कदम-कदम पर, प्रतिपल परीषह, लेकिन सहनशीलता के समक्ष सभी परीषह स्वयं ही नतमस्तक हो जाते हैं।

ऐसे ही विरले महापुरुष आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के पचास वर्ष हाल ही में पूर्ण हुए हैं। परीषहों पर विजय के पच्चास सुनहरे वर्ष। ऐसे सुअवसर को हमने महत्तम महोसव के रूप में लगभग ढाई वर्ष तक आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ मनाया है। जो धार्मिक गतिविधियाँ तप, त्याग, ज्ञानार्जन, आदि के रूप में हमने उत्साह, उल्लास व उमंग के साथ संपन्न की हैं, वे हमारे जीवन में आगे भी सदा प्रवाहमान रहें, यही मंगलकामना है।

महत्तम महोत्सव के सुखद समापन पर सभी पाठकगणों को बधाई! इस आलेख प्रस्तुति में कोई भूल भूल-चूक हुई तो क्षमायाचना का भाव व्यक्त करता हूँ।

संस्कार सौरभ

Mental Health and Addiction

- Sreeja Sethia, Kolkata

Mental health refers as the individual's adjustment with a maximum of effectiveness, satisfaction, happiness and socially considerate behaviour and the ability to face and accept the reality of life. The term mental health alludes to cognitive or enthusiastic prosperity of a person. It is about how individuals think, feel and act. Mental health is a condition of prosperity in which each individual understands his or her own particular potential, can adapt to the typical hassles of life and can make a commitment to his or her community (WHO).

Health in humans, is the general state of a man's brain, body and soul, normally intending to be free from sickness, harm or agony. It is a condition of complete physical, mental, social well-being and not just the non-attendance of malady or illness.

Drugs are substances that change a person's mental or physical state. They can affect the way your brain works, how you feel and behave, you're understanding and your senses. Drugs affect the body's central nervous system. They affect how a person thinks, feels and behaves. Drugs have different effects depending on the drug itself, the person taking it and their surroundings. Addiction is a complex condition characterised by the compulsive use of substances or engagement in behaviours despite adverse consequences.

Is addiction deeply related to the functioning of the brain and the related neurochemistry? The answer is probably 'yes'. To understand the relation, we need to understand a few other things first. The first is the role of certain neurotransmitters. Neurotransmitters are often referred to as the body's chemical messengers. They are the molecules used by the nervous system to transmit messages between neurons, or from neurons to muscles. For example, Dopamine is a neurotransmitter involved in motor control, reward, emotion, and learning, Norepinephrine is a neurotransmitter and hormone that plays a role in mood, arousal, and stress, and Serotonin is a neurotransmitter and hormone that modulates mood, sleep, anxiety, and appetite.

Now to understand the role of neurotransmitters in the addictive behaviour of a person, it is found that when a person uses an addictive substance or engages in

rewarding behaviour (e.g., gambling), dopamine is released, creating feelings of pleasure and reinforcement. Addictive substances (like drugs or alcohol) and behaviours (like gambling or gaming) overstimulate this reward system, producing an intense euphoric 'high'. Over time, the brain starts associating these substances or behaviours with survival-level rewards, like food or reproduction. As the person keeps on taking the addictive substance (alcohol, nicotine or any other drug), there are neural pathways that are formed due to the behaviour and the body learns those pathways and connections are made. Repeated behaviour creates a powerful habitual loop that ultimately is termed as the addictive behaviour. And slowly, this addictive brain develops tolerance towards the substance and is unable to function on the same amount of the substance and requires and demands more and more of it. With time the brain starts depending on the substance for even the normal functioning in day to day life and shows withdrawal symptoms like aggression when unable to get the substance.

Addiction directly affects a person's ability to think, make decisions and have a sound judgement. A sense of emotional relief and stress release is felt which links addiction to pleasure and hence whenever a person seeks pleasure, he or she seeks the preferred substance. Drug addiction causes different physiological, organic and also psychological problems, distinctive sort of drugs and their items cause diverse issues like stimulant and hallucinogenic drugs produce mental illness with suspicions, intemperate fears, mood disorders and depression. Narcotics and liquor damage the liver, stomach, brain and nerves which results memory loss, restlessness and so forth.

Thus it is imperative that the population, especially the youth of the country are made aware of the consequences of addiction and are shown alternative, healthier ways to engage in merry making or pleasure seeking or even the more responsible use of anything that they consume.

होली चातुर्मासिक पर्व नोखागाँव के लिए स्वीकृत

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने असीम कृपा करते हुए **होली चातुर्मासिक पर्व** का पावन प्रसंग साधु मर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित **नोखागाँव संघ** के लिए स्वीकृत किया गया है। इस अवसर पर पधारने से आपको परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा। ज्ञातव्य है कि **जैन भागवती दीक्षा 30 अप्रैल 2025 (अक्षय तृतीया)** को **गंगाशहर-भीनासर संघ** एवं **अभिमोक्षम् शिविर 18 मई से 3 जून 2025** को **बीकानेर संघ** के लिए पूर्व में स्वीकृत हो चुके हैं।

– महेश नाहटा

भक्ति रस

आजकल का परिवार कैसा है

- संजय श्रीश्रीमाल, कोयंबटूर

आजकल के शहरों की भाग-दौड़ में
परिवार अपना सबका खो रहा है।
बच्चे और बुजुर्गों को परायों के सहारे छोड़,
युवा करियर और धन के पीछे दौड़ रहा है।।

कामना और महत्त्वाकांक्षा की चाह में,
जिंदगी जीना हर युवा भूल रहा है।
बस मौज, शौक और कमाने की होड़ में,
परिवार से दूर गैरों के संग जिंदगी काट रहा है।।

अपनों से अलग होकर सुख को खोज रहा है,
जिंदगी की तलाश में अंधेरी गुफा में सो रहा है।
माँ-बाप को छोड़ आशियाना अपना बसा रहा है,
जिसने पाला-पोसा उन्हें ही बेसहारा छोड़ रहा है।

बच्चों को हॉस्टल,
माँ-बाप को वृद्धाश्रम भेज रहा है।
पत्नी को पार्टी में और खुद को
अँधेरे के नशे में डुबो रहा है।

बच्चों का बचपन खो गया स्कूल में,
घर-परिवार से दूर हॉस्टल में वो रहा।
दादा-दादी, चाचा-चाची के रिश्ते से,
हरदम अजनबी अनजाना वो रहा है।।

टूटा रिश्ता, टूटे परिवार, टूटे सब बंधन,
आजादी और समृद्धि की चाह में।
ना परिवार बचा, ना धर्म जीवन में रहा,
भौतिक उन्नति और प्रगति की राह में।।
संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं,
अपने हर रोज बिछड़ते जा रहे हैं।
बच्चे अपनी बेहतरीन शिक्षा के लिए,
माँ-बाप को छोड़कर जा रहे हैं।।

फिर पढ़-लिखकर विदेश में,
अपना घर-संसार बसा रहे हैं।
अपनी पत्नी, बच्चों और करियर को,
अपना सुखी परिवार मान रहे हैं।।

बहन-भाई, चाचा-मामा, दादा-नाना,
के रिश्तों से दूर मतलबी बन रहे हैं।
धन-दौलत के नशे में डूबकर,
अपनी सभ्यता व संस्कृति को भूल रहे हैं।।

ना उनको रिश्तों की अब परवाह है,
अच्छी सैलेरी और हैप्पी लाइफ की चाह है।
माँ-बाप और परिवार से बहुत दूर हैं,
अंतिम दर्शन के लिए वो केवल ऑनलाइन है।।

बूढ़े माँ-बाप की आँखें तरस गईं,
अपने बच्चों को देखने के लिए उम्र बीत गई।।
आखिर एक रात माँ साँसें छोड़ गई,
और बूढ़े पति को अकेला छोड़ गई।।

विदेश में बसे बच्चों तक खबर पहुँचाई गई,
दाह-संस्कार की रश्में पड़ोसियों द्वारा निभाई गई।
बच्चे दो दिन बाद बिलखते हुए आए,
और बूढ़े बाप के गले लगकर कुछ आँसू बहाए।।

फिर बैठकर आपस में यह सोचने लगे,
बूढ़े बाप की जिम्मेदारी किसको सँभला जाएँ।
बीमार और बुजुर्ग पिता की आँखें भर ना आए,
इसलिए उनको किसी वृद्धाश्रम में छोड़ जाएँ।।

भक्ति रस

कौन है???

- अमिता संचेती

लेखनी स्तब्ध है, किसके लिए ये शब्द हैं?
कौन है वो आत्मा? जो दिव्य है, प्रशस्त है।।

शास्त्रीय ज्ञान गहरा है, इंद्रियों का पहरा है।
बाँध रखा सिर पर, प्रभु वीर का ही सहरा है।।

लेखनी पूछ रही है...

कौन है, जो करुणा का झरना बहा रहा है?
कौन है, जो छहकाय को अभयदान दिला रहा है?
कौन है, जो मेघा बन मन तृप्त बना रहा है?
कौन है, जो स्वाध्याय का रसपान करा रहा है?

कौन है, जो वैराग्य के बीज बो रहा है?
कौन है, जो संयम की फसलें बढ़ा रहा है?
कौन है, जो थोकड़ों का रहस्य सुलझा रहा है?
कौन है, जो जिज्ञासुओं की प्यास बुझा रहा है?

कौन है, जो अंजलि से अमृत पिला रहा है?
कौन है, जो धर्म की खुशबू फैला रहा है?
कौन है, जो त्यागमय जीवन बीता रहा है?
कौन है, जो मधुर वचनों से सबको रिझा रहा है?

कौन है, जो प्राणियों को सद्मार्ग दिखा रहा है?
कौन है, जो भटके हुओं की नैया पार लगा रहा है?
कौन है, जो ज्ञान के मोती लुटा रहा है?
कौन है, जो मुक्ति की मंजिल पहुँचा रहा है?

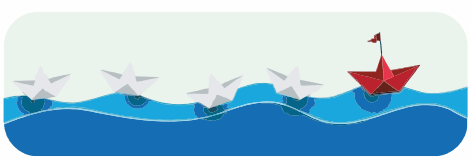

मेरा जवाब लेखनी को...

सुन ऐ मेरी लेखनी, जिसका तू पूछे ना है।
वो हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र आचार्य गुरु राम हैं।।

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड नवंबर-दिसंबर 2024, परीक्षा परिणाम

प्रारंभिक जैन सिद्धांत भूषण

रोल नं. (भूषण 1/2/3/4- प्राप्तांक) 521(1-96, 2-92), 701(2-77, 3-76), 740 (3-96), 746 (1-93, 2-93, 3-93, 4-84), 748 (1-57), 754 (4-78), 756 (2-72), 763 (3-97), 787 (3-88, 4-79), 793 (3-83, 4-50), 794 (1-71), 795 (1-79), 797 (2-48, 3-83), 799 (1-66, 2-79), 801 (2-80, 3-86), 802 (1-81), 808 (3-95), 809 (1-80, 3-96), 813 (2-68, 3-79), 814 (4-46), 816 (2-81), 817 (3-87), 820 (1-69), 821 (2-82), 830 (1-78, 2-94), 832 (1-85, 2-100), 843 (2-71, 3-80), 853 (1-51, 2-82, 3-88, 4-90), 861 (1-71, 2-73, 3-70, 4-41), 864 (2-84, 3-85), 869 (1-74, 2-97), 872 (3-68), 875 (2-40), 880 (1-40, 2-76), 883 (2-84), 885 (2-75, 3-68), 886 (2-41), 887 (2-55), 891 (2-57), 893 (2-64), 894 (2-86, 3-86), 896 (2-61), 897 (3-70), 899 (2-54, 3-93), 900 (2-52), 901 (2-14), 902 (2-36), 905 (2-27), 907 (2-50), 908 (2-40), 910 (2-41), 913 (2-95), 916 (2-64), 919 (3-93), 920 (2-87), 921 (2-79, 3-69), 926 (2-66), 927 (2-46), 928 (2-62), 929 (2-44), 930 (2-79), 931 (2-81), 932 (2-85), 933 (2-27), 934 (2-42), 936 (2-76), 937 (2-44), 938 (2-71), 939 (2-82, 3-86), 940 (1-79, 2-52), 941 (2-84), 942 (2-26), 943 (2-64)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत कोविद

रोल नं. (कोविद 1/2/3/4- प्राप्तांक) 100 (2-98), 193 (1-55, 2-77), 481 (2-82), 692 (2-87, 4-89), 789 (2-74, 3-51), 818 (2-76), 822 (2-84, 42), 845 (3- 60)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विभाकर

रोल नं. (विभाकर 1/2/3/4- प्राप्तांक) 178 (1-86), 374 (1- 85, 2-57, 3-73), 534 (1-92, 2-60, 3-70, 4-71)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत मनीषी

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4- प्राप्तांक) 301 (2-66, 3-44), 761 (1-77, 2-72, 3-73, 5-52, 6-68)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विशारद

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4- प्राप्तांक) 206 (1-77, 2-74), 523 (1-76)

वैकल्पिक जैन स्तोक

रोल नं. (भूषण - प्राप्तांक) 100 (81), 146 (29), 481 (68), 533 (70), 701 (65), 761 (85), 838 (14), 869 (92), 878 (71), 894 (76), 896 (50), 913 (84), 920 (64), 943 (40)

प्रारंभिक जैन राष्ट्रभाषा हिंदी

रोल नं. (विशारद-प्राप्तांक) विशारद 146 (34)

- :: नोट ::-

परीक्षा परिणाम एवं रोल नंबर संबंधी सहायता हेतु धार्मिक परीक्षा बोर्ड के हेल्पलाइन मो.नं. 7231933008 पर संपर्क करें।

दिव्य गुणों के धाम की,
जय बोलो गुरु राम की।
भक्तों के भगवान की,
जय बोलो गुरु राम की।।

महत्तम शिखर महोत्सव चरम पर

7-8-9 फरवरी को नोखा बनेगा अनोखा

❁ मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया (नोखामंडी), मुमुक्षु श्री चाहत जी कोठारी (बेंगलुरु) की जैन भागवती दीक्षा 7 फरवरी 2025 को नोखा एवं मुमुक्षु प्रियंका जी सेठिया (गंगाशहर) की जैन भागवती दीक्षा 30 अप्रैल 2025 को गंगाशहर-भीनासर के लिए घोषित

❁ तपस्विनी हेमलता जी बाँठिया एवं वंदना जी भूरा के दीर्घ तपस्या जारी

तीर्थंकर देवों की वाणी पर गहरी श्रद्धा हो
किसी भी घटना से मुक्त होना साधना की सबसे बड़ी उपलब्धि है

– आचार्य भगवन्
– उपाध्याय प्रवर

गोगेलाव, अलाय (जिला नागौर)।

आचरण जिनका है आदेश, मौन जिनका है उपदेश।
सरलता जिनकी देती है संदेश, ऐसे हैं आचार्य श्री रामेश।।

युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के मारवाड़ क्षेत्र में पावन प्रवास से जन-जन आध्यात्मिक आलोक से आलोकित हो रहे हैं। आराध्यदेव को अपने मध्य पाकर स्थानीय जैन-जैनेतर व प्रवासी हर्षित, आनंदित होकर धर्म साधना में लीन हो रहे हैं। व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम गतिमान हैं।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अपूर्व संयम तेज से प्रभावित होकर भव्यात्माएँ निरंतर श्रीचरणों में समर्पित हो रही हैं। **मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया (नोखामंडी)**, 18 वर्षीय **मुमुक्षु भाई चाहत जी कोठारी (बेंगलुरु)** की **जैन भागवती दीक्षा 7 फरवरी 2025** को **नोखामंडी** के लिए एवं 27 वर्षीय **मुमुक्षु बहन प्रियंका जी सेठिया (गंगाशहर-भीनासर)** की **जैन भागवती दीक्षा 30 अप्रैल 2025 (अक्षय तृतीया)** को **गंगाशहर-भीनासर** के लिए जैसे ही घोषणा हुई चहुँओर खुशी की लहर दौड़ गई। तपस्विनी **हेमलता जी बाँठिया (नोखामंडी)** 36 उपवास, **वंदना जी भूरा** मासखमण की तपस्या के साथ निरंतर आगे बढ़ रही हैं। सामूहिक दया, संवर, दयाभाव, सामायिक, द्रव्य मर्यादा, उपवास आदि दिवस के रूप में भाई-बहन साधनारत हैं। अलाय के बाद नोखामंडी में 7 फरवरी को जैन भागवती दीक्षा प्रसंग एवं महत्तम शिखर महोत्सव पर महापुरुषों का पधारना संभावित है। आराध्यदेव के संयमी जीवन के 50वें वर्ष पर संपूर्ण देश में अपूर्व श्रद्धा व भक्ति का माहौल है।

हम मन से दुःखी न बनें

16 जनवरी 2025, गोगेलाव। दृढ़ संयम के पर्याय आचार्य प्रवर एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-17 का जय-जयकारों के साथ धर्मनगरी गोगेलाव में मंगल पदार्पण हुआ। प्रवेश पश्चात् सेठ मेघराज जी बोथरा उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित धर्मसभा में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति आचार्यदेव के अद्भुत अतिशय एवं संयम दृढ़ता की परिचायक थी। प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''शांति और अशांति में क्या फर्क है? जो शांति हमारी अपनी निधि है हम उसे ही पहचान नहीं पा रहे हैं। अशांति अपनी नहीं है किंतु हम उसी में मोद मना रहे हैं। हमारी असहनीयता, असहिष्णुता के कारण हमें काँटे चुभते हैं। किसी ने कुछ प्रतिकूल बात कह दी तो हम उससे अपमानित एवं व्यथित हो जाते हैं। वो बात हमें केवल दुःखी ही नहीं करती साथ ही हमारा नुकसान भी करती है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना पुण्य-पाप है। अन्य कोई उसे कष्ट नहीं दे सकता। हम अपने मन से ही दुःखी होते हैं। यदि हम दुःखी नहीं बनेंगे तो कोई ऐसी ताकत नहीं जो हमें दुःखी बना सके। संकल्प करें और धैर्यवान बनें।''**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि लोग व्रत टूट जाने के डर से व्रत अंगीकार ही नहीं करते, जबकि व्रतों से आत्मा की रक्षा व पोषण होता है। व्रत टूटने पर आचार्य भगवन् से प्रायश्चित्त लिया जा सकता है। मानव तन

पाकर व्रत धारण नहीं किया तो दुर्लभ भव का क्या लाभ उठाया?

स्थानीय श्रावक ने महापुरुषों के आगमन को अनंत पुण्योदय बताते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती अर्ज की। निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री सहित जैन-जैनेतर व अनेकानेक स्थानों से आगत श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिन उपस्थित थे। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। पूर्व में ही शासन दीपक श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं पूज्य महासतीवर्याओं का पधारना हो चुका था।

तृष्णा की आग बुझती नहीं

17 जनवरी 2025, गोगेलाव। प्रात:कालीन दैनिक धर्म क्रियाओं के पश्चात् आयोजित विशाल प्रवचन सभा में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि चारित्रात्माओं के दर्शन, प्रवचन श्रवण आदि के लिए सैकड़ों गुरुभक्त भाई-बहनों की अपार जनमेदिनी दिव्य महापुरुषों की एक झलक पाने को आतुर प्रतीत हो रही थी। चतुर्विध संघ की उपस्थिति में जैसे ही आचार्यदेव का प्रवचन सभा में पदार्पण हुआ संपूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासुओं को जिनवाणी की गूढ़ता बताते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''याचना करने से शांति की प्राप्ति नहीं हो सकती। शांति याचना का विषय नहीं, पुरुषार्थ का मार्ग है और पुरुषार्थ शांति का मार्ग है। संसार के धन को जोड़ते-जोड़ते कोई कहे कि मुझे शांति मिल जाए तो ऐसा संभव नहीं है। धन होना या न होना अशांति का कारण नहीं है। धन में आसक्ति होना अशांति का मूल कारण है। शास्त्रकार कहते हैं कि कैलाश मेरु पर्वत भी उसे मिल जाए तो भी उसकी तृष्णा शांत नहीं होगी। तृष्णा की आग कभी नहीं बुझती। जब हमारा पुण्य चला जाएगा तो धन, संपत्ति, ऐश्वर्य सारे हाथ से निकल जाएँगे। हम अशाश्वत की ओर दौड़ रहे हैं, जबकि अशाश्वत नष्ट होने वाला है। जब तक हम संसार के पदार्थों को अपना बनाने की कोशिश करेंगे तब तक शांति नहीं मिलेगी। मोक्ष जाने के लिए सबसे पहली शर्त है मेरेपन, ममत्व का त्याग। उस पर चिंतन-मनन हो।''**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम जो भी प्राप्त करना चाहते हैं उसे प्राप्त भी कर लेंगे तो भी वह साथ में जाने वाला नहीं है। हम धन-संपत्ति के पीछे लगे हुए हैं किंतु इससे संतोष मिलने वाला नहीं है। गुरु संसार का मार्ग नहीं मोक्ष का मार्ग बताते हैं। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

स्वयं की पहचान न होना अज्ञान है

18 जनवरी 2025, समता भवन, गोगेलाव। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में ***'मेरे प्यारे देव गुरुवर'*** की मधुर ध्वनि आत्मसंतोष प्रदाता बनी। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को धर्मगूढ़ता से परिचित कराते हुए परम श्रद्धेय तरुण तपस्वी आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जब तक अविद्या प्राणी के साथ रहेगी, उसके साथ हर दु:ख जुड़ा रहेगा। स्वयं की पहचान नहीं होना ही अविद्या, अज्ञान है। जन्म, जरा, रोग व मृत्यु, ये 4 भय उसे पीड़ित करते हैं, जिसमें अज्ञान है। मैं कौन हूँ, यदि यह ज्ञान हो जाए तो ही जीवन सार्थक है। अक्षरीय ज्ञान, ज्ञान नहीं है। जन्म-मरण कितने कर लिए।**

विचारणीय है कि हम धर्म के लिए कितना समय उपयोग करते हैं। सेठ सुदर्शन स्वयं को शूली की सजा सुनाए जाने के बाद भी पौषध की मर्यादानुसार रानी के जीव की रक्षार्थ मौन रहे। आत्मभावों में दृढ़ रहे कि नाश शरीर का होता है, आत्मा तो अविनाशी है। जो परिजन आज प्रेम से सेवा करते हैं वे ही मृत्यु उपरांत शव को देख भयभीत हो जाते हैं। आत्मा में स्थिर होना ही सामायिक है।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने *'गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए'* भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के चरणों में आकर इंद्रभूति गौतम **'उपनेइ वा, अपनेइ वा, ध्रुवनेइ वा'** अर्थात् उत्पन्न, स्थिर व नष्ट होना। ये सुनकर वे धर्म में भगवान के समक्ष स्थिर व श्रद्धापूर्ण समर्पित हो गए। उसी प्रकार हम भी गुरुचरणों में पहुँचकर आचार्य भगवन् के अतिशय से अपने अज्ञान, संशय को दूर कर सकते हैं।

श्री इभ्य मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 का नागौर से विहार कर गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। दर्शनार्थियों का आवागमन लगा रहा। श्री जयप्रभ मुनि म.सा. ने 24 तीर्थंकरों के प्रथम शिष्य की जानकारी कक्षा में दी। आचार्य श्री नानेश-रामेश एवं उपाध्याय प्रवर द्वारा प्रथम दीक्षित चारित्रात्माओं की जानकारी दी।

30 अप्रैल (अक्षय तृतीया) के पावन अवसर पर गंगाशहर-भीनासर हेतु दीक्षा प्रसंग एवं बीकानेर हेतु अभिमोक्षम् शिविर सभी आगारों सहित घोषित

श्रद्धा परम दुर्लभ है

19 जनवरी 2025, समता भवन, गोगेलाव। रविवारीय समता शाखा आराधना हेतु प्रातःकाल से ही सैकड़ों आबाल-वृद्ध एवं युवा साथी श्रद्धा के सैलाब के साथ समता भवन में उपस्थित हुए। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने समीक्षण ध्यान करवाया।

समता शाखा आराधना पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में संयम सुमेरू प्रशांतमना आचार्य प्रवर ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''जब तक अज्ञान घनीभूत होता है तब तक अपनी पहचान नहीं हो सकती। **'मैं कौन हूँ'** इसकी पहचान नहीं हो पाती। शरीर के प्रति ममत्व भाव बना रहता है। अनादिकाल से हम इसी अज्ञान दशा में भटक रहे हैं। हमारा पुण्ययोग है कि हमने मानव जनम प्राप्त किया। तीर्थंकर भगवान की वाणी सुनने का अवसर मिला है। नवकार मंत्र सुनने व आराधना करने का मौका मिला है। उस पर श्रद्धा, विश्वास करने का मौका मिला है। इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएँ। जिनवाणी का श्रवण दुर्लभ होता है। हम भी सत्य को सुनते हैं, किंतु स्वीकार करने की हिम्मत नहीं होती। उसे जगाने की शक्ति, सामर्थ्य भीतर होना चाहिए। ममत्व, मोह, अज्ञान के कारण शक्ति जागृत नहीं हो पाती। दस श्रावकों का वर्णन आता है कि जीवनभर व्यापारादि में फँसे नहीं रहे। जीवन में भगवान की वाणी को धारण करें। श्रद्धा परम दुर्लभ है और आत्मा अजर-अमर है। यह सत्य जानते हुए भी भीतर गहरा विश्वास प्रकट नहीं हुआ। थोड़ी-सी कठिनाई से हम विचलित हो जाते हैं। शरीर जाए तो जाए, पर सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमने पर को स्व मान लिया है हमारी दृष्टि साफ होनी चाहिए। जिसे मेरा कहते हैं वो वास्तव में मेरा है ही नहीं। जो हमारे साथ जाएगा वो ही मेरा है। साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.

आदि साध्वीवृंद ने *'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा'* गीतिका प्रस्तुत की। गोगेलाव एवं उदयपुर संघों ने आगामी चातुर्मास के लिए पुरजोर विनती गुरुचरणों में अर्पित की।

आध्यात्मिक आरोग्यम् पाठशाला, गंगाशहर-भीनासर के बच्चों ने दर्शन, प्रवचन का लाभ लिया। आचार्यदेव के 50वें दीक्षा दिवस के अंतर्गत आयोजित महत्तम महोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रत्याख्यान हुए। कई भाई-बहनों ने 12 उपवास, 12 एकासना, 12 आयंबिल आदि के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने एक मुहूर्त्त में संपन्न होने वाले विभिन्न विषयों की जानकारी दी। जयपुर की एडिशनल एस.पी. दीपा जी जैन ने आचार्य भगवन् के दर्शन-सेवा का लाभ लिया। घोर तपस्विनी हेमलता जी बाँठिया (नोखा) ने 24वें उपवास के दिन 27 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर **30 अप्रैल (अक्षया तृतीया)** को पावन दीक्षा प्रसंग **गंगाशहर-भीनासर संघ** के लिए एवं **अभिमोक्षम् शिविर बीकानेर संघ** के लिए साधुमर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित जैसे ही घोषित किए। संपूर्ण सभा जयनादों से गूँज उठी।

धर्म में प्रमाद न करें

20 जनवरी 2025, समता भवन, गोगेलाव। प्रात: 11 बजे तक घना कोहरा (धुंध) होने के कारण दर्शन, प्रवचन का लाभ प्राप्त नहीं हो सका। संयम की उत्कृष्ट पालना परिलक्षित हुई। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने दोपहर की कक्षा में ज्ञानबोध प्रदान करते हुए आगम में काल की गणना, समय, आवलिका, स्तोक, मुहूर्त्त आदि के विवेचन सहित धन्ना अनगार के कठोर तप की विस्तार से व्याख्या में फरमाया कि धन्ना अनगार बेले-बेले तपस्या करते थे एवं पारणा आयंबिल से करते थे। शरीर क्षीण, कृषकाय हो गया, फिर भी आत्मबल से ही संयम जीवन का पालन करते थे। दीक्षापर्याय मात्र 9 माह का था। सर्वार्थसिद्ध पधारे। आयुष्य चंद मिनट और रहता तो मोक्ष पधार जाते। इसलिए धर्म में प्रमाद नहीं करना चाहिए। समय रहते धर्म की आराधना कर जीवन सार्थक करने का लक्ष्य रखें। मोक्ष प्राप्ति के लिए समभाव की साधना को आगे बढ़ाएँ। आपश्री जी ने प्रतिदिन करणीय-अकरणीय कार्यों की आत्म-समीक्षणा करने की प्रेरणा दी।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा वर्षण करते हुए मंगलपाठ फरमाया। अनेक स्थानों के श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। कुचेरा में आयोजित तत्व अवगाहन शिविर के प्रतिभा-संपन्न प्रतिभागियों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेते हुए विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। गुरुभक्ति समर्पणा गीत का संगान भी प्रतिभागियों द्वारा किया गया। **'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'** अभियान के अंतर्गत सेठ मेघराज बोथरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोगेलाव में नैतिक शिक्षा, व्यनसमुक्ति, संस्कार जागरण कार्यक्रम संपन्न हुआ। विद्यार्थियों ने पूज्य संतों की पावन वाणी से प्रेरित होकर आत्महत्या नहीं करने एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प ग्रहण किए।

हर हाल में मस्त रहें

21 जनवरी 2025, समता भवन, गोगेलाव। भोर के प्रस्फुटन के साथ ही प्रात:काल की मंगल बेला में *'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान'* एवं *'हुक्म गणि का पाट हुआ है निहाल जी'* गीतों की मधुर ध्वनि से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में आगमों की गूढ़ता से जन-जन को अवगत कराते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''आकांक्षा, अभिलाषा आदि शांति की प्राप्ति में बाधक हैं। व्यक्ति जितनी अभिलाषा में दौड़ता है वह उतना ही दुःखी होता है। साधु हो या श्रावक, जो साधनाशील हो उसको शरीर पर ध्यान नहीं देना चाहिए। शरीर की सहायता से साधना करनी है, बस इतना ही लक्ष्य होना चाहिए। *'जहाँ देह अपनी नहीं वहाँ न अपना कोय'* जब यह बोध होगा कि यह शरीर भी मेरा नहीं है तो परिवार, धन-वैभव को कैसे मान लेंगे कि ये मेरे हैं? शरीर को इतनी खुराक देते हैं फिर भी यह मेरा नहीं है, तो फिर दूसरों से अपेक्षा रखना बेकार है। इसलिए जो जीवन मिला है उसे आनंद से जीना है। चाहे सुख हो या दुःख हो, हर हालत में मस्त रहना है।''**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने ***'गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए'*** गीत के साथ फरमाया कि गुरुदेव के सान्निध्य से सुबोध प्राप्त होता है। यह छोटी-सी जिंदगी मिली है, इसमें किसी बात का गम नहीं होना चाहिए। इस शेष जिंदगी को विशेष बनाना है, नहीं तो अवशेष तो होना ही है।

शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का सवाई माधोपुर, टोंक, अजमेर, नागौर होते हुए गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। गाँव में रहते हुए समता भवन आने का नियम एवं माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई भाई-बहनों ने ग्रहण किया।

उदयपुर में संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के संथारे के 16वें दिन के उपलक्ष्य में विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। अनेक स्थानों से आए हुए धर्मप्रेमी गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लिया।

शांति प्राप्त करनी है तो शांत वातावरण में आएँ

22 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। संयम सुमेरु, व्यसनमुक्ति प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का समता भवन, गोगेलाव से 13 कि.मी. का उग्र विहार कर समता भवन, अलाय में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। **'भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछें सुख और साता', 'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार', 'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'** आदि जयनादों से संपूर्ण माहौल भक्तिमय बन रहा है। मार्ग में सड़क के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर श्रद्धालु महापुरुषों के पावन दिव्यदर्शन कर अभिभूत हो आपके दृढ़ संयम की अनुमोदना कर रहे थे। अलाय के स्थानीय एवं प्रवासी जैन-जैनेतर गुरुभक्तों की खुशी का कोई पार नहीं था। विभिन्न स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

अलाय में कुछ दिनों पूर्व से ही शासन दीपक श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में धर्माराधना का क्रम जारी है।

समता भवन, गोगेलाव में शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि शांति शब्द जितनी बार सुनते हैं, उसकी अनुभूति करते हैं। किंतु शांति को अपने भीतर स्थापित करना चाहिए। यदि शांति प्राप्त करनी है तो शांत वातावरण में आ जाओ और भीड़भाड़ से अलग हो जाओ। हम जो भी धार्मिक क्रिया कर रहे हैं, स्वाध्याय कर रहे हैं, उस समय हमारा ध्यान भी धार्मिक क्रिया में होना चाहिए। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। गोगेलाव में शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का मंगल पदार्पण हुआ।

दिव्य विचार से बदलती है जीवन की दशा

23 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। मंगलमय प्रात:कालीन बेला में देव, गुरु को समर्पित भक्तिमय प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए दया एवं करुणा के सागर दिव्यविभूति आचार्य भगवन् ने अपनी आगमिक देशना में फरमाया कि **''सबको आँखें मिली हैं। जो आँखें हमें मिली हैं, इन आँखों से हम भ्रमित हो रहे हैं। सम्यक् और असम्यक् का बोध इन आँखों से नहीं हो पाता। हमारी आँखें केवल बाहरी आवरण को देख सकती हैं। भीतर में क्या चल रहा है, वह इन चर्मचक्षुओं से ज्ञात नहीं होगा। इन चर्मचक्षुओं से देखते हुए पूरा संसार अपनी आत्मा को देखना भूल गया। इसलिए यतना के नयनों से देखने का प्रयास करना चाहिए। यही दिव्य नेत्र विचार होता है। दिव्य विचार रूपी नेत्र जब खुल जाते हैं तो जीवन की दशा बदल जाती है। भगवान महावीर, राम, श्रीकृष्ण, हरिशचंद्र आदि कठिनाइयों के बीच में शांत-प्रशांत बने रहे। जिनका चित्त सदा प्रसन्न रहे, उन्हें दु:ख हो या सुख हो, कठिनाइयाँ हो या सुगम अवस्था हो, उनका चित्त हर समय प्रसन्न रहता है। वास्तव में वही महापुरुष है। चित्त की प्रसन्नता से व्यक्ति महानता प्राप्त करता है। हमें प्रशंसा नहीं प्रसन्नता की जरूरत है।''**

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें समय-समय पर आगम का अध्ययन करते रहना चाहिए, क्योंकि आगम अध्ययन करने से धार्मिक क्रियाओं की जानकारी मिलती है। तीर्थंकर देवों, आचार्य देवों ने जो मार्ग दिखाया है उसी पर चलना चाहिए। भगवान की वाणी हमें जगाने वाली होती है।

शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। सभा का संयोजन करते हुए संघ के पूर्व मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को अनंत पुण्यवानी का अवसर बताया। वंदना दिवस के रूप में भाई-बहनों ने गुरु वंदना की। दोपहर में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधक बनने के लिए, गलती स्वीकार करने के लिए तत्परता, लंबे समय तक नाराज नहीं रहना, जिद्दी न होना, अंदर-बाहर एक जैसा रहने वाला, बीमारी में सहनशक्ति रखने वाला, बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाला, आहार एवं ध्यान को व्यवस्थित करने वाला आदि अपेक्षित गुण होने चाहिए।

दिव्य विचारों से पूर्ण ही उत्तम पुरुष

24 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। पंच परमेष्ठी को समर्पित प्रार्थना से कर्मनिर्जरा पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''चार प्रकार के पुरुष बताए गए हैं - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अधम पुरुष और अधमाधम पुरुष। जो दिव्य विचारों से विचार करता है वह उत्तम पुरुष है। उसकी सेवा उत्तम है। परिवार की चिंता करना, मोहवर्धक भावनाओं में बहना मध्यम पुरुष की पहचान है। विषयवासना की भावना में अपने आपको चलाते रहना, चलते रहना अधम पुरुष है। जो दूसरों की विकथा में रहता है वह अधम ही नहीं अधम से अधम है अर्थात् अधमाधम पुरुष है। साधु-श्रावक उत्तम पुरुष की श्रेणी में आते हैं। उनका चिंतन आत्मा की दिशा में होता है। वे अध्यात्म की भावना से परिपूर्ण होते हैं। मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? मुझे क्या करना है? यदि हमारी भावना गलत होती और हमारा जीवन चाहे कितनी ही ऊँचाइयों पर जा रहा है, किंतु हमारे भाव निर्मल एवं पवित्र नहीं होंगे तो जीवन पवित्रता की तरफ आगे नहीं**

बढ़ेगा। जन्म-मरण हमारे हाथ में नहीं है, किंतु जो जीवन हमारे हाथ में है, उसको कैसा जीना इस पर हमारा मुख्य विचार होना चाहिए। भगवान के सिद्धांतों को नहीं जिएँगे, सच्चे श्रावक नहीं बनेंगे तो सच्चे साधु नहीं बन पाएँगे। श्रावक को जीव-अजीव आदि नवतत्त्व का जानकार होना चाहिए। साधु बनें तो बहुत अच्छी बात, नहीं तो श्रावक के बारह व्रत तो स्वीकार करने ही चाहिए। *'मानव का शुभ तन मन पाया, व्रतधारी बनो व्रतधारी बनो'*।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर भगवान जैसा कोई नहीं है क्योंकि वे वीतराग दशा को उपलब्ध हो चुके हैं। वीतराग हमारी परम दशा है। क्रोध नहीं आए, यह रास्ता भगवान ने हमें अनादिकाल पूर्व बता दिया है। किंतु हम आज भी क्रोध कर रहे हैं। यह हमारी गलती है। हम भगवान का आसरा पकड़ लें कि भगवन्! आप ही मेरा आसरा हो, क्योंकि हम बार-बार डूब रहे हैं। गुरुदेव से कहें कि हमारी बांह पकड़ लो, हम आपसे कहीं दूर नहीं जाएँ, कहीं डूब नहीं जाएँ।

शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। तपस्विनी हेमलता जी बाँठिया (नोखामंडी) ने आचार्य भगवन् के मुखारविंद से 31 उपवास का पच्चक्खाण ग्रहण किया। अलाय संघ ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु भावभरी विनती गुरुचरणों में रखी। पूर्व विधायक मोहनलाल जी डूंडवाल, सरपंच हजारीमल जी ज्याणी सहित अनेक जैन-जैनेतर धर्मप्रेमी जनों ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। सरला बाई मुणत, खिरकिया ने आजीवन एकासना, बियासना करने एवं प्रतिदिन 200 गाथा का स्वाध्याय करने के पच्चक्खाण लिए। सामूहिक एकासना कार्यक्रम में भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

भगवान की वाणी में गहरा विश्वास हो

25 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। भोर की पावन बेला में मंगल प्रार्थना में *'मन हुक्मी-हुक्मी गाए जा'* भजन के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों का हुजूम भगवान महावीर की अमृतवाणी श्रवण कर अपना जीवन सार्थक करने हेतु उपस्थित था। इन सभी धर्मपिपासु गुरुभक्तों को आगमसार रूपी अमृतदेशना प्रदान करते हुए उत्क्रांति प्रदाता, दृढ़ संयम धारक, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''तीर्थंकर देवों के मार्ग को देखते एवं उनके उपदेशों को सुनते जरूर हैं, पर वह देखा एवं सुना हुआ हृदयांगम नहीं करते। व्याख्यान सुनने का मतलब है हमारी बुद्धि तत्त्वग्राही होनी चाहिए, ताकि व्याख्यान से तथ्य की बात हम हृदयांगम कर सकें। आज लोगों को नवकार मंत्र पर भरोसा नहीं है, किंतु दूसरे-दूसरे मंत्रों के पीछे लगे हुए हैं। नवकार मंत्र महामंत्र है। इस मंत्र की महिमा भारी है। आगम में कहीं, गुरुवर से सुनी बात को हमने कभी अनुभव किया ही नहीं। हमें जैन धर्म मिला है, किंतु हम इसका मूल्य नहीं जान पाए। हमने सामायिक, पोरसी कर ली, किंतु इसका परिणाम क्या आया? धर्म कितना ही कर लें, किंतु हमारा चित्त कितना शांत हुआ, उसमें कितनी प्रफुल्लता आई, हृदय कितना पवित्र हुआ, ये उसकी पहचान हैं। भगवान की वाणी पर गहरा विश्वास होना चाहिए।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि किसी का गुणगान करते हैं तो उससे ज्ञान, दर्शन, चारित्र का बोधिलाभ होता है। गुणवान व्यक्ति के प्रति हमारे भीतर अहोभाव प्रकट होने चाहिए। गुणवान व्यक्ति के प्रति झुकेंगे तो अपने भीतर गुण प्रवेश करेंगे। भगवान की स्तुति करने से मन स्थिर रहता है। ग्यारह द्रव्य मर्यादा दिवस में कई भाई-बहनों ने सपरिवार पच्चक्खाण लिए। श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने 10 आश्चर्यों की सुंदर समझाइश दी।

धर्म ही सुरक्षा प्रदान करता है

26 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। रविवारीय समता शाखा आराधना से आज के अवकाश के दिवस का पूर्ण लाभ लेने हेतु श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ युवाओं की विशेष उपस्थिति रही। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम से देशभर में लाखों युवाओं ने अपना जीवन पावन किया।

धर्मसभा में भी आशातीत उपस्थिति को देखकर चतुर्विध संघ की श्रद्धा-भक्ति प्रकट हो रही थी। उपस्थित जनसमूह को धर्म के मर्म से पावन करते हुए ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हेय, ज्ञेय, उपादेय को समझने का प्रयास करें। हेय यानी क्या छोड़ने योग्य है। ज्ञेय यानी क्या जानने योग्य है। उपादेय यानी क्या ग्रहण करने योग्य है। 18 पाप छोड़ने योग्य हैं। संवर, सामायिक, पौषध आदि ग्रहण करने योग्य हैं। पहले हर चीज को जानो फिर कौनसी ग्रहण करने योग्य है और कौनसी छोड़ने योग्य है, इसका विचार करो। यतना में धर्म है। खाने की चीजों की प्रतिलेखना करके देखें कि कोई जीव तो नहीं है। रखरखाव में पूरा ध्यान दें। पुण्य प्रबल है तो सुरक्षित हैं, नहीं तो कोई सुरक्षित नहीं है। एक धर्म ही आपकी सुरक्षा करने वाला है। आज संविधान दिवस पर तय करना है कि हमें क्या करना है। दुनिया में आज निंदा करने वाला कल प्रशंसक भी बन सकता है। मन में द्वेष, ईर्ष्या पैदा नहीं होने चाहिए।''**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसे तुम अपना समझ रहे हो, अपना मान रहे हो, भरोसा रखो कि वह तुम्हारा नहीं है। सारी विश्वसनीयता ही विश्वास नहीं है। जो सार है, वह हमारी आँखों के सामने है। सामूहिक संवर दिवस में भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। परम गुरुभक्त शिखरचंद जी सुराणा, गंगाशहर-भीनासर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

दोपहर में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने धर्मबोध प्रदान किया। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। **मुमुक्षु बहन प्रियंका जी सेठिया** सुपुत्री श्री दीपक जी सेठिया (गंगाशहर-भीनासर) की दीक्षा हेतु जैसे ही आचार्य भगवन् ने आगारों सहित **30 अप्रैल** के लिए स्वीकृति की उद्घोषणा की, सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों से गूंज उठी। परिजनों ने गुरुचरणों में दीक्षा हेतु स्वीकृति-पत्र प्रदान किया। मुमुक्षु बहन प्रियंका जी संत श्री मयंक मुनि जी म.सा. की संसारपक्षीय बहन हैं।

अज्ञान, दुःख का कारण

27 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। प्रातःकालीन मंगल बेला में भक्तिभावों से परिपूरित प्रार्थना में लीन हो आत्मशांति का अद्भुत अनुभव हुआ। श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने प्रार्थना करवाई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''अज्ञान, दुःख का कारण है। हमने जो जाना है वह सही है या नहीं? हमने जो समझ रखा है वह सही है या नहीं? धर्म में अधर्म, अधर्म में धर्म की संज्ञा हेतु वस्तु के स्वरूप को जानना जरूरी है। जितनी खुशी पुण्य से है, उतना दुःख पाप से होता है क्या? जिनको तत्त्व का ज्ञान है, उन्हें यह पता है कि सुख-दुःख में समभाव उपासना का पूर्ण फल हमें प्राप्त हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। शास्त्रों में जनम और मरण को दुःख कहा गया है। हम कितना अवस्थित रह सकते हैं यह अवस्था उपासना से प्राप्त हो सकती है। जो हमें अवस्थित नहीं रहने देते उन बाधक तत्त्वों पर विजय प्राप्त करनी है। कषायों**

से दूर रहना है। शरीर बल पर ध्यान नहीं देना अपितु आत्मबल पर ध्यान देना है।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीव धन सदा है, सदा रहेगा। अजीव तत्त्व नष्ट होगा अर्थात् नहीं रहेगा। जीव का स्वभाव सदैव एक-सा बना रहता है, पुद्गल का स्वभाव परिवर्तनशील है। पुद्गलों से आसक्ति दूर करें। साध्वीवर्याओं ने *'दरबार हजारों हैं ऐसा दरबार कहाँ गुरुवर'* भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-6 का जयपुर से तथा शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुचरणों में पधारना हुआ। अठाई, तेला सहित काफी संख्या में दया एवं दयाभाव के प्रत्याख्यान हुए।

18 वर्षीय **मुमुक्षु भाई चाहत जी कोठारी** सुपुत्र नवरतन जी कोठारी (देशनोक निवासी, बेंगलुरु प्रवासी) की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में स्वीकृति-पत्र प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके आपकी दीक्षा **7 फरवरी** को **नोखा** के लिए जैसे ही स्वीकृति फरमाई सम्पूर्ण सभा **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है'** आदि जयकारों से गूंज उठी। एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, अलाय द्वारा मुमुक्षु भाई चाहत जी कोठारी एवं उनके परिजनों का स्वागत-अभिनंदन किया गया। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी के माध्यम से धर्मबोध कराया। उदयपुर में संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के संथारा संलेखना का आज 22वां दिवस समाधि भावों के साथ गतिमान है। आज ही बीकानेर विराजित संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. के तृतीय मनोरथ का तृतीय दिवस गतिमान रहा। इस उपलक्ष्य में नवकार मंत्र जाप का आयोजन अलाय में किया गया।

दूसरों के दोष नहीं, गुण देखें

28 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। *'अंतर के पट खोल जरा प्रभु वीर की जय बोल जरा'* एवं *'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी, युग-युग जीओ मेरे गुरु रमलाल जी'* की मधुर, सरस ध्वनि के मध्य प्रार्थना का अद्भुत आनंद परिलक्षित हुआ।

प्रार्थना में आनंदविभोर होने के पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में दयानिधान, कृपानिधि आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''सफेद दीवार पीली नजर आए तो यह आँखों का दोष है, दीवार का नहीं। क्योंकि वह व्यक्ति पीलिया रोग से ग्रस्त है। वैसे ही मनुष्य जिसके लिए जैसी छवि बना लेता है, उसमें उसका दोष नहीं, दृष्टि का दोष है। अपने मन में पहले से ही कोई छवि बनी हुई है तो उसी दृष्टि से सामने वाला नजर आएगा कि यह व्यक्ति ऐसा ही है। उस आत्मछवि से लिया गया निर्णय सही या गलत हो सकता है। किसी व्यक्ति के प्रति अपने मन में गलत छवि ना बैठाएं। हमारी सोच एवं दृष्टि सही होनी चाहिए। आराधना करने के समय मन कहाँ भटकता है? विचारों को डिलीट करना सीखें। सामायिक की आराधना शांत भावों से करें। शांत भाव से निष्कर्ष निकलेगा और अच्छा परिणाम आएगा। धन के लिए हाय-हाय न करें। धन से नहीं धर्म से जीवन का कल्याण होगा। हमें दूसरों के दोष नहीं अपितु गुण देखने हैं।''**

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने *'गुरु के मिले चरण कि रोम खिल गए'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हम छोटी-सी जिंदगी में राग-द्वेष, तेरी-मेरी करने से बचें। किसी से वैर-बंधन न करें। कर्मों के बंधन बांधने की अपेक्षा

कर्मों को तोड़ने का प्रयास करें।

आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50वें वर्ष के उपलक्ष्य में एक वर्ष में रामध्वनि पुस्तक का पठन, प्रतिमाह एक दया करने, एक सामायिक किए बिना मुँह जूठा नहीं करने, गाँव में रहते हुए चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिलने पर दिन में एक बार उनके दर्शन करने और दिन में एक बार कच्चे पानी से प्यास नहीं बुझाने के लिए निवेदन करते हुए 9 फरवरी को गुरुचरणों में यथाशक्ति तप-त्याग की भेंट चढ़ाने का निवेदन किया गया। दोपहर में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्वबोध कराते हुए शेष जीवन को विशेष बनाने के सूत्र प्रदान किए। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। तपस्विनी हेमलता जी बांठिया, नोखामंडी ने 35 उपवास के प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के मुखारविंद से ग्रहण किए।

जो सत्य में जीता है, वह सुखी है

29 जनवरी 2025। मंगल प्रार्थना में ***'जय बोलो महावीर स्वामी की'*** एवं ***'राम गुरु म्हारा रे'*** भजनों के साथ आत्मभावों को पुनीत बनाया गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को गुरु की महत्ता बताते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु सत्य का बोध कराते हैं, जो वर्तमान में है, वह सत्य है। अतीत आता नहीं, भविष्य कल्पना है। कब क्या बदल जाएगा पता नहीं। जो सत्य में जीता है वह सुखी है। अतीत दर्द है। जो कुछ घटित हो चुका है उसे पकड़कर खींचते रहे तो दु:ख पैदा होता रहेगा। जो कुछ हो चुका है उसे अपने आप से अलग करें। अतीत से मुक्त बनें। जिनशासन में आलोचना का बड़ा महत्व है। आलोचना अतीत से मुक्त करती है। किसी भी घटना से मुक्त होना जीवन में साधना की सबसे बड़ी उपलब्धि है। अनावश्यक चीजों को बाहर करेंगे तब भीतर की शक्ति जागृत होगी। कोई मेरे लिए कितना भी बुरा सोचे, करे, लेकिन मैं क्षमा, सहनशीलता का परिचय दूंगा। किसी का अहित नहीं करूंगा, ऐसा संकल्प लें।''**

श्री रामनंदन मुनि जी म.सा. ने ***'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा'*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो स्वयं प्रसन्न रहेगा वह गुरु को भी प्रसन्न रखेगा। गुरु के चित्त को समाधि मिले ऐसा कार्य हम करें। छहकाय के जीवों की रक्षा करें एवं पंचेन्द्रियों के विषयों से निर्लिप्त बनें, ऐसा प्रयास हमारा होना चाहिए।

उदयरामसर संघ ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास, होली चातुर्मासिक पर्व एवं अन्य प्रसंगों तथा झझू संघ ने क्षेत्र स्पर्शने हेतु श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की। आज दिन में पाँच सामायिक करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक आयोजन हुए। श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने ज्ञान कक्षा में दस लब्धि का विस्तार से विवेचन किया।

श्रवण से ज्ञान होता है

30 जनवरी 2025, समता भवन, अलाय। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में ***'म्हारे नैणां में आओ बस जाओ महावीर'*** एवं ***'श्री राम गुरु गुण गाना है'*** भक्ति गीतों के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति का अद्भुत नजारा उपस्थित हुआ। तत्पश्चात् धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने ***'कुंथु जिनराज तुम जैसो नहीं कोई देव'*** गीत के साथ फरमाया कि सुनकर ही कल्याण मार्ग एवं पाप मार्ग का बोध होता है। श्रवण से ज्ञान होता है।

ज्ञान से विज्ञान, विज्ञान से पच्चक्खाण, पच्चक्खाण से संयम, संयम से तप, तप से वोदाण, वोदाण से अक्रिया और अक्रिया से सिद्धि होती है। इसमें हम कहाँ तक पहुँचे हैं, यह आत्मचिंतन करें। श्रवण से सचित्त-अचित्त, जीव-अजीव का बोध होता है। इससे जीवों के प्रति दया, करुणा भाव जागृत होकर जीवों के प्रति संवदेना प्रकट होती है। एक बार कच्चा पानी पीने से असंख्यात जीवों की हिंसा होती है। मन, वचन, काया की एकाग्रता के साथ पर्युपासना करनी चाहिए।

कृपानिधान आचार्य भगवन् ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ फरमाया। 9 फरवरी 2025 तक 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 नमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। सामूहिक आयंबिल एवं नींवी के आयोजन हुए। शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा-8 का गुरुचरणों में पधारना हुआ। दोपहर में उभय गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। **'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'** अभियान के अंतर्गत शारदा बाल निकेतन, अलाय में नैतिक शिक्षा, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मोह के क्षय से मोक्ष की प्राप्ति

31 जनवरी 2025, श्रीबालाजी, चरकड़ा। धीर-वीर-गंभीर, संसार तारणहार, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का नामदेव भवन, श्रीबालाजी में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। ग्रामीण भाई-बहनों की सेवाभक्ति अत्यंत ही सराहनीय रही। आस-पास सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुचरण सेवा का लाभ लिया। यहाँ के गुरुभक्तों को दर्शन-सेवा लाभ प्रदान करने के पश्चात् यहाँ से विहार कर श्री जगन्नाथ दादाबाड़ी, चरकड़ा में अपूर्व जयनादों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। अनेक जनों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया।

अलाय में आयोजित प्रवचन सभा में शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। देवता भी इसके लिए तरसते हैं। मनुष्य जन्म से ही परमात्म पद प्राप्त हो सकता है। मोह को क्षय करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी। इंद्रियों की आसक्ति से हम दूर हटें तभी जीवन सार्थक होगा। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का नोखा में दीक्षा एवं महत्तम महोत्सव प्रसंग पर पधारना संभावित है। नोखा एवं मारवाड़ सहित पूरे देश में आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों एवं महत्तम शिखर महोत्सव के लिए अपूर्व धर्मोल्लास का माहौल बना हुआ है।

तपस्या सूची

साधु-साध्वी वर्ग

श्री हैमगिरि जी म.सा. - बेले तप

श्री रामनंदन मुनि जी म.सा. - तेला तप

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	मानसिंह जी मालवीय-झोंकर, तिलोकचंद जी सेन, निर्मल कुमार जी भंवरी देवी सोलंकी
उपवास	**अठाई -** विपुल जी चोरड़िया, दीक्षांत सिपानी-उदयरामसर

-महेश नाहटा

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

भव्य दीक्षा प्रसंग एवं अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव 2025

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, परमागम रहस्यज्ञाता, परम पूज्य **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर, **श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.** की असीम अनुकंपा से 30 अप्रैल 2025 को पावन जैन भागवती दीक्षा एवं अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का पावन प्रसंग सौभाग्योदय से गंगाशहर-भीनासर संघ को प्राप्त हुआ है।

सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा व दीक्षा महोत्सव में सहभागी बनने का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ सहज ही प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

:: संपर्क सूत्र ::

अध्यक्ष	मंत्री
(कौशल दुग्गड़)	(चंचल बोथरा)
9001037121	8118824833

आवास-निवास व्यवस्था

पारस डागा : 9636370200

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री समता युवा संघ संघ
श्री समता महिला मंडल
श्री समता बहू मंडल, बालिका मंडल
गंगाशहर-भीनासर (राज.)

मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	नागौर (राज.)
निवासी	:	नोखामंडी, बीकानेर (राज.)
जन्म तिथि	:	चैत्र सुदी 2 संवत् 2008
वैराग्यकाल	:	लगभग 1 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	पाँचवीं
धार्मिक अध्ययन	:	प्रतिक्रमण, सामायिक सूत्र
तपाराधना	:	15, 8 एवं 1 से 12 उपवास की लड़ी, महावीर निर्वाण दिवस व गुरु पूर्णिमा पर तेला, अष्टमी, पक्खी, एक माह में चार उपवास पिछले 23 वर्षों से, भोजन करते समय मौन एवं 21 द्रव्यों से ज्यादा का प्रत्याख्यान पिछले 40 वर्षों से
पदयात्रा	:	लगभग 100 कि.मी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	:	7 फरवरी 2025, (नोखामंडी)

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री तख्तमल जी-स्व. श्रीमती धापू देवी कांकरिया
पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री मिश्रीमल जी-स्व. श्रीमती भंवरी देवी कांकरिया
सासुजी-ससुरजी	:	स्व. श्री कुंदनमल जी-स्व. श्रीमती भंवरी देवी लूणावत
धर्मपत्नी	:	श्रीमती बसंती देवी कांकरिया
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	:	स्व. श्री झूमरमल जी-स्व. श्रीमती तीजा देवी, स्व. श्री जुगराज जी-स्व. श्रीमती केशर देवी कांकरिया
भाई-भाभी	:	मोहनलाल जी-गुलाब देवी, बाबूलाल जी-मंजू देवी, तेजकरण जी-प्रेमलता जी कांकरिया
बहन-बहनोई	:	केवल देवी-स्व. श्री श्रीचंद जी डागा, कंचन देवी-करणीदान जी भूरा, ममोल देवी-माणकचंद जी फलोदिया, चंद्रा देवी-सुशील कुमार जी भूरा
पुत्री-दामाद	:	ज्योति जी-राजेंद्र जी लूणिया
भुआजी-फूफाजी	:	स्व. श्रीमती पानी देवी-स्व. श्री बादरमल जी डागा
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री प्रतापमल जी-स्व. श्रीमती बालू देवी आंचलिया
मामाजी-मामीजी	:	शिखरचंद जी-सीरू देवी आंचलिया
मौसीजी-मौसाजी	:	स्व. श्रीमती रतनी देवी-स्व. श्री जेठमल जी बुच्चा, स्व. श्रीमती झमकू देवी-स्व. श्री रेखचंद जी देशलहरा, कमला देवी-स्व. श्री इंद्रचंद जी दुग्गड़
परिवार से दीक्षित	:	श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भ्राता पुत्र) साध्वी श्री मुस्कान श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भाणजी)

मुमुक्षु श्री चाहत जी कोठारी

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	रासीसर, बीकानेर (राज.)
मूल निवासी	:	देशनोक, बीकानेर (राज.)
जन्म तिथि	:	26 अप्रैल 2006
वैराग्यकाल	:	लगभग 8 माह
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.बी.एम. प्रथम वर्ष
धार्मिक अध्ययन	:	दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन (लगभग), पुच्छिंसु णं, जैन सिद्धांत बत्तीसी, गति-आगति, लघुदंडक
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-3
तपाराधना	:	बेला, तेला, चोला
पदयात्रा	:	लगभग 250 कि.मी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	:	7 फरवरी 2025, (नोखामंडी)

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री ताराचंद जी-स्व. श्रीमती बरजी देवी कोठारी
दादाजी	:	संथारा साधक श्री भंवरलाल जी कोठारी
पिताजी-माताजी	:	नवरतन जी-राजमती देवी कोठारी
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	:	कन्हैयालाल जी-मंजू देवी कोठारी
चाचाजी-चाचीजी	:	शिवरतन जी-अनिता जी, महेंद्र जी-रेखा जी कोठारी
भाई-भाभी	:	टिंकू जी-निधि जी सांड, निलेश जी-ज्योति जी कोठारी
भाई, बहन	:	दिव्यांश जी कोठारी, वैशाली जी संचेती, निकिता जी संचेती, नेहा जी कोठारी, प्राची जी कोठारी, प्रेक्षा जी कोठारी, स्तुति जी कोठारी
बहन-बहनोई	:	लक्ष्मी देवी-पुनीत जी शुक्ला, पूर्णिमा जी-निमित जी लुंकड़
भुआजी-फूफाजी	:	लीला देवी-गणेशमल जी सांड, शारदा देवी-मोतीलाल जी संचेती
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री सुरेंद्र जी-संथारा साधिका श्रीमती भंवरी देवी मालू (भीनासर)
मामाजी-मामीजी	:	संदीप कुमार जी-दिव्या जी मालू
मौसीजी-मौसाजी	:	कुसुम देवी-विकास जी बैद, ज्योति जी-हनुमानमल जी बुच्चा, जयश्री जी-दिलीप जी कावड़िया, जयमाला जी-उज्ज्वल जी छाजेड़
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय दादीजी) श्री नंदन मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय काका दादाजी)

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

महत्तम महापुरुष गुणगान

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अतः हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

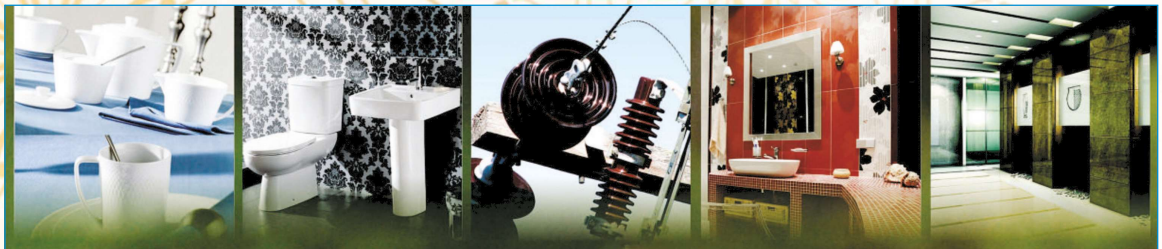

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

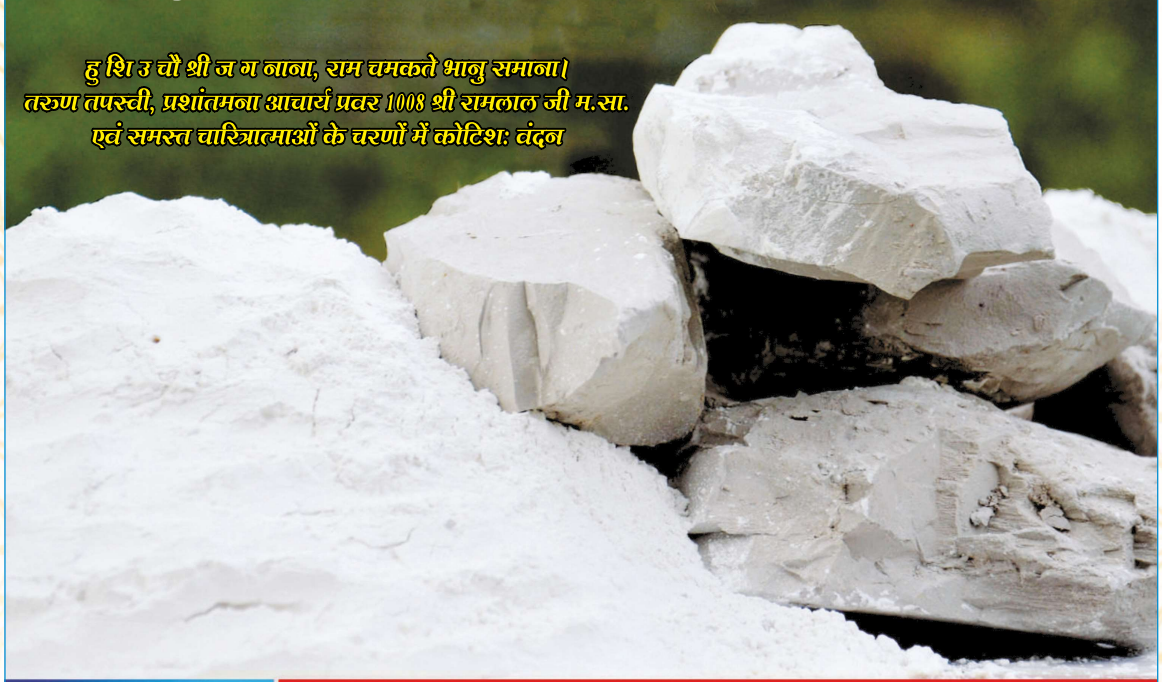

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA SHAND GROUP
SINCE 1977

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond® Duroflex
Diamond® DUROLON
DURO RING
LEAK PROOF
NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO
LEAD FREE
UV STABILIZED
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149
cftri CERTIFIED
LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com | रक्षा — जीवन भर की सुरक्षा | www.rakshapipes.com

@absjainsangh
www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,700

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261